2018

अंक 3

खान भारती

भारतीय खान ब्यूरो

INDIAN BUREAU OF MINES

सतत कार्यरत

ON WITH THE JOB

भारतीय खान ब्यूरो

नागपुर

वर्ष - 2018 अंक - 3

खान भारती

हिंदी अनुभाग
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

प्रधान संपादक
डॉ. पी. के. जैन
मुख्य खनिज अर्थशास्त्री
एवं राजभाषा अधिकारी

संपादक
श्री. प्रमोद एस. सांगोले
उप-निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

श्री. जगदीश अहरवार
आशुलिपिक

असीम कुमार
हिंदी अनुवादक

प्रदीप कुमार सिन्हा
उ.श्रे.लिपिक

मिताली चॅटर्जी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

किशोर पारधी
हिंदी अनुवादक

संरक्षक की कलम से

आगामी हिंदी पखवाड़ा वर्ष - 2018 के दौरान भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की हिंदी गृह - पत्रिका 'खान भारती' का नवीनतम अंक प्रकाशित किए जाने के समाचार से मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति भारतीय खान ब्यूरो के परिवार के लगाव व आस्था तथा तकनीकी, वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और कलात्मक सरोकार की अभिव्यक्ति का सार्थक माध्यम है।

राजभाषा हिंदी में सरकारी काम - काज करने से सरकार और आम जन के बीच परस्पर विश्वास बढ़ रहा है जो कल्याणकारी राज्य की संकल्पना को मूर्तरूप देने में अत्यंत ही सहायक सिद्ध हो रहा है। आज देश और समाज के कल्याण हित में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता लाने की नितांत आवश्यकता है। हिंदी हमारी सम्मत राजभाषा है। अतः इसका व्यावहारिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रयोग करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य तो है ही, साथ ही हमारा नैतिक दायित्व भी है।

मुझे आशा है कि 'खान भारती' पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा के प्रचार - प्रसार को एक नया संबल मिलेगा तथा कार्यालय के सभी कार्मिक वैज्ञानिक रूप से खनन के अपने उत्तरदायित्व में हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु अभिप्रेरित होंगे।

'खान भारती' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

निरंजन कु० सिंह

(डॉ. एन.के. सिंह)

संयुक्त सचिव

भारत सरकार, खान मंत्रालय

एवं महानियंत्रक (प्रभारी)

भारतीय खान ब्यूरो

प्रधान संपादक की कलम से....

भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की हिंदी गृह - पत्रिका 'खान भारती' के नवीनतम अंक के माध्यम से एक बार पुनः आपके सम्मुख उपस्थित होने का अवसर पाकर मैं स्वयं को धन्य महसूस कर रहा हूँ । इस पत्रिका ने विभाग में और विभाग के बाहर हिंदी के कार्यों से जुड़े व्यक्तियों व संस्थाओं के बीच अपनी अस्मिता बनाई है, जो निःसंदेह एक उपलब्धि है ।

आज सूचना प्रोद्यौगिकी का युग है । इस क्षेत्र में तेजी से हो रहे विकास के परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि राजभाषा हिंदी दिन - प्रतिदिन होने वाले परिवर्तनों के साथ कदम से कदम मिलाकर चले । आज ई-मेल, ई-फार्म, ई-कॉमर्स, ई-गवर्नेंस, ई-टेंडर आदि के युग में हर कार्य के लिए इलेक्ट्रॉनिकी का सहारा लिया जा रहा है । हिंदी में आज सारी सुविधा उपलब्ध है ।

प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने सभी मंत्रालयों और कार्यालयों को यूनिकोड कम्प्लाएंट फोंट्स एवं यूनिकोड के अनुरूप सॉफ्टवेयर तथा इन-स्क्रिप्ट कुंजीपटल का ही प्रयोग करने का सुझाव दिया है । यह भारत सरकार का मानक की-बोर्ड है । सौभाग्य की बात यह भी है कि हिंदी को देवनागरी लिपि के रूप में विश्व की एक सर्वाधिक वैज्ञानिक और ध्वनि-प्रधान लिपि विरासत में मिली है । अतः हमें आशावान रहना चाहिए कि आने वाले दिनों में हिंदी संपूर्ण विश्व में नई ऊँचाइयों को छुएगी । मॉरीशश में संपन्न हुए 11 वें विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी को संस्कृति के साथ जोड़कर हिंदी के उपयोग की महत्ता को और व्यापक कर दिया है ।

मैं इस पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों / कर्मचारियों एवं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ जिनके अथक परिश्रम एवं प्रयासों से 'खान भारती' का अंक नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है । मैं महानियंत्रक महोदय का भी विशेष आभार मानता हूँ जिनके लगातार उत्साह वर्धन के बिना इस पत्रिका को मूर्तरूप देना संभव नहीं था ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

(डॉ. पी. के. जैन)
मुख्य खनिज अर्थशास्त्री
एवं राजभाषा अधिकारी

संपादक की कलम से ....

मुख्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह - पत्रिका 'खान भारती' का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसनन्ता हो रही है। गृह पत्रिका किसी भी संस्थान का एक ऐसा दर्पण होता है जिसमें इसकी समस्त गतिविधियां परिलक्षित एवं प्रतिबिंबित होती है और जिसके माध्यम से राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को बल मिलता है। साथ ही गृह पत्रिका का प्रकाशन किसी भी संगठन के कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का एक सशक्त माध्यम होता है जो राजभाषा प्रचार - प्रसार को गति प्रदान करता है।

भारतीय खान ब्यूरो में प्रेरणा और प्रोत्साहन से राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढाने और उसके प्रचार - प्रसार हेतु सार्थक प्रयास किए जा रहे है और हम राजभाषा हिंदी के प्रयोग में अग्रसर हो रहे हैं, जिसके फलस्वरुप राजाभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में वर्ष 2017 में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। साथ ही हमारी गृह पत्रिका 'खान भारती' को उत्कृष्ट पत्रिका की श्रेणी में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर द्वारा द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से हम राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में और आगे बढ़ते रहेंगे। आप सभी से आग्रह है कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढाने और उसके प्रचार प्रसार में अपना पूरा समर्थन और सहयोग प्रदान करें।

वर्तमान परिवेश में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता बढी है। हाल ही में 11वां विश्व हिंदी सम्मेलन विदेश मंत्रालय द्वारा मॉरीशस सरकार के सहयोग से 18-20 अगस्त 2018 तक मॉरीशस में आयोजित किया गया। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में विचार मंथन से हिंदी की अक्षय ऊर्जा का अमृत कलश प्रादुर्भूत होगा, जिसका विचार-अमृत हिंदी की भावी प्रगति यात्रा की संजीवनी-शक्ति सिद्ध होगा।

संघ की राजभाषा हिंदी का प्रयोग विविध क्षेत्रों में क्रमिक रूप से बढ़ रहा है। तेजी से बदल रही सूचना प्रौद्योगिकी ने भाषाओं को सीखने और उनके प्रयोग को आसान बना दिया है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट जैसी दुनिया की कई दिग्गज आई.टी कंपनियों ने हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के बाजार को पहचान लिया है और वे अपनी प्रणालियों एवं सॉफ्टवेयरों में इन भाषाओं के लिए भी उन सभी सुविधाएं उपलब्ध करा रहे है जो अंग्रेजी के लिए है। इसमें हिंदी यूनीकोड फॉंट की महत्वपूर्ण भूमिका है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए संबंधित विषयों के लिए आवश्यक वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों का निर्माण किया जा चुका है। आवश्यकता इन शब्दों को प्रयोग में लाने की है।

'खान भारती' पत्रिका में हमारा यह प्रयास रहता है कि इसमें ऐसे लेख प्रकाशित किए जाएं, जिनसे केंद्र सरकार के कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। प्रस्तुत अंक में भी अधिकांशतः इसी प्रकार के लेखों आदि को संकलित करने का प्रयास किया गया है।

इस पत्रिका के प्रकाशन के क्रम में मुझे वरिष्ठ अधिकारियों का निरंतर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। इस पत्रिका के प्रकाशन को यथार्थ रूप देने वाले सभी रचनाकारों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं जिनके सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता।

पत्रिका के विषय में अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराएं ताकि भविष्य में इसे और भी बेहतर स्वरूप में आपके समक्ष रखा जा सकें।

(प्रमोद एस. सांगोले)

उप-निदेशक (राजभाषा)

अ नु क्र म णि का

क्र. स.	रचना का शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
1	भारत के खनन क्षेत्र के विकास में भारतीय खान ब्यूरो की भूमिका		1-3
2	स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत अभियान	डॉ. पी. के. जैन	4-10
3	राष्ट्रभाषा हिंदी की व्यथा	प्रमोद सांगोले	11-12
4	''रिश्ते बदलें नहीं, उन्हें समझ कर निभाएं''	नीता कोठारी	13-14
5	बोधकथा		14
6	मैं अभी और जीना चाहता हूँ	अभिषेक कुमार	15-17
7	आदमी	विजय शिंदे	17
8	कोलकाता - एक पहचान	चन्दन	18-19
9	खेल	मानू माजी	20-21
10	नम्र अभिवादन	गौरव शिंदे	21
11	मोबाईल बैंकिंग ..... पॉकेट में समाया बैंक	मोहम्मद कासिम	22-24
12	मधुमेह के संग मधुर जीवन	विनय कुमार सक्सेना	25-27
13	देवनागरी	महेन्द्र कुमार सोमानी	28-30
14	खुद से हुआ जो साक्षात्कार	अक्षत याग्निक	30
15	रोजगार आधारित शिक्षा के साथ साथ संस्कार आधारित शिक्षा की आवश्यकता	दिलीप पंवार	31
16	जैसा सोच वैसा जीवन	प्रवीण गजभिए	32-33
17	सोशल मीडिया..... आधी हकीकत .... आधा फसाना	बी. एल. यादव	34-35
18	विश्व स्तर पर हिन्दी	अजय कुमार	36-37
19	योग का जीवन में महत्त्व	पप्पू गुप्ता	38
20	भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की वर्ष 2017 - 18 के दौरान राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उपलब्धियाँ		39-48
21	भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय, नागपुर में विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन		49
22	भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर में अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन		50
23	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का -2), नागपुर द्वारा		50
24	हिंदी पखवाड़ा - 2017 - एक रिपोर्ट		51-54
25	विश्व हिंदी सम्मेलन - एक नजर		54
26	आपकी राय		55

टिप्पणी

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार लेखक के अपने हैं एवं संगठन से उसका कोई संबंध नहीं है ।

भारत के खनन क्षेत्र के विकास में भारतीय खान ब्यूरो की भूमिका

औद्योगिक क्षेत्र में देश के विकास के लिए खनन क्षेत्र का विकास आवश्यक है। खनन क्षेत्र राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 2017-18 के दौरान GVA। (मौजूदा कीमतों पर) में खनन और उत्खनन क्षेत्र का योगदान 2.5% था। वर्ष 2017-18 के दौरान खनिज उत्पादन (परमाणु और ईंधन खनिजों को छोड़कर) का कुल मूल्य रु.1,13,541 करोड़ रुपये अनुमानित है जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 13% की वृद्धि दर्शाता है।

1948 में स्थापित भारतीय खान ब्यूरो (आईबीएम) खान मंत्रालय के तहत एक बहु विषयक सरकारी संगठन है, जो ईंधन, आण्विक खनिजों और लघु खनिजों को छोड़कर खनिज संसाधनों के संरक्षण और वैज्ञानिक विकास तथा खानों में पर्यावरण की सुरक्षा में कार्यरत हैं। आईबीएम भी देश के चहुंमुखी विकास में भागीदार रहा है। इसने सरकार की नीतियों और बदलते समय के अनुरूप खनिज नीतियों और विधान के विकास में निरंतर योगदान दिया है। 1980 के दशक तक खानों और खनिज क्षेत्र का जीडीपी में योगदान कम था, परंतु पिछले तीन दशकों में ब्यूरो द्वारा निर्मित सकारात्मक खनिज नीतियों के कारण इसका योगदान बढ़ा है। साथ ही अवैध खनन क्रिया- कलाप रोकने हेतु एमएसएस (MSS) जैसी नई पहल द्वारा समय पर हस्तक्षेप किया गया तथा ब्यूरो को प्रौद्योगिकी उन्नति से भी मदद मिली । तथापि देश के लिए खनन क्षेत्र में अपनी पूरी क्षमता हासिल करने के लिए और अधिक गुंजाइश है क्योंकि यह एक दृढ़ भावना है कि भारत के आर्थिक विकास में खनन क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने के लिए और अधिक कार्य किया जा सकता है।

भारतीय खान ब्यूरो की पुनर्संरचना :-

इस कार्य को करने के लिए खान मंत्रालय भारतीय खान ब्यूरो को समर्थन करने के लिए तैयार है । नीति, विधान एवं भारतीय खान ब्यूरो के कार्यों के संशोधित चार्टर में हाल में बदलाव तथा नए क्रिया कलाप और पहल करने के कारण भारतीय खान ब्यूरो का पुनर्गठन आवश्यक हो गया था जिससे इस नई भूमिका में भारतीय खान ब्यूरो अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा सके । पुनर्संरचना से भारतीय खान ब्यूरो को अपना कार्य प्रभावी ढंग से करने में मदद मिलेगी तथा खनिज क्षेत्र के सुधार और विनियमन में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा । इससे भारतीय खान ब्यूरो सूचना प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को अपनाने में सक्षम होगा तथा खनिज विनियमन और विकास में यह ज्यादा प्रभावी होगा।

ब्लॉक की नीलामी के लिए राज्य सरकारों का सहयोग :-

भारतीय खान ब्यूरो खनिज रियायतों के आवंटन में अधिक पारदर्शिता लाने के लिए खनिज ब्लॉकों की नीलामी हेतु राज्यों को सहयोग कर रहा है। भारतीय खान ब्यूरो नीलामी ब्लॉकों की तैयारी, औसत बिक्री मूल्य का प्रकाशन, नीलामी के पश्चात मॉनिटरिंग तथा अनुमोदन प्रक्रिया में राज्यों को मदद कर रहा है।

कार्य करने में आसानी :-

भारतीय खान ब्यूरो को दी गई जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए आईबीएम के कार्यालयों का पुनःअवस्थापन (Re-location) पहले ही किया जा चुका है। रायपुर और गांधीनगर में नए क्षेत्रीय कार्यालय खोले गए हैं और गुवाहाटी में उप-क्षेत्रीय कार्यालय को क्षेत्रीय कार्यालय में अपग्रेड कर दिया गया है। कोलकाता और उदयपुर के मौजूदा क्षेत्रीय कार्यालयों को आंचलिक कार्यालय (पूर्व) और आंचलिक कार्यालय (उत्तर) में अपग्रेड कर दिया गया है। कौशल विकास के उद्देश्य के लिए उदयपुर में सतत विकास फ्रेम कार्य संस्थान और हैदराबाद में रिमोट सेंसिंग सेंटर और कोलकाता में राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण केंद्र सतत खनन संस्थान खोले गए हैं और वाराणसी में कौशल विकास केंद्र भी जल्द ही खोला जा रहा है।

खनिज क्षेत्र में पारदर्शिता की पहल तथा सुधार :-

दरअसल, सरकार ने खनिज उद्योग में होने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए खनिज क्षेत्र में सुधार शुरू किया था और खनिज क्षेत्र में वृद्धि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एमएमडीआर अधिनियम, 1957 में संशोधन के लिए खान एवं खनिज (विकास और विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2015 को कार्यान्वित किया था। इसके अलावा, एमएमडीआर संशोधन अधिनियम, 2015 के विभिन्न प्रावधानों को प्रभावी बनाने के लिए, खनन क्षेत्र से संबंधित विभिन्न नियमों को अधिसूचित किया गया है।

खान मंत्रालय एक नई राष्ट्रीय खनिज नीति (एनएमपी) तैयार करने की प्रक्रिया में है तथा समिति की सिफारिश के अनुसार एक एनएमपी मसौदा तैयार किया गया है। इसे पब्लिक प्लेटफॉर्म पर रखा गया है ताकि आम जनता एवं हितधारकों (स्टेक होल्डर) से भी टिप्पणियां / सुझाव प्राप्त हो सके।

खान एवं खनिज अधिनियम के संशोधन के पश्चात भारतीय खान ब्यूरो की भूमिका और की गई नई पहल :-

भारतीय खान ब्यूरो ने खान एवं खनिज अधिनियम के संशोधन के पश्चात खनिज क्षेत्र के विकास के लिए कई महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाता है। विशेष रूप से, भारतीय खान ब्यूरो यह सुनिश्चित करता है कि खान एवं खनिज अधिनियम, 1957 की धारा 10(ए)(2)(बी) के मामलों के संदर्भ में राज्य स्तर पर संयुक्त बैठक में भारतीय खान ब्यूरो के विचारों को ठीक से अभिलिखित किया गया है और मंत्रालय को टिप्पणियां भेजने से पूर्व मामलों की पूर्णतः जांच की गई है । खान मंत्रालय ने खान एवं खनिज अधिनियम, 1957 की धारा 10(ए)(2)(सी) के सभी लंबित मामलों के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय में एक स्थानांतरण याचिका दायर की है।

वर्ष 2020 तक समाप्त होनेवाली खनन पट्टे की नीलामी खनिज क्षेत्र के लिए एक बड़ी चुनौती है। कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए हाल ही में मंत्रालय ने एम.सी.डी.आर., 2017 में एक संशोधन जारी किया गया है ताकि 2020 में समाप्त होनेवाले पट्टों के मामलों में पट्टाधारक द्वारा मार्च 2019 तक खनिज गवेषण का कार्य पूर्ण किया जा सके । भारतीय खान ब्यूरो के लिए एक चुनौती यह है कि पट्टाधारक द्वारा अनुपालन की प्रगति की निगरानी की जाए ताकि सही समयपर सुधारात्मक कदम उठाया जा सके।

चूंकि खनन योजना अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज है, अतः इसकी गुणवत्ता को बरकरार रखा जाना चाहिए । खनन योजना के प्रावधानों का कार्यान्वयन और परिवीक्षण कुशलतापूर्वक किया जाना चाहिए । दिनांक 25/7/2018 तक 9 राज्यों में विभिन्न खनिजों के लिए 43 खनिज ब्लॉकों की नीलामी की गई है । चूंकि सभी अनापत्तियां खनन योजनाओं पर आधारित हैं, अतः नीलाम किए गए ब्लॉकों के तीव्र प्रचालन के लिए इन पट्टों की खनन योजनाओं का समय पर निष्पादन भारतीय खान ब्यूरो की प्राथमिकता होनी चाहिए ।

भारतीय खान ब्यूरो को पूर्व में राष्ट्रीय खनिज सूची के रखरखाव का महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था जिसे सावधानी पूर्वक और कुशलता से किया जा रहा है । दिनांक 1/4/2015 तक एनएमआई (NMI) का अद्यतन (Updation) कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया गया है । जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि 10/2/2015 को 31 खनिजों को गौण खनिजों के रूप में घोषित किया गया है । तथापि इन खनिजों को भी राष्ट्रीय खनिज सूची का हिस्सा होना चाहिए । हमें इन पट्टों/खानों का अन्वेषण एजेंसी और राज्य सरकारों से सूचना/डाटा प्राप्त करने के संबंध में अथक प्रयास करना है ।

भारतीय खान ब्यूरो में खनन टेनेंमेंट प्रणाली (MTS) जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य में शामिल किया गया है, जिसमें समूचे खनिज रियायत जीवन चक्र को शामिल किया जाएगा । इससे खनिज रियायत रिजीम खनन प्रचालन में पारदर्शिता और अयस्क अकाउंटिंग के प्रभावी प्रबंधन में मदद मिलेगी । एमटीएस का समूचा मॉडयूल जल्द ही कार्यान्वित होगा । -

भारतीय खान ब्यूरो द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों में एक खानों का तारांकन प्रणाली है जो पूरे विश्व में अपने तरह का अनूठा है । इसका लक्ष्य सभी सांविधिक प्रावधानों के अनुपालन के स्वप्रेरित मेकेनिजम की शुरूआत तथा पर्यावरण अनुकूल खनन हेतु सर्वोत्तम कार्य पद्धति के शामिल करना है। इसकी शुरूआत से जुलाई 2016 में 09 खानों, फरवरी 2017 में 32 खानों और मार्च 2018 में 57 खानों को क्रमशः मूल्यांकन वर्ष 2015-15, 2015-16 और 2016-17 में पांच तारा रेटिंग दिया गया है । सभी कार्यरत खानें स्टार रेटिंग प्रक्रिया में भाग ले सकें यह भारतीय खान ब्यूरो का लक्ष्य होगा।

भारतीय खान ब्यूरो के पास अवैध खनन को रोकने के लिए सेटेलाइट आधारित मानिटरिंग प्रणाली को प्रारंभ करने की सुविधा है । खनन सर्वेक्षण प्रणाली (एमएसएस) स्वाचालित रिमोट सेंसिंग डिटेक्शन प्रौद्योगिकी के माध्यम से रिसपांसिव खनिज प्रशासन का लक्ष्य रखता है । एमएसएस के कार्यान्वयन से खनन क्षेत्र में एक नया मील का पत्थर स्थापित हुआ है जिसका विनियमन पारदर्शी भेदभाव रहित और स्वतंत्र है ।

हाल में मंत्रालय ने खनिजों पर रॉयल्टी और डेड रेंट हेतु (कोयला, लिग्नाइट संचित रेत एवं गौण खनिजों के अलावा) एक अध्ययन समूह का गठन किया है । इस दिशा में भारतीय खान ब्यूरो को एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करना है । भारतीय खान ब्यूरो रॉयल्टी हेतु बिक्री मूल्य को बिक्री इनवायस के साथ जोड़ने की अवधारणा पर कार्य कर रहा है, जो यथामूल्य (Advalorem basis) आधार पर शुल्क आधारित होगा ।

राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान ने कर्मचारियों के बीच कार्यालय परिसर में स्वच्छता और स्वच्छता के प्रति उनकी जिम्मेदारी एवं जागरूकता बढ़ाई है । इस कदम से उन्हें अपने अव्यवस्थित जीवन मे व्यवस्थित दिनचर्या अपनाने की प्रेरणा तथा स्पष्ट कार्य और स्वच्छ दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है । ब्यूरो के 13 क्षेत्रीय कार्यालयों के दायरे में आने वाली खानों में दिनांक 16/12/2017 31/12/2017 तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया । ब्यूरो ने स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत 'स्वच्छता से सतत विकास' विषय पर एक प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला भी आयोजित की गई थी ।

भारतीय खान ब्यूरो जल्द से जल्द महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है । सभी प्रमुख खनिजों की औसत बिक्री मूल्य एवं भारतीय खान ब्यूरो की शुल्क अनुसूची प्रभार को अधिसूचित करना शामिल है । इसके अतिरिक्त दिसंबर 2018 तक खनन टेनेमेंट प्रणाली को प्रारंभ किया जाना, गौण खनिजों को एमएमएस पोर्टल के साथ एकीकृत करने का कार्य, जिससे राज्यों को इनके अवैध खनन कार्यों को रोकथाम करने में मदद मिले, खनिजों की रायल्टी और डेड रेन्ट का समय पर संशोधन, नागपुर और हैदराबाद में जीआईएस और सुदूर संवेदन केंद्रों की शीघ्र स्थापना, ब्यूरो के कर्मचारियों का कौशल विकास तथा उन खनन पट्टों का नीलामी सूची को अद्यतन करना जिनके खनन पट्टे की समाप्ति हो रही है, उसके लिए एक विस्तृत रोड मैप तैयार करना तत्काल लक्ष्य है ।

सरकार ने वैज्ञानिक टिकाऊ और पारदर्शी खनन प्रक्रिया, अन्वेषण और भूवैज्ञानिक अनुसंधान और विकास के माध्यम से खनिज संसाधनों के अधिकतम उपयोग हेतु नीतिगत पहल या सुधार करने हेतु कोई कसर नहीं छोड़ी है।

ब्यूरो की भागीदारी से खनन क्षेत्र को सक्षम बनाने में मंत्रालय के प्रयासों को शक्ति मिलेगी जिससे खनन क्षेत्र को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और रोजगार में वृद्धि में सहायता मिलेगी। मुझे ब्यूरो के नेतृत्व में पूरा विश्वास है और मैं उम्मीद करता हूं कि सभी लक्ष्यों की प्राप्ति हो जाएगी और ब्यूरो मंत्रालय द्वारा किए गए सुधारों के साथ तालमेल कर पाएगा । मैं ब्यूरो को सभी भावी प्रयासों में सफलता हेतु शुभकामनाएं देता हूं ।

(नोटः- डॉ. एन.के. सिंह, संयुक्त सचिव, भारत सरकार, खान मंत्रालय एवं महानियंत्रक, भारतीय खान ब्यूरो (प्रभारी) द्वारा 15 अगस्त, 2018 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संबोधन ।)

स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत अभियान

डॉ. पी. के. जैन
मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

परिचय

स्वच्छ भारत अभियान को स्वच्छ भारत मिशन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है और भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है जो ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की सफाई के लिए आरम्भ किया गया है।इस अभियान में शौचालयों का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, गलियों व सड़कों की सफाई, देश के बुनियादी ढांचे को बदलना आदि शामिल है। इसको आधिकारिक तौर पर राजघाट, नई दिल्ली में 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधी की 145 वीं जयंती पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया था। भारत सरकार 2 अक्टूबर 2019 जो की महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती होगी तक भारत को स्वच्छ भारत बनाने का उद्देश्य रखी है यह अभियान प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक जिम्मेदारी है और इस देश को स्वच्छ देश बनाने के लिए हर भारतीय नागरिक की भागीदारी की आवश्यकता है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्व स्तर पर लोगों ने पहल की है। देश के सभी नागरिक इसमें पूर्ण उत्साह और उल्लास के साथ शामिल हो रहे है और 'स्वच्छ भारत अभियान' को सफल बनाने का प्रयास कर रहे है।

यह एक स्वच्छ भारत की कल्पना की दृष्टि से लागू किया गया है। भारत को एक स्वच्छ देश बनाना महात्मा गांधी का एक सपना था इसीलिए इसे महात्मा गांधी की जयंती पर भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया। महात्मा गांधी ने अपने वक्त में नारो द्वारा और लोगों को प्रेरित करके स्वच्छ भारत की कोशिश की थी। यह भारत के सभी नागरिकों के लिए एक बड़ी चुनौती है। यह तभी संभव है जब भारत में रहने वाला हर व्यक्ति इस अभियान के लिए अपनी जिम्मेदारी को समझे और इसे एक सफल मिशन बनाने के लिए एक साथ होकर पूरा करने की कोशिश करे। प्रसिद्ध भारतीय हस्तियों ने इसकी पहल की और पूरे भारत से एक जागरूकता कार्यक्रम के रूप में इसका प्रसार किया।

इस मिशन का उद्देश्य सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को कवर करना है ताकि दुनिया के सामने हम एक आदर्श देश का उदाहरण प्रस्तुत कर सके। मिशन के उद्देश्यों में से कुछ उद्देश्य है : खुले में शौच समाप्त करना, अस्वास्थ्यकर शौचालयों को फ्लुश शौचालय में परिवर्तित करना, हाथ से मल की सफाई को रोकना, ठोस और तरल कचरे का पुनः उपयोग, लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करना, अच्छी आदतो के लिए प्रेरित करना, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था अनुकूल बनाना, व भारत में निवेश के लिए रुचि रखने वाले सभी निजी क्षेत्रों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना आदि है। स्वच्छ भारत अभियान भारत की सबसे बड़ी सफाई अभियान है जिसके शुभारंभ पर लगभग 30 लाख स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों और सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। शुभारंभ के दिन प्रधानमंत्री ने नौ हस्तियों के नामो की घोषणा की और उनसे अपने क्षेत्र में सफाई अभियान को बढाने और आम जनता को उससे जुड़ने के लिए प्रेरित करने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि इन हस्तियों को अगले 9 लोगों को इससे जुड़ने के लिए प्रेरित करना है और ये श्रृंखला तब तक चलेगी जब तक की पूरे भारत तक इसका सन्देश न पहुंच जाए। उन्होंने यह भी कहा कि हर भारतीय इसे एक चुनौती के रूप में ले और इसे सफल अभियान बनाने के लिए अपना पूरा प्रयास करे। नौ लोगों की श्रृंखला पेड़ की शाखाओं की तरह है। उन्होंने आम जनता को इससे जुड़ने के लिए अनुरोध किया और कहा कि वे सफाई की तस्वीर सोशल मीडिया जैसे कि फेसबुक, ट्विटर व अन्य वेबसाइट पर डालें और अन्य लोगो को भी इससे जुड़ने के लिए प्रेरित करे। इस तरह भारत एक

स्वच्छ देश हो सकता है।

इस मिशन की निरंतरता बनाए रखते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने सभी आधिकारिक सरकारी इमारतों में सफाई सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश में चबाने वाला पान, गुटका और अन्य तम्बाकू उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने जून 2014 को संसद में संबोधित करते हुए कहा कि 'एक स्वच्छ भारत मिशन शुरू किया जाएगा जो देश भर में स्वच्छता, वेस्ट मैनेजमेंट और स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए होगा। यह महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती पर 2019 में हमारे तरफ से श्रद्धांजलि होगी'। इस अभियान के माध्यम से भारत सरकार वेस्ट मैनेजमेंट तकनीकों को बढ़ाने के द्वारा स्वच्छता की समस्याओं का समाधान करेगी। स्वच्छ भारत आंदोलन पूरी तरह से देश की आर्थिक ताकत के साथ जुड़ा हुआ है। महात्मा गांधी के जन्म की तारीख मिशन के शुभारंभ और समापन की तारीख है। स्वच्छ भारत मिशन शुरू करने के पीछे मूल लक्ष्य, देश भर में शौचालय की सुविधा देना, साथ ही दैनिक दिनचर्या में लोगों के सभी अस्वस्थ आदतों को समाप्त करना है।

इस मिशन की सफलता परोक्ष रूप से भारत में व्यापार के निवेशकों का ध्यान आकर्षित करना, जीडीपी विकास दर बढ़ाने के लिए, दुनिया भर से पर्यटकों का ध्यान खींचना, रोजगार के स्रोतों की विविधता लाने के लिए, स्वास्थ्य लागत को कम करने, मृत्यु दर को कम करने और घातक बीमारी की दर कम करने और भी कई चीज़ो में सहायक होंगी। स्वच्छ भारत अधिक पर्यटकों को लाएगी और इससे आर्थिक हालत में सुधार होगी। भारत के प्रधानमंत्री ने हर भारतीय को 100 घंटे प्रति वर्ष समर्पित करने के लिए अनुरोध किया है जो कि 2019 तक इस देश को एक स्वच्छ देश बनाने के लिए पर्याप्त है। इस अभियान का मुख्य लक्ष्य खुले में शौच की प्रवृति को खत्म करना, अस्वास्थयकर शौचालयों को बहाने वाले शौचालयों में तब्दील करना, हाथ से शौच की सफाई न करना, ठोस और द्रव कचरे को अच्छी तरह से निपटान कर देना, साफ-सफाई को लेकर लोगों को जागरुक करना, लोगों के सोच में बदलाव लाना, साफ-सफाई के सुविधाओं के प्रति प्राइवेट क्षेत्रों की भागीदारी को सुगम बनाना आदि। कई सारे दूसरे कार्यक्रम जैसे - स्वच्छ भारत रन, स्वच्छ भारत ऐप्स, रियल टाईम मॉनिटरिंग सिस्टम, स्वच्छ भारत लघु फिल्म, स्वच्छ भारत नेपाल अभियान आदि इस मिशन के उद्देश्य को सक्रियता से समर्थन करने के लिये प्रारंभ और लागू किया गया।

स्वच्छ भारत अभियान क्या है ?

स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्वच्छता मुहिम है जो भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है, इसके तहत 4041 सांविधिक नगरों के सड़क, पैदल मार्ग और अन्य कई स्थल आते हैं। ये एक बड़ा आंदोलन है जिसके तहत भारत को 2019 तक पूर्णतः स्वच्छ बनाना है। इसमें स्वस्थ और सुखी जीवन के लिये महात्मा गाँधी के स्वच्छ भारत के सपने को आगे बढ़ाया गया है। इस मिशन को 2 अक्टूबर 2014 (145वीं जन्म दिवस) को बापू के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर आरंभ किया गया है और 2 अक्टूबर 2019 (बापू के 150वीं जन्म दिवस) तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है । भारत के शहरी विकास तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत इस अभियान को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है। इस मिशन का पहला स्वच्छता अभियान (25 सितंबर 2014) भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा इसके पहले शुरु किया जा चुका था। इसका उद्देश्य सफाई व्यवस्था की समस्या का समाधान निकालना साथ ही सभी को स्वच्छता की सुविधा के निर्माण द्वारा पूरे भारत में बेहतर मल प्रबंधन करना है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देश को गुलामी से मुक्त कराया, परन्तु 'क्लीन इण्डिया' का उनका सपना पूरा नहीं हुआ। तथा महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। स्वच्छ भारत का उद्देश्य व्यक्ति, क्लस्टर और सामुदायिक शौचालयों के निर्माण के माध्यम से खुले में शौच की समस्या को कम करना या समाप्त करना है। स्वच्छ भारत मिशन लैट्रिन उपयोग की निगरानी के जवाबदेह तंत्र को स्थापित करने की भी एक पहल करेगा। सरकार ने 2 अक्टूबर 2019, महात्मा गांधी के जन्म की 150 वीं वर्षगांठ तक ग्रामीण भारत में 1.96 लाख करोड़ रुपये की अनुमानित लागत (यूएस $ 30 बिलियन) के 1.2 करोड़ शौचालयों का निर्माण करके खुले में शौंच मुक्त भारत (ओडीएफ) को हासिल करने का लक्ष्य रखा है।

स्वच्छ भारत अभियान की जरुरत

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिये। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिये भारत के लोगों में इसका एहसास होना बेहद आवश्यक है। ये सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिये है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरु किया जा सकता है। यहाँ नीचे कुछ बिंदु उल्लिखित किये जा रहे है जो स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता को दिखाते हैं।

- ये बेहद जरुरी है कि भारत के हर घर में शौचालय हो साथ ही खुले में शौच की प्रवृति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।
- अस्वास्थ्यकर शौचालय को पानी से बहाने वाले शौचालयों से बदलने की आवश्यकता है।
- हाथ के द्वारा की जाने वाली साफ-सफाई की व्यवस्था का जड़ से खात्मा जरुरी है।
- नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना।
- खुद के स्वास्थ्य के प्रति भारत के लोगों की सोच और स्वाभाव में परिवर्तन लाना और स्वास्थ्यकर साफ-सफाई की प्रक्रियों का पालन करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में वैश्विक जागरुकता का निर्माण करने के लिये और सामान्य लोगों को स्वास्थ्य से जोड़ने के लिये।
- इसमें काम करने वाले लोगों को स्थानीय स्तर पर कचरे के निष्पादन का नियंत्रण करना, खाका तैयार करने के लिये मदद करना।
- पूरे भारत में साफ-सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिये निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना।
- भारत को स्वच्छ और हरियाली युक्त बनाना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।
- स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से समुदायों और पंचायती राज संस्थानों को निरंतर साफ-सफाई के प्रति जागरुक करना।
- वास्तव में बापू के सपनों को सच करने के लिये ये सब करना है।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड़ घरों को 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है। सामुदायिक शौचालय के निर्माण की योजना रिहायशी इलाकों में की गई है जहाँ पर व्यक्तिगत घरेलू शौचालय की उपलब्धता मुश्किल है इसी तरह सार्वजनिक शौचालय की प्राधिकृत स्थानों पर जैसे - बस अड्डों, रेलवे स्टेशन, बाजार आदि जगहों पर। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पाँच वर्षों के अंदर 2019 तक पूरा करने की योजना है। इसमें ठोस कचरा प्रबंधन की लागत लगभग 7,366 करोड़ रुपये है, 1,828 करोड़ जन सामान्य को जागरुक करने के लिये है, 655 करोड़ रुपये सामुदायिक शौचालयों के लिये, 4,165 करोड़ निजी घरेलू शौचालयों के लिये आदि। वो कार्यक्रम जिन्हें पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है-खुले में शौच की प्रवृति को जड़ से हटाना, अस्वाथ्यकर शौचालय को पानी से बहाने वाले शौचालयों में परिवर्तन, खुले हाथों से साफ-सफाई की प्रवृति को हटाना, लोगों की सोच में परिवर्तन लाना और ठोस कचरा प्रबंधन करना।

ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन

ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन एक ऐसा अभियान है जिसमें ग्रामीण भारत में स्वच्छता कार्यक्रम को अमल में लाना है। ग्रामीण क्षेत्रों को स्वच्छ बनाने के लिये 1999 में भारतीय सरकार द्वारा इससे पहले निर्मल भारत अभियान (जिसको पूर्ण स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है) की स्थापना की गई थी। लेकिन अब इसका पुर्नगठन स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के रुप में किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को खुले में शौच करने की मजबूरी से रोकना है, इसके लिये सरकार ने 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिये एक लाख चौतिस हजार करोड़ की राशि खर्च करने की योजना बनाई है। ध्यान देने योग्य है कि सरकार ने कचरे को जैविक खाद और इस्तेमाल करने लायक ऊर्जा में

परिवर्तित करने की भी है। इसमें ग्राम पंचायत, जिला परिषद, और पंचायत समिती की अच्छी भागीदारी है। निमनलिखित स्वच्छ भारत मिशन(ग्रामीण) का लक्ष्य हैः

- ग्रामीण क्षेत्रों मे रह रहे लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना।
- 2019 तक स्वच्छ भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में साफ-सफाई के लिये लोगों को प्रेरित करना।
- जरुरी साफ-सफाई की सुविधाओं को निरंतर उपलब्ध कराने के लिये पंचायती राज संस्थान, समुदाय आदि को प्रेरित करते रहना चाहिये।
- ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस और द्रव्य कचरा प्रबंधन पर खासतौर से ध्यान देना तथा उनन्त पर्यावरणीय साफ-सफाई व्यवस्था का विकास करना जो समुदायों द्वारा प्रबंधनीय हो।
- ग्रामीण क्षेत्रों में निरंतर साफ-सफाई और पारिस्थितिक सुरक्षा को प्रोत्साहित करना।

फरवरी 2018 : बतौर ब्रांड एम्बेसडर शेखर गुरेरा द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण के अंतर्गत एमसीजी के लिए बनाये कार्टूनों की श्रृंखला वाला एक का पोस्टर

स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय अभियान :-

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन स्वच्छ भारत-स्वच्छ विद्यालय अभियान केंद्रीय विद्यालयों और नवोदय विद्यालय संगठन में आयोजित किया जा रहा है। इस दौरान की जाने वाली गतिविधियों में शामिल हैं-

स्कूल कक्षाओं के दौरान प्रतिदिन बच्चों के साथ सफाई और स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं पर विशेष रूप से महात्मा गांधी की स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य से जुड़ीं शिक्षाओं के संबंध में बात करें।

- कक्षा, प्रयोगशाला और पुस्तकालयों आदि की सफाई करना।
- स्कूल में स्थापित किसी भी मूर्ति या स्कूल की स्थापना करने वाले व्यक्ति के योगदान के बारे में बात करना और इस मूर्तियों की सफाई करना।
- शौचालयों और पीने के पानी वाले क्षेत्रों की सफाई करना।
- रसोई और सामान गृह की सफाई करना।
- खेल के मैदान की सफाई करना
- स्कूल बगीचों का रखरखाव और सफाई करना।
- स्कूल भवनों का वार्षिक रखरखाव रंगाई एवं पुताई के साथ।
- निबंध,वाद-विवाद, चित्रकला, सफाई और स्वच्छता पर प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- 'बाल मंत्रिमंडलों का निगरानी दल बनाना और सफाई अभियान की निगरानी करना।

कार्य योजना :-

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 'शहरी क्षेत्रों के लिए स्वच्छ भारत मिशन' कार्यक्रम को 24 सितम्बर को स्वीकृति भी दे दी। मिशन के तहत कुल 4041 सांविधिक नगरों में 5 वर्षों तक चलने वाले इस कार्यक्रम की अनुमानित लागत 62,009 करोड़ रुपये होगी। जिसमें केंद्रीय सहायता 14,623 करोड़ रुपये की होगी। गांधी जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर, 2014 को शुरू हो रहे स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य 2019 तक भारत को खुले में शौच की प्रवृत्ति से मुक्त बनाना है। यह उद्देश्य व्यक्तिगत, सामूहिक और सामुदायिक शौचालय के निर्माण के माध्यम से हासिल किया जाना है। ग्राम पंचायत के जरिये ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन के साथ गांवों को साफ रखे जाने की योजना है। मांग के आधार पर सभी घरों को नलों के

साथ जोड़कर सभी गांवों में पानी पाइपलाइन 2019 तक बिछाये जाने हैं। इस लक्ष्य को सभी मंत्रालयों तथा केंद्रीय एवं राज्य की योजनाओं के बीच सहयोग और तालमेल, सीएसआर एवं द्विपक्षीय/बहुपक्षीय सहायता के साथ सभी तरह के नवीन एवं अभिनव उपायों के वित्तपोषण के माध्यम से हासिल किया जाना है।

भारत में 1.21 अरब लोग रहते हैं और दुनिया की आबादी का छठा हिस्सा यहां निवास करता है। देश में 1980 के दशक की शुरुआत में स्वच्छता आवृत्ति क्षेत्र एक प्रतिशत जितना कम था। 2011 की जनगणना के हिसाब से, 16.78 करोड़ घरों की लगभग 72.2 प्रतिशत भारतीय जनसंख्या 6,38,000 गांव में रहती है। इनमें से सिर्फ 5.48 करोड़ ग्रमीण घरों में शौचालय है जिसका मतलब है कि देश के 67.3 प्रतिशत घरों की पहुंच अब भी स्वच्छता सुविधा तक नहीं हो पाई है। राज्यों के माध्यम से पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय से कराए गए आधारभूत सर्वेक्षण 2012-13 के अनुसार पाया गया है कि 40.35 प्रतिशत ग्रामीण घरों में शौचालय हैं।

चुनौतियां :-

गांवों में लगभग 59 करोड़ व्यक्ति खुले में शौच करते हैं। जनसंख्या के बड़े हिस्से की मानसिकता खुले में शौच करने की है और इसे बदलने की आवश्यकता है। उनमें से कई पहले से ही शौचालय होने पर भी खुले में शौच करना पसंद करते हैं। इसलिए सबसे बड़ी चुनौती आबादी के इस बड़े हिस्से में शौचालय के इस्तेमाल को लेकर उनके व्यवहार में बदलाव लाने की है। मनरेगा और निर्मल भारत अभियान के बीच तालमेल की समस्या जैसे मुद्दे, शौचालय के उपयोग के लिए पानी की उपलब्धता, निष्क्रिय/बेकार हो चुके शौचालय पहले से निर्मित शौचालयों का क्या किया जाए जैसे मुद्दों के साथ ग्रामीण स्वच्छता के कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय स्तरीय कर्मचारियों की अपर्याप्त संख्या के बारे में भी गंभीरता से सोचा जाना है।

बढ़ते कदम :-

बदल रही मानसिकता बहुत महत्वपूर्ण है। चूंकि अधिकतर आईईसी (सूचना, शिक्षा एवं संचार) कोष राज्यों के पास हैं, इसलिए राज्य सरकारों को छात्रों, आशा कार्यकर्ताओं, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, चिकित्सकों, शिक्षकों, प्रखंड संयोजकों आदि के माध्यम से अंतर्व्यक्ति संचार (आईपीसी) पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। इसके लिए इन्हें घर-दर-घर भी संपर्क करना होगा। लघु फिल्मों की सीडी, टेलीविजन, रेडियो, डिजिटल सिनेमा, पंफलेट के उपयोग भी करने होंगे। सुरक्षित स्वच्छता व्यवहार के प्रति अपनी मानसिकता में बदलाव लाने के लिए स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों/सिनेमा की हस्तियों की भी इस अभियान में भागीदारी जरूरी है। पाइप जल आपूर्ति एवं घरों में शौचालय के लिए जिलास्तरीय सामेकित डीपीआरडिटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट्सके जरिए एकदम निचले स्तर की योजना में पानी और स्वच्छता दोनों को एक साथ शामिल करना होगा। इसके लिए राज्य स्तरीय योजना स्वीकृति समिति की मंजूरी लेनी होती है। माइक्रोफाइनेंस एवं बैंकों के माध्यम से एपीएल परिवारों के लिए इस तरह के शौचालयों का पुनर्निर्माण भी कराया जा सकता है। आधारभूत सर्वेक्षण 2013 में, राज्यों ने बताया है कि देश में निमनलिखित स्वच्छता सेवा उपलब्ध कराने की अवश्यकता है :

घटक	संख्या
भारत में कुल घरों की संख्या	17.13 करोड़
आईएचएचएल	*11.11 करोड़
विद्यालय में शौचालय	56,928
आंगनवाड़ी शौचालय	1,07,695
सामुदायिक स्वच्छता परिसर	1,14,315
(इनमें से केवल 8,84,39,786 ही पात्र श्रेणी के अंतर्गत है)	

योजना के लिए शेष परिवार	
कुल परिवार जिनके लिए आधारभूत सर्वेक्षण में शौचालय की आवश्यकता दिखाई गई है	11.11 करोड़
(-) अपात्र एपीएल	0.88 करोड़
(-) निष्क्रिय	1.39 करोड़
शुद्ध बीपीएल पात्र एवं एपीएल पात्र	8.84 करोड़

इस प्रकार स्वच्छ भारत/निर्मल भारत अभियान योजना के अंतर्गत अगले पांच सालों में 2019 तक प्रतिवर्ष 177 लाख की दर से 8.84 करोड़ परिवारों को प्रोत्साहन दिया जाना है। इस समय परिवारों में शौचालय की वृद्धि दर 3 प्रतिशत है जिसे स्वच्छ भारत के जरिये 2019 तक तीन गुणा से ज्यादा बढ़ाकर 10 प्रतिशत तक की उपलब्धि पर ले जाना है। इस समय 14,000 शौचालय प्रतिदिन बनाये जा रहे हैं। इस योजना में शौचालय निर्माण दर 48,000 तक प्रतिदिन करना है। नाबार्ड/सिडबी के सहयोग से 2.27 करोड़ शौचालय (एपीएल श्रेणी के अंतर्गत) और बनाये जाने हैं। इसे अनुनय 'विनय, सामूहिक दबाव के इस्तेमाल से सूचना, शिक्षा एवं संचार (आईईसी) एवं अंतर्वैयक्तिक संचार (आईपीसी) उपायों के माध्यम से अंजाम देना है।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान के लिए आवश्यक धन

क्र.	घटक	कुल राशि	अभ्युक्ति
1.	व्यक्तिगत शौचालय	4,165	दो वर्षों में पूर्ण
2.	सामुदायिक शौचालय	655	दो वर्षों में पूर्ण
3.	सार्वजनिक शौचालय	0	पीपीपी के जरिए
4.	ठोस अपशिष्ट प्रबंधन	7,366	दूसरे व तीसरे वर्ष में 90 प्रतिशत कवरेज
5.	जनजागृति	1,828	
6.	क्षमता निर्माण आदि मद	14,625	
*(रु. करोड़ में) स्रोत : www.pib.nic.in			

सामुदायिक नेतृत्व में संपूर्ण स्वच्छता सीएलटीएस सामुदायिक नेतृत्व में संपूर्ण स्वच्छता सीएलटीएस पूरी तरह से खुले में शौच ओडी को खत्म करने के लिए समुदायों के बीच एकजुटता कायम करने की एक अभिनव पद्धति है। समुदायों को अपने स्वयं के मूल्यांकन का संचालन करनें के लिए मदद किया जाता है एवं खुले में शौच ओडी के विश्लेषण करने तथा खुले में शौच से मुक्त ओडीएफ करने के लिए उनके स्वयं की कार्रवाई में भी मदद की जाती है। सामुदायिक नेतृत्व में स्वच्छता के हृदय पर यह एक झूठी पहचान की तरह चस्पा हैं जिनके न तो उपयोग की गारंटी है और न ही उन्नत स्वच्छता एवं स्वास्थ्य रक्षा जैसे परिणाम देती है। सामुदायिक नेतृत्व में पूर्ण स्वच्छता व्यावहारिक बदलाव पर अपना ध्यान केंद्रित करती है, जिसमें वास्तविक और स्थायी सुधार की जरूरत है- हार्डवेयर के बजाय समुदाय को एकजुट करने में निवेश एवं व्यक्तियों के लिए शौचालय निर्माण की बजाय खुले में शौच मुक्त गांव के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना।

यहां तक कि एक अल्पसंख्यक के रूप में उनके बीच जागरूकता बढ़ाकर उन्हें इस बात के लिए आगाह करना कि खुले में शौच करना किसी रोग के खतरे की आहट है, सामुदायिक नेतृत्व में संपूर्ण स्वच्छता समुदाय को अपनी इच्छा में बदलाव के लिए उन्हें आग्रही बनाती है, कार्रवाई के लिए प्रेरित करती है और अभिनव प्रयोग, परस्पर सहयोग एवं उचित स्थानीय समाधान के लिए उन्हें प्रोत्साहन देती है, इस प्रकार अधिक से अधिक स्वामित्व और स्थिरता के लिए अग्रणी भूमिका निभाती है। इस दृष्टिकोण को व्यक्तिगत प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं है और राज्य के साथ अधिक से अधिक चर्चा किये जाने की जरूरत है। हालांकि कुछ प्रारंभिक प्रखंड अनुदान पंचायत के लिए भी विचारणीय है यह भी एक पुरस्कार से कम नहीं है अगर एक बार में पूरा गांव खुले में शौच करने से मुक्त हो जाता है।

आई बी एम में स्वच्छता और स्वास्थ्य

भारतीय खान ब्यूरो द्वारा 23 फरवरी 2018 से 01 मार्च 2018 तक देश के पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में स्थित विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों में स्वच्छता सप्ताह का आयोजन जागृति शिविर के माध्यम से किया गया । इस अभियान के तहत खनन परिसर के आसपास की बस्तियों, स्कूलों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । स्वच्छ भारत - स्वस्थ जागरूकता शिविर खनन क्षेत्र के स्कूलों में स्वच्छता एवं सफाई पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता, कार्यशाला द्वारा स्वच्छता के महत्व और उससे होने वाले लाभ के बारे में लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया गया ।

भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा स्वच्छता और स्वास्थ विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 75 से अधिक खान पट्टाधारकों ने भाग लिया और पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन द्वारा अपनी खानों और आसपास के परिसर, स्कूल, बस्ती में स्वास्थ, स्वच्छता, वनीकरण, पीने योग्य पानी, शौचालय आदि विषयों पर किए गए कार्यों को साझा किया ।

भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर क्षेत्रीय कार्यालयद्वारा स्कूल में स्वास्थ, स्वच्छता पर चर्चा

निष्कर्ष

इस तरह हम कह सकते है कि 2019 तक भारत को स्वच्छ और हरा-भरा बनाने के लिये स्वच्छ भारत अभियान एक स्वागत योग्य कदम है। जैसा कि हम सभी ने कहावत में सुना है 'स्वच्छता भगवान की ओर अगला कदम है'। हम विश्वास के साथ कह सकते है कि अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रुप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले चंद वर्षों में स्वच्छ भारत अभियान से पूरा देश भगवान का निवास स्थल सा बन जाएगा। चूँकि स्वच्छता से ईश्वर का गर्मजोशी से स्वागत शुरु हो चुका है तो हमें भी अपने जीवन में स्वच्छता को जारी रख उनको बनाये रखने की आवश्यकता है, एक स्वस्थ्य देश और स्वस्थ्य समाज को जरुरत है कि उसके नागरिक स्वस्थ्य रहें तथा हर व्यवसाय में स्वच्छ हो।

स्वच्छता एक अकेले आदमी का काम नहीं है, बल्कि यह सामूहिक जबाबदेही है । जबतक सभी लोगों का सहयोग नहीं मिलता है तब तक स्वच्छ भारत - स्वस्थ भारत का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता । इसलिए आज आवश्यकता एटिट्यूटचेंज करने की है । नागरिकों के व्यवहार में परिवर्तन, मानसिकता में बदलाव और स्वच्छता के प्रति जवाबदेही स्वच्छ भारत - स्वस्थ भारत के लक्ष्य को शीघ्र पाने में जादू का काम कर सकता है ।

यदि हम अपने घरों के पीछे सफाई नहीं रख सकते तो स्वराज की बात बेईमानी होगी।

हर किसी को स्वयं अपना सफाईकर्मी होना चाहिए : महात्मा गांधी

राष्ट्रभाषा हिंदी की व्यथा

प्रमोद सांगोले
उप निदेशक
भारतीया खान ब्यूरो, नागपुर

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि अगर हम भारत को राष्ट्र बनाना चाहते हैं, तो हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है।किसी भी राष्ट्र की सर्वाधिक प्रचलित एवं स्वेच्छा से आत्मसात की कई भाषा को राष्ट्रभाषा कहा जाता है।हिंदी, बंगला, उर्दू, पंजाबी, तेलुगु, तमिल, कनन्ड़, मलयालम, उडि़या, इत्यादि भारत के संविधान द्वारा राष्ट्र की मान्य भाषाएँ है।इन सभी भाषाओं में हिंदी का स्थान सवीपरि है, क्योंकि यह भारत की राजभाषा भी है।राजभाषा वह भाषा होती है, जिसका प्रयोग किसी देश में राज-काज को चलाने के लिए किया जाता है।हिंदी को 14 सितंबर, 1949 को राजभाषा का दर्जा दिया गया है।इसके बावजूद सरकारी काम-काज में अब तक अंग्रेजी का व्यापक प्रयोग किया जाता है।हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा तो है, किन्तु इसे यह सम्मान सिर्फ़ सैद्धांतिक रुप में प्राप्त है, वास्तविक रूप में राजभाषा का सम्मान प्राप्त करने के लिए इसे अंग्रेजी से संघर्ष करना पड़ रहा है।

वॉल्टर केनिंग ने कहा था विदेशी भाषा का किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र की राज-काज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दास्ताने है।एक विदेशी भाषा होने के बावजूद अंग्रेजी में राज-काज को विशेष महत्व दिए जाने और राजभाषा के रूप में अपने सम्मान प्राप्त करने हेतु हिंदी के संघर्ष के कारण जानने के लिए सबसे पहले हमें हिंदी की संवैधानिक स्थिति को जानना होगा।संविधान के अनुच्छेद 343 के खंड-1 में कहा गया है कि भारत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले अंको का रूप, भारतीय अंको का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा। खंड-2 में यह उपबन्ध किया गया था कि संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष की अवधि तक अर्थात 26 जनवरी, 1965 तक संघ के सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग होता रहेगा जैसे कि पूर्व में होता था।वर्ष 1965 तक राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी के प्रयोग का प्रावधान किए जाने का कारण यह था कि भारत वर्ष 1947 से पहले अंग्रेजों के अधीन रहा था और तत्कालीन ब्रिटिश शासन में यहाँ इसी भाषा का प्रयोग राजकीय प्रयोजनों के लिए होता था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अचानक राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी का प्रयोग कर पाना व्यवहारिक रुप से संभव नहीं था, इसलिए वर्ष 1950 में संविधान के लागू होने के बाद से अंग्रेजी के प्रयोग के लिए 15 वर्षों का समय दिया गया और यह तय किया गया कि इन 15 वर्षों में हिंदी का विकास कर इसे राजकीय प्रयोजनों के उपयुक्त कर दिया जाएगा। किंतु यह 15 वर्ष पूरे होने के पहले ही हिंदी को राजभाषा बनाए जाने का दक्षिण भारत के कुछ स्वार्थी राजनीतिज्ञों ने व्यापक विरोध करना प्रारंभ कर दिया।देश की सर्वमान्य भाषा हिंदी को क्षेत्रीय लाभ उठाने के ध्येय से विवादों में घसीट लेने को किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता।

भारत में अनेक भाषा-भाषी लोग रहते हैं।भाषाओं की बहुलता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि भारत के संविधान में ही 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है।हिंदी भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है और बांग्ला भाषा दूसरे स्थान पर विराजमान है।इसी तरह पहाड़ी, तमिल, तेलुगू, कनन्ड़, मलयालम, मराठी, इत्यादि भाषाएँ बोलनेवालों की संख्या भी काफी है।भाषाओं की बहुलता के कारण भाषायी वर्चस्व की राजनीति ने भाषावाद का रूप धारण कर लिया है।इसी भाषावाद की लड़ाई में हिंदी को नुकसान उठाना पड़ रहा है और स्वार्थी राजनीतिज्ञ इसको इसका वास्तविक सम्मान दिए जाने का विरोध करते रहे है।

देश की अन्य भाषाओं के बदले हिंदी को राजभाषा बनाए जाने का मुख्य कारण यह है कि यह भारत में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा के साथ-साथ देश की एकमात्र संपर्क भाषा भी

है।ब्रिटिशकाल में पूरे देश में राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग होता था।पूरे देश के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती थी। किंतु स्वतन्त्रता आंदोलन के समय राजनेताओं ने यह महसूस किया है, जो दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों को छोड़कर पूरे देश की संपर्क भाषा है और देश के विभिन्न भाषा-भाषी भी आपस में विचार विनिमय करने के लिए हिंदी का सहारा लेते है।हिंदी की इसी सार्वभौमिकता के कारण राजनेताओं ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया था।

हिंदी राष्ट्र के बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है। इसकी लिपि देवनागरी है, जो अत्यंत सरल है।पंडित राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में 'हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है' हिंदी में आवश्यकतानुसार देशी-विदेशी भाषाओं के शब्दों को सरलता से आत्मसात करने की शक्ति है।यह भारत की एक ऐसी राष्ट्रभाषा है, जिसमें पूरे देश में भावात्मक एकता स्थापित करने की पूर्ण क्षमता है।

आजकल पूरे भारत में सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में हिंदी और अंग्रेजी के मिश्रित रूप हिंगलिश का प्रयोग बढ़ा है। इसके कई कारण है।पिछले कुछ वर्षों में भारत में व्यवसायिक शिक्षा में प्रगति आई है।अधिकतम व्यावसायिक पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध है और विद्यार्थियों के अध्ययन का माध्यम अंग्रेजी भाषा ही है।इस कारण से विद्यार्थी हिंदी में पूर्ण पूर्णतः नहीं हो पाते हैं।अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त युवा हिंदी में बात करते समय अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करने को बाध्य होते है, क्योंकि हिंदी भारत में आम जन की भाषा है।इसके अतिरिक्त आजकल समाचार-पत्रों एवं टेलीविजन के कार्यक्रमों में भी ऐसी ही मिश्रित भाषा प्रयोग में लाई जा रही है। इन सब का प्रभाव आम आदमी पर पड़ता है।

भले ही हिंगलिश के बहाने हिंदी बोलने वालों की संख्या बढ़ रही है, किंतु हिंगलिश का बढ़ता प्रचलन हिंदी भाषा की गरिमा के दृष्टिकोण से गंभीर चिंता का विषय है।कुछ वैज्ञानिक शब्दों : जैसे मोबाइल, कंप्यूटर, साइकिल, टेलीविजन एवं अन्य शब्दों : जैसे स्कूल, कॉलेज, स्टेशन इत्यादि तक तो ठीक है, किंतु अंग्रेजी के अत्यधिक एवं अनावश्यक शब्दों का हिंदी में प्रयोग सही नहीं है। हिंदी व्याकरण के दृष्टिकोण से एक समृद्ध भाषा है।यदि इसके पास शब्दों का अभाव होता है, तब तो इसकी स्वीकृति दी जा सकती है।शब्दों का भंडार होते हुए भी यदि इस तरह की मिश्रित भाषा का प्रयोग किया जाता है, तो यह निश्चय ही भाषायी गरिमा के दृष्टिकोण से एक बुरी बात है। भाषा संस्कृति की संरक्षक एवं वाहक होती है। राष्ट्रभाषा की गरिमा नष्ट होने से उस स्थान की सभ्यता और संस्कृति पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।हमारे पूर्व राष्ट्रपति स्व. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का कहना है 'वर्तमान समय में विज्ञान के मूल कार्य अंग्रेजी में होते, इसलिए आज अंग्रेजी आवश्यक है। किंतु मुझे विश्वास है कि अगले दो दशको में विज्ञान के मूल कार्य हमारी भाषाओं में होने शुरू हो जाएंगे और तब हम जापानियों की तरह आगे बढ़ सकेंगे'।

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के संदर्भ में गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर ने कहा था 'भारत की सारी प्रांतीय बोलियाँ, जिनमें सुंदर साहित्यों की रचना हुई है, अपने घर या प्रांत में रानी बनकर रहे, प्रांत के जन-गण के हार्दिक चिंतन की प्रकाशभूमि स्वरूप कविता की भाषा हो कर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य-मणि हिंदी भारत-भारती होकर विराजती रहे। प्रत्येक देश की पहचान का एक मजबूत आधार उसकी अपनी भाषा होती है, जो अधिक से अधिक व्यक्तियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा के रूप में व्यापक विचार विनिमय का माध्यम बनकर ही राष्ट्रभाषा (यहाँ राष्ट्रभाषा का तात्पर्य है - पूरे देश की भाषा) का पद ग्रहण करती है।राष्ट्रभाषा के द्वारा आपस में संपर्क बनाए रखकर देश की एकता और अखंडता को भी कायम रखा जा सकता है।

हिंदी देश की संपर्क भाषा तो है ही, इसे राजभाषा का वास्तविक सम्मान भी दिया जाना चाहिए, जिससे कि यह पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधने वाली भाषा बन सके।देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की कही गई बात है, वह आज भी प्रासंगिक है 'जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता ।अतः आज देश के सभी नागरिकों को यह संकल्प लेने की आवश्यकता है कि वह हिंदी को सस्नेह अपनाकर और सभी कार्य क्षेत्रों में इसका अधिक से अधिक प्रयोग कर इसे व्यवहारिक रुप से राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्रदान करेंगे।

''रिश्ते बदलें नहीं, उन्हें समझ कर निभाएं''

श्रीमती नीता कोठारी
वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, उदयपुर

आज कल कुछ चलन सा हो गया है यह कहने का कि 'वह मेरी बहू नहीं बेटी है' 'मैं अपने घर मे बहू नहीं बेटी लाना चाहती हूँ। 'बहू के माता - पिता से भी कई लोग कहते हैं कि आपकी बेटी अब मेरे बेटी है' । समाज के ठेकेदार भी यह कहते हुए मिल जाएंगे कि बहू को बेटी समझो । परंतु मैं इस रिश्ते के बदलाव से सहमत नहीं हूँ। इस बदलाव के पीछे जो कारण बन रहे हों उन कारणों पर चिंतन करना आवशयक हो सकता है, परंतु रिश्ते बदलने या एक रिश्ते को समाप्त करने कि भावना कदापि सही नहीं हो सकती।

यदि किसी कारण बहू को बेटी बना भी लिया जाये तो क्या किन्ही कारणों से भाई को पुत्र, पुत्र को भाई, चाचा को दादा, दादा को पिता इत्यादि कुछ भी माना जा सकता है ? क्या यह सब उचित होगा? तब फिर बहू को बेटी मानने कि मानसिकता क्यों ? मेरी मान्यता से विगत कुछ दशकों में दहेज के कारण कुछ अविवेकी परिवारों द्वारा बहुओं पर अत्याचार किए गए उन्हें शारीरिक एवं मानसिक वेदनाएं दी गई जो कि निश्चित तौर पर समाज के लिए कलंक साबित हुए हैं जिससे मानव समाज शर्मिंदा हुआ है परंतु गहराई से विचार करें तो सच में न तो यह परिवर्तन संभव है न ही उचित।

बेटी के रिश्ते में जो चंचलता, चपलता आनंद है वह बहू के रिश्ते में नहीं है और हाँ तो शोभास्पद भी नहीं है। बहू की रिश्ते में जो गंभीरता, ज़िम्मेदारी, सहनशीलता, समन्वय की भावनाएं हैं वह बहू, बेटी रहते हुए धारण नहीं कर सकती । भारतीय परंपरा में बेटी आदरणीय ही नहीं कहीं- कहीं तो पूज्य मानी गई है । जबकि बहू अन्य परिवार से आ कर भी ग्रहस्वामिनी है, वह परिवार के यश-अपयश, लाभ-हानि में बराबर की भागीदार है। भारतीय परंपरा में गृहलक्ष्मी कहकर उसका स्वागत किया जाता है। बहू सच में परिवार की मर्यादा, कुल की आन-बान-शान का प्रतीक है । इसलिए बेटी कितनी भी प्रिय रही हो पर उसका अपने पीहर में अधिकार मर्यादित रहा है और बहू का अमर्यादित अर्थात सम्पूर्ण अधिकार रहा है। हम रिश्ते बदल कर क्या चाहते हैं कि बहू भी बेटी की तरह चंचलता प्रदर्शित करे ? वह भी जिस तरह बेटी माँ-बाप के लाड़ -प्यार में सुबह आठ बजे सो कर उठती है वह भी उठे? वह भी बेटी कि तरह मचले ? यदि नहीं तो क्या अंतर बहू को बेटी मानकर लाना चाह रहे हैं ? हम कह सकते है कि प्रेम भावना लाना चाहते हैं । तो क्या आप बहू को अपना सन्हे नहीं दे सकते ? आप उसकी गलतियों को नज़र अंदाज़ नहीं कर सकते ? उसकी प्रगति में प्रशंसा नहीं कर सकते ?तो यह कार्य तो बहू मान कर भी किया जा सकता है और क्या ये जो कहते है कि हम बहू को बेटी मानते हैं। क्या वे सच में बेटी मानते हैं? यदि बहू के साथ उनका रिश्ता बदलेगा तो परिवार के अन्य सदस्यों के साथ उस बहू की रिश्तेदारी नहीं बदल जाएगी ? और यदि ऐसा हुआ तो परिवार का क्या रूप बनेगा ? यह प्रश्न विचारणीय है । अतः रिश्तों को न बदलें, उनके निभाने में जो विकृति आई है उनको हटाएँ।

बहू जिस स्नेह, आदर, अधिकार की हकदार है, वह उसे दें और बहू भी अपने सेवा-भाव, समर्पण, समन्वय और ज़िम्मेदारी के व्यवहार से परिवार में अपनत्व देकर खुशियाँ बिखेरे । आज बहू को दोयम दर्जे का समझने व बेटी के सब दोष माफ करने का ही शायद दुष्फल है की जो कार्य बहू को करना चाहिये वह बेटी कर रही है और हर बेटी किसी की बहू भी है ही, तो वह सेवा कार्य तो वही कर रही है, जो करना चाहिये। पर वहाँ नहीं कर रही जहाँ करना चाहिए। अतः हर बेटी की प्रशंसा हो रही है और बहू की निंदा। जबकि पद दो है और व्यक्ति एक है और कार्य एक। अतः मेरा मानना है की बहू को बहू के रूप में स्वीकार करें और बेटी को बेटी ही रहने दें, अपने घर की बहू न बनायें और बेटी भी जबर्दस्ती जो कार्य बहू के रूप में करने का है उस ज़िम्मेदारी को छोड़ कर पीहर में बहू बनकर न करें। क्योंकि बेटी किसी की बहू और बहू किसी

की बेटी ही है । अपने रिश्तों में मधुरता, वात्सल्य, अपनापन, समझदारी, विवेक, आदरभाव भरा हो तो फिर फिर शांतिपूर्वक मार्ग में अग्रसर होने से कौन रोक सकता है ? अंत मे विशेष निवेदन यह की आवश्यक होने पर सच में बहू-बेटी ही नहीं, सास-बहू या देवरानी-जेठानी में भी क्या भेद है, परिवार एक ही है सभी मिलकर ही तो परिवार कहलाता है । जब हम आनन्द मनाने के लिए एक साथ जुट सकते है, सहयोग कर सकते हैं तब विपत्ति, समस्या,बीमारी आदि आने पर जब जिससे जैसा सहयोग बने बिना भेदभाव ही करना चाहिये । **यही तो गृहस्थी की शोभा है । हो सकता है आप हमारे विचारों से सहमत न हों ।**

बोधकथा

पिकासो (Picasso) स्पेन में जन्में एक बहुत मशहूर चित्रकार थे। उनकी पेंटिंग दुनिया भर में करोड़ों और अरबों रुपयों में बिका करती थीं। केवल स्पेन के ही नहीं बल्कि दुनियां भर के लोग उनकी पेंटिंग के दीवाने थे।

एक बार पिकासो किसी काम से कहीं जा रहे थे लेकिन रास्ते में ही शाम हो जाने की वजह से पिकासो ने एक गाँव में ही रुकने का फैसला लिया। उस जगह पिकासो पहली बार आये थे। वहां कोई नहीं जानता था कि ये व्यक्ति मशहूर चित्रकार पिकासो हैं।

रास्ते से गुजरते समय एक महिला की नजर पिकासो पर पड़ी और संयोग से उस महिला ने उन्हें पहचान लिया। वो दौड़ी हुई उनके पास आयी और बोली - सर मैं आपकी बहुत बड़ी फैन हूँ। आपकी पेंटिंग्स मुझे बहुत ज्यादा पसंद हैं। क्या आप मेरे लिए भी एक पेंटिंग बनायेंगे ?

पिकासो हँसते हुए बोले - मैं यहाँ खाली हाथ हूँ मेरे पास कुछ नहीं है मैं फिर कभी आपके लिए पेंटिंग बना दूंगा। लेकिन उस महिला ने भी जिद पकड़ दी कि मुझे अभी एक पेंटिंग बना के दो, बाद में पता नहीं आपसे मिल पाऊँगी या नहीं।

पिकासो ने जेब से एक छोटा सा कागज निकाला और अपने पेन से उसपे कुछ बनाने लगे। करीब 10 सेकेण्ड के अंदर पिकासो ने पेंटिंग बनायीं और कहा ये लो ये मिलियन डॉलर की पेंटिंग है।

उस लड़की को बड़ा अजीब लगा कि पिकासो ने बस 10 सेकेण्ड में जल्दी से एक काम चलाऊ पेंटिंग बना दी और बोल रहे हैं कि मिलियन डॉलर की पेंटिग है। उस औरत ने वो पेंटिंग ली और बिना कुछ बोले अपने घर आ गयी।

उसको लगा पिकासो उसका पागल बना रहा है, इसलिए वो मार्किट गयी और उस पेंटिंग की कीमत पता की। और उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वो पेंटिंग वास्तव में मिलियन डॉलर की थी।

वो भागी भागी एक बार फिर पिकासो के पास आयी और बोली - सर आपने बिलकुल सही कहा था ये तो मिलियन डॉलर की ही पेंटिंग है। पिकासो ने हँसते हुए कहा कि मैंने तो आपसे पहले ही कहा था।

वो महिला बोली - सर आप मुझे अपनी स्टूडेंट बना लीजिये और मुझे भी पेंटिंग बनानी सीखा दीजिये। जैसे आपने 10 सेकेण्ड में मिलियन डॉलर की पेंटिंग बना दी, वैसे मैं भी 10 सेकेण्ड में ना सही 10 मिनट में ही अच्छी पेंटिंग बना सकूँ। मुझे ऐसा बना दीजिये।

पिकासो ने हँसते हुए कहा - ये जो मैंने 10 सेकेण्ड में पेंटिंग बनायीं है इसे सीखने में मुझे 30 साल का समय लगा। मैंने अपने जीवन के 30 साल सीखने में दिए तुम भी दो, सीख जाओगी। वो महिला अवाक् निःशब्द होकर पिकासो को देखती रह गयी।

दोस्तों जब हम दूसरों को सफल होता देखते हैं तो हमें ये सब बड़ा आसान लगता है। हमको लगता है कि यार ये इंसान को बड़ी जल्दी और बड़ी आसानी से सफल हो गया। लेकिन मेरे दोस्त उस एक सफलता के पीछे ना जाने कितने सालों की मेहनत छिपी है ये कोई नहीं देख पाता। सफलता तो बड़ी आसानी से मिल जाती है लेकिन सफलता की तैयारी में अपना जीवन कुर्बान करना होता है। जो लोग खुद को तपाकर, संघर्ष करके अनुभव हासिल करते हैं वो कामयाब हो जाते हैं और दूसरों को लगता है कि ये कितनी आसानी से सफल हो गया।

मैं अभी और जीना चाहता हूँ

श्री अभिषेक कुमार
एम.टी.एस.
भारतीय खान ब्यूरो, कोलकाता

अपने जन्म के 70 वें जन्मदिन पर एक ऐसा व्यक्ति जो पूरी तरह से अपंगता का शिकार है पर एक महान वैज्ञानिक, लेखक एवं कैंमबिज विश्वविद्यालय के शोध निदेशक भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिग के शब्द हैं जिनके शरीर की कई मांसपेशियां काम नहीं करती है ।

स्टीफन हॉकिग एक विश्व प्रसिद्व भौतिक विज्ञानी, लेखक, और कैंब्रिज विश्वविद्यालय में ब्रहांण्ड विज्ञान के केंद्र शोध निदेशक ह। 1 जनवरी 1942 को इंगलैंड के ऑक्सफोर्ड शहर में जन्म हुआ । उनके पिता का नाम फ्रैंक और माता का नाम इसाबेल हॉकिग थे। यह एक महज संयोग ही है कि एक महान वैज्ञानिक गैलेलियों और स्टीफन हॉकिग का जन्मदिन एक ही है. स्टीफन हॉकिग बचपन में बिल्कुल स्वस्थ थें । स्टीफन हॉकिग के परिवार की आथिर्क हालात ठीक न होते हुए भी स्टीफन हॉकिग के पिता फ्रैंक एवं माता दोनों ने ही ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से अपनी शिक्षा अर्जित की थी। फ्रैंक ने आयुविज्ञान की शिक्षा प्राप्त की और इसाबेल ने दर्शनशास्त्र, राजनीति और अर्थशास्त्र का अध्ययन किया वे दोनो द्वितीय विश्व युद्व के आरंभ होने के बाद एक चिकित्सा अनुसंधान में मिले जहॉं इसाबेल एक सचिव के पद पर कार्य करती थी। फ्रैंक एक चिकित्सा शोधकर्ता एंव उनकी माता इसाबेल सचिव के पद पर कार्य करती थी। स्टीफन का परिवार पहले लंदन के हाईगेट शहर में रहता था परंतु द्वितीय विश्व युद्व के कारण हाईगेट शहर पर हमेशा बमबारी की घटना होती थी. स्टीफन का परिवार हाईगेट शहर को छोड कर लंदन के ऑक्सफोर्ड शहर में रहने लगा, परंतु उनके परिवार की आथिर्क अवस्था ठीक नही थी। फ्रैंक ने एक बच्चे को गोद लिया था जिसका नाम था एडवर्ड, स्टीफन की दो बहनें थी जिनका नाम था शिल्पा और मेरी। स्टीफन हॉकिग अपने परिवार में सबसे बडे थे । स्टीफन का परिवार गरीब था पंरतु स्टीफन के माता पिता पढाई का महत्व जानते थे। स्टीफन की प्रांरभिक शिक्षा लंदन के प्रख्यात पब्लिक स्कूल संत एलबंस से प्रारंभ हुई. स्टीफन ने अंडर स्नातक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से किया. स्कूल के दिनों से ही स्टीफन को गणित में खास लगाव था वे हमेशा से गणितिय समीकरण हल करते थे। उन्होंने बचपन में ही पुराने इलेक्टॉनिक उपकरणों के हिस्सो से कंप्यूटर बना दिया था । स्टीफन हॉकिंग ने यूनिवर्सिटी कॉलेज, ऑक्सफोर्ड में अपनी विश्वविद्‌यालय की शिक्षा 1959 में मात्र 17 बर्ष की आयु में प्रांरभ की। स्टीफन हॉकिग को कॉलेज की पढ़ाई में बिल्कुल भी मन नहीं लगता था। उन्हें अकादमिक कार्य बेहद ही खराब लगते थे । पहले के कुछ महीनों में उन्हें कालेज और पढाई में कोई भी दिल्चस्पी नही थी। वह हमेशा अलग और अकेला रहना पंसद करते थे । कुछ दोस्तों और शिक्षकों के कहने पर वह सबके के साथ घुलने मिलने का प्रयास करने लगे, उन्होने अपने आप को बदलने का प्रयास किया. इसके लिए उन्होनें कॉलेज बोट क्लब, और विनोदी कॉलेज के सदस्य केरूप में विकसित किया । उन्हें पढाई में खास दिल्चस्पी नहीं होने से औसत से भी कम अंक प्राप्त होते थे । कॉलेज के तीसरे साल में उनकी मुलाकात एक प्रोफेसर 'जंयत नार्लीकर' से हुयी। जंयत नार्लीकर ने स्टीफन हॉकिग की गणित के रूचि के बारे में ध्यान से सुना. स्टीफन हॉकिग ने अध्ययन में गणित का चुनाव अपने पिता के कहने पर नहीं किया था क्योंकि ऊस समय गणित के अध्ययन करने

पर कोई नौकरी नहीं मिलती थी इसलिए उनके पिता ने उनको अन्य विज्ञान लेने की सलाह दी थी । जब जंयत नार्लीकार ने स्टीफन के भविष्य के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि वे कैंब्रिज से स्नातक करना चाहते है। लेकिन उस समय कैंब्रिज में अध्ययन के लिए प्रथम श्रेणी से पास होना अति आवश्यक था । स्टीफन ने पहले तीन सालों में कभी भी खास पढाई नहीं की थी, वे हमेशा से क्लास में बैठकर नोट्स बनाते थे और उसे किताबों से मिलाते थे वे कभी भी किताबों को नहीं पढ़ते थे, वे हमेशा से किताबों की कमियों को ढूंढ़ा करते थे । ऑक्सफोर्ड के अंतिम वर्ष मे स्टीफन ने बहुत मन से मेहनत की, वे ऑक्सफोर्ड के अंतिम वर्षों में रात - रात भर नहीं सोते थे, वे हमेशा सोचते रहते थे कि कहीं प्रश्न पत्र उनके अनुरूप नही आया तो क्या करेंगे। स्टीफन हॉकिंग की मेहनत रंग लायी वे ऑनर्स में प्रथम श्रेणी से पास कर गये ।

स्टीफन बीए पास करने के बाद अपने दोस्तों के साथ ईरान की यात्रा पर गये । अक्टूबर 1962 में कैंब्रिज में अपना स्नातक का काम शुरू किया। उन्होंने कास्मोलॉजी बिषय का चयन किया था जो गणित एंव भौतिक विषय का मिश्रण है ।

कैंब्रिज का पहला वर्ष ही स्टीफन हाँकिग के लिए बहुत मुश्किलों से भरा हुआ था । उन्हें अपने दैनिक कार्य करने में असुविधा सी होने लगी, उन्हें ठंड के महीनों में अपने जूते के लेस बांधने में भी परेशानी होने लगी. एक बार जब स्टीफन छुट्टी में घर आये हुए थे तो उन्हें चक्कर आने लगा और वे बेहोश होकर गिर पड़े । उनके पिता ने घरेलू डॉक्टर से दिखाया, उन्हें लगा शायद शारीरिक कमजोरी के कारण ऐसा हुआ है, परंतु यही बार- बार होने लगा तो विशेषज्ञ के पास दिखाया और विभिन्न जांचों से यह पता चला कि उन्हे 'मोटर न्यूरॉन' नामक बीमारी है। डॉक्टरों ने यह बताया कि इस बीमारी में नसों की हालात लगातार कमजोर होती जाती है और शरीर के सारे हिस्से धीरे धीरे कार्य करना बंद कर देते हैं, अंत में श्वसन तंत्र भी कार्य करना बंद कर देता है । यह एक लाइलाज बीमारी है इस बीमारी में इंसान का दिमाग ठीक रहता है पंरतु इससे जुडी तंत्रिकाएं कार्य करना बंद कर देती है। डॉक्टर ने स्टीफन हॉकिग से कहा था कि वे अब अंतिम 2 वर्षों तक जीवित रहेंगें. जब स्टीफन हॉकिग के कानों मे यह बात पड़ी तो वे सोचने लगे कि यह बीमारी उन्हें ही क्यों हुई, इसके कारणों के बारे में सोचने लगें, स्टीफन ने अपने घरवालों को बोला कि वे 2 वर्ष नहीं 20 वर्ष नही पुरे 40 बर्ष तक जीयेंगे। उस समय उनकी उम्र 21 वर्ष की थी। धीरे धीरे स्टीफन हॉकिग अवसाद से ग्रस्त हो गए। वे सोचने लगे कि अब मैं ज्यादा बच नहीं पाऊँगा तो पढ़ के क्या फायदा, यह डिग्री किस काम की, इन सब बातों को सोचते हुए स्टीफन हॉकिग शराब पीने लगे, बहुत ही दुखी रहने लगे । डॉक्टर की सलाह पर और अपनी इच्छा शक्ति से वे फिर से पढ़ाई करने लगें। मोटर न्यूरॉन रोग के कारण स्टीफन हॉकिग की हालत धीरे धीरे खराब होने लगी, उन्हें कहीं आने जानें में कठिनाई होने लगी, उनके द्वारा दिये जाने वाले भाषण अस्पष्ट थे। स्टीफन हॉकिग बैसाखी के सहारे चलते थे उन पर विकंलागता हावी हो गयी थी, परंतु दो वर्ष के बाद भी उनका रोग बिल्कुल थम सा गया वे दो वर्षों के बाद भी जीवित थें। वे लगातर अपने भौतिक के अघ्ययन में लगे रहते थे. जनवरी 1962 में स्टीफन हॉकिग की मुलाकात जेंन वाइल्ड से हुई, दोनों एक दूसरे को पंसद करने लगे। जेन वाइल्ड ने सारी सच्चाई जानने के बाद भी उनसे विवाह किया। जेंन वाइल्ड हमेशा स्टीफन की देखभाल में समय व्यतीत करती थी। जून 1964 में हॉकिग ने बिग बैंग सिद्वांत से अपनी प्रतिभा स्थापित की. स्टीफन हॉकिग केद्वारा दिये गये ब्लैक होल के सिद्वांत को पूरी दुनिया ने स्वीकार किया और पूरी दुनिया में उसे लागू किया गया । 1966 में हॉकिग ने ब्लैक होल और बिग बैंग सिद्वांत पर अपनी थिसिस लिखी । हॉकिग ने गोन्विले और कैयस कॉलेज से एक रिसर्च फेलोशिप किया. समय के साथ स्टीफन हॉकिग का रिसर्च आगे बढा परंतु उनका शरीर उनका साथ छोड़ता चला गया, उनके लिए एक व्हील चेयर का निर्माण किया गया जो तकनीकी रूप से काफी संपन्न थी. उन्होंने हमेशा से अपनी बीमारी को एक वरदान में रूप में देखा है. वे

हमेशा कहते है कि इस बीमारी के कारण ही उनका सारा समय विज्ञान को समर्पित हुआ है। इस दौरान उनके दौरान लिखी गई किताव 'अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफटाइम', 1988 साल में बेस्ट सेलर है।यह किताब समय के संक्षिप्त इतिहास को दिखाती है। उन्हें वर्ष 1978 मे अल्बर्ट आइंस्टीन पुरस्कार,1988 में वॉल्फ प्राइज, 1989 प्रिस ऑफ ऑस्टुरियस अवार्ड, 2006 में कोप्ले मेंडल, 2009 में प्रेसिंडेशियल मेडल ऑफ फ्रीडम और 2012 में विशिष्ट मूलभूत भौतिकी पुरस्कार प्रदान किया गया। इस दौरान उनके तीन बच्चे हुए । 1995 में उनकी पहली पत्नी ने उनको तलाक दे दिया, माना जाता है कि उनकी पहली पत्नी धार्मिक थी जबकि स्टीफन हमेशा भगवान को चुनौती देते थे । स्टीफन ने भगवान के अस्तित्व को कभी भी स्वीकार नहीं किया। इसके बाद स्टीफन हॉकिग की दूसरी शादी इलियाना मैसेज से हुई परंतु 2006 मे इलियान मैसेज से भी उनका तलाक हो गया। स्टीफन हॉकिग का आई क्यू 160 है जो किसी जीनियस से कहीं ज्यादा है। एक ऐसा इंसान जिसका अपनी सभी मांशपेशियों से नियंत्र्ण खो चुका हैं, वह अपने गाल के मांसपेशियों के जरिये अपने चश्मे पर लगे सेंसर को कप्यूटर से जोडकर बातचीत करता है। जब उसने अपने जन्म के 70 वें जन्मदिन पर यह कहा कि मैं अभी और जीना चाहता हूँ तो पूरी दुनिया इस बेजुबान, शिथिल शरीर को देखकर अजरज में पड गयी। उस इंसान का नाम है स्टीफन हॉकिग ।

प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती ।

— सुभाषचंद्र बोस

आदमी

श्री विजय शिंदे
एम.टी.एस.
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

खुशियां कम और अरमान बहुत है
जिसे भी देखिए यहां हैरान बहुत है ।

करीब से देखा तो है रेत का घर
दूर से मगर उसकी शान बहुत है ।

कहते हैं सच का कोई सानी नहीं है
आज तो झूठ की आन बान बहुत है ।

मुश्किल से मिलता है शहर में आदमी
यूं तो कहने को इंसान बहुत है ।

वक्त पे ना पहचाने कोई ये अलग बात है
वैसे तो शहर में अपनी पहचान बहुत है ।

'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।'

— महात्मा गाँधी

कोलकाता – एक पहचान

श्री चन्दन
उच्च श्रेणी लिपिक
भारतीय खान ब्यूरो, कोलकाता

भारत के महानगरों में से एक महानगर कोलकाता का एक विशेष महत्व है । कोलकाता का इतिहास बहुत ही गौरवपूर्ण रहा है जो आजादी के पहले के कई पहलुओं को दिखाता है। कोलकाता बंगाल की खाडी के तट से 180 किलोमीटर दूर हुगली नदी के किनारे बसा हुआ है। इसका पूर्व नाम कलकत्ता है जो पश्चिम बंगाल की राजधानी है। यह भारत का सबसे बड़ा दूसरा महानगर है, कोलकाता में भारत का पाँचवा सबसे बड़ा बंदरगाह है। कोलकाता को 'पूर्वी भारत का द्वार भी कहा जाता है। यह रेलमार्ग, वायुमार्ग तथा सड़क मार्ग द्वारा देश के प्राय सभी भागों से जुड़ा है । कोलकाता को प्रमुख यातायात का केंद्र, विस्तृत बाजार, वितरण केंद्र, शिक्षा केंद्र, औद्यौगिक केंद्र तथा व्यापार का केंद्र माना जाता है । इस शहर का इतिहास बहुत ही पुराना है, सम्राट अकबर के चुंगी दस्तावेजों और पंद्रहवीं शताब्दी के महान कवि बिप्रदास की कविताओं में इस शहर के नाम का उल्लेख बार - बार होता है । महाभारत जैसे पुराणों में भी बंगाल के राजाओं का नाम है जो कौरव सेना की तरफ से युद्ध में थे । ऐतिहासिक रूप से कोलकाता ने भारत के स्वाधीनता आंदोलन के हर चरण में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अलावा कई राजनैतिक एवं सांस्कृतिक, इत्यादि की स्थापना का गौरव इस शहर को प्राप्त है । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अध्यक्ष सुरेन्द्रनाथ बनर्जी भी कोलकाता के थे । 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में बांग्ला साहित्यकार बंकिमचंद्र चटर्जी का आनंदमठ से भारत का राष्ट्रगीत वंदे मातरम लिया गया है । रविंद्रनाथ टैगोर भी कोलकाता से आते हैं । अंग्रेजों के समय कोलकाता भारत की राजधानी थी, इसे अंग्रेज महलों का शहर, पूरब का मोती के नाम से भी जाना जाता था । कोलकाता का जन यातायात कोलकाता उपनगरीय रेलवे, कोलकाता मेट्रो, ट्राम और बसों द्वारा उपलब्ध कराई जाती है । कोलकाता का मेट्रो का इतिहास सबसे पुराना भूमिगत यातायात प्रणाली है । कोलकाता एक मात्र ऐसा शहर है जहाँ ट्राम सेवा उपल्बध है, यह सेवा कोलकाता ट्रामवेज कंपनी द्वारा दी जाती है । हावड़ा ब्रिज, इसे रविन्द्र सेतु से भी जाना जाता है जो हावड़ा को कोलकाता से जोड़ता है, सन् 1862 ई. में बंगाल सरकार ने ईस्ट इंडिया रेलवे कंपनी के प्रमुख अभियंता जार्जटर्नबुल को इसको बनाने का आदेश दिया. इसके निर्माण में 26,500 टन स्टील की खपत हुई, इस ब्रिज का डिजाइन मिस्टर वाल्टन और मिस रेंडेल ने बनायी थी ।

विक्टोरिया मेमोरियल, यह पूरी तरह से मार्बल से बना हुआ एक महलनुमा आकृति है, इसका निर्माण 1906 से 1921 के बीच हुआ था । यह भवन महारानी विक्टोरिया की याद में बनवाया गया था। इसका कुल बजट 1 करोड़ पाँच लाख थी । विक्टोरिया मेमोरियल में कुल 25 गैलरी हैं, रॉयल गैलरी, नेशनल लीडर गैलरी, पोट्रेट गैलरी, सेंट्रल हॉल, स्कलाप्चर गैलरी आदि प्रमुख है ।

सन् 1864 मेंकोलकाता में एक क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण किया गया जिसका नाम इडेन गार्डन रखा गया । इस मैदान का नाम ब्रिटिश भारत के गवर्नर जनरल लार्ड ऑकलैंड की बहन ईडन के नाम पर रखा गया है । यह स्टेडियम बहुत बड़ा है इसकी क्षमता लगभग 80,000 हजार लोगों की है, इसमें पहला टेस्ट मैच सन् 1934 में और पहला एकदिवसीय मैच 1987 में खेला गया था ।

दक्षिणेश्वर हिंदुओं की देवी काली का प्राचीन मंदिर है जिसे रानी राष्मनी ने बनवाया था । यह मंदिर बंगाल की वास्तुकला पर आधारित है इसका मुख्य द्वार दक्षिण की तरफ है इसके साथ ये मंदिर तीन माले का है। इस मंदिर मे स्थापित माँ काली का नाम मॉ भवतारिणी है । सन् 1855 ई. में इस मंदिर में रामकृष्ण का आगमन हुआ । बेलूर मठ स्वामी विवेकानंद द्वारा स्थापित मठ एंव मिशन का मुख्यालय है यह हुगली नदी के तट पर स्थित है । इसकी विश्व में कई शाखाएं बनी, जिसमें भारत में 141, 14 बांग्लादेश में, 13 अमेरिका में, 2 रूस में, 1-1 ब्राजील, अर्जेंटीना, कनाडा आदि देशों में स्थित है।

साइंस सिटीकोलकाता का विज्ञान केंद्रित म्यूजियम है । यह 1 जुलाई, 1997 को बनकर तैयार हुआ इसमें कई तरह के वैज्ञानिक चीजों और तथ्यों को बहुत ही अच्छे तरीके से प्रस्तुत किया गया है ।

कालीघाट हमेशा से कोलकाता का अध्यात्मक केंद्र रहा है यह कालीघाट माँ काली का मंदिर है, यहां लोग देवी - देवताओं में खूब आस्था रखते है । भारत के 51 शक्तिपीठों में कालीघाट का भी एक स्थान रहा है इसका इतिहास लगभग 200 वर्ष पुराना है ।

अलीपुर चिड़ियाघर सर्वप्रथम मई 1876 में खुला था. यह चिड़ियाघर 46.5 एकड़ में फैला है ।

नेशनल लाइब्रेरी का पुराना नाम कलकता पब्लिक लाइब्रेरी था, यह एक गैर सरकारी संस्थान था। इसमें लगभग 22,70,000 किताबें मौजूद है, इसके रिडिग रूम का नाम भाषा भवन है जिसमें लगभग 500 आदमी एक साथ बैठ सकते है।

बिड़ला प्लेनेटेरियम कोलकाता के एक महत्वपूर्ण स्थलों में से एक है । इसे 2 जुलाई 1963 को भारत के तात्कालिक प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के हाथों हुई थी ।

कोलकता या बंगाल का जिक्र हो और मिठाई का जिक्र न हो ऐसा हो ही नहीं हो सकता है। कोलकाता में विभिन्न प्रकार की मिठाई पायी जाती है। कोलकाता का मिष्ठी दही हो या कोलर बोरा, संदेश, मालपुआ, छन्ना खीर, पंतुआ, राजभोग, लंछा, छाना जलेबी, चमचम, जयनगर मोया, पाटीसपटा, सीताभोग, मेहिदाना, खिर कदम, सरभजा, और बंगाली रसगुल्ला की बात न हो ऐसा तो हो ही नहीं सकता । कोलकाता में मिठाई की कुछ दुकाने बहुत ही फेमस है । बालाराम मलिक और राधारमन मलिक की दुकान जो पदमपुकर रोड, भवानीपुर में स्थित हैं यह अपने संदेश के लिए फेमस हैं। द्वारिका यह विधान सरनी, श्यामबजार में स्थित है यह अपने कछागोला के लिए फेमस है । के. सी. दास यह दुकान कोलकाता के हार्ट ऑफ सिटी, चेतला रोड, रासबिहारी एवेन्यू, कालीघाट में स्थित है यह अपने स्पंज रसगुल्ले और लंच्छा के लिए फेमस है । कोलकाता अपने बेहतरीन पार्कों के लिए भी बहुत फेमस है। कोलकाता में इको पार्क, निक्को पार्क, आदि बहुत ही खूबसूरत है । कोलकाता की दुर्गा पूजा पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है, 2-3 महीने पहले से इसकी तैयारी जोर शोर से शुरू हो जाती है । कोलकाता में यह त्योहार बहुत ही जश्न के साथ मनाया जाता है। कोलकाता की काली पूजा लक्खी पूजा आदि त्योहार बहुत ही तैयारी के साथ मनाया जाता है । यहां के लोगों को मछली से बहुत ही खास लगाव है। कोलकाता के लोग प्रतिदिन मछली खाना पसंद करते हैं ।

कोलकाता अपने आप में एक अनूठा शहर है जो अपने ब्रिटिश काल के भवनों, अच्छी - अच्छी मिठाईयाँ, बोल चाल की भाषा, द्वारा अपनी पहचान हमेशा से बनाये हुए हैं । हिंदी के बाद बंगाली सबसे ज्यादा बोली जानी बाली भाषा है। यहां लोगों का पहनावा, हमेशा चाय पर चर्चा आदि चीजें अपने आप में अनूठी है, जिसमें हमेशा राजनीति चर्चा का विषय रहती है। कोलकाता पूरी तरह एक खुले विचारों वाली जगह है जहाँ हर धर्म के लोग पूरी आजादी से रह सकते हैं ।

खेल

श्री मानू माजी, स्टाफ कार ड्राईवर
भारतीय खान ब्यूरो, कोलकाता

हमारे देश में एक पुरानी कहावत है, खेलोगे- कूदोगे, होगे खराब, पढोगे- लिखोगे, बनोगे नवाब। परंतु आज यह मान्यता बदल चुकी है, खेल कूद को आजकल शिक्षा का एक अनिवार्य अंग मानकर महत्व दिया जाता है। आज लोग खेलों का आदर करने लगे हैं। कुछ खिलाड़ियों को बहुत ही आदर सम्मान दिया जाता है। हमारे शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले इस खेल कूद को जीवन में महत्व दिया जाने लगा है। खेल हमारे शरीर को स्वस्थ रखता है, रक्त संचार को बढ़ाता है। खेल के समय पसीना निकलने से हमारे शरीर का बेकार तत्व बाहर निकाल जाता है यह हमारे शरीर की पाचन क्रिया तथा शरीर को चुस्त और फुर्तीला बनाए रखता है। बच्चे के लिए खेल और भोजन का महत्व एक समान हो गया है। बच्चे के शारीरिक विकास की नींव तो खेल से जुड़ी है साथ में बौद्धिक और भावनत्मक विकास के लिए भी आवश्यक है।

विभिन्न देशों ने खेल के महत्व को समझा और खेल दिवस हर देश में मनाया जाता है। अलग अलग देश में अलग - अलग दिन खेल दिवस मनाया जाता है. भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस 29 अगस्त को मनाया जाता है। भारत में हर आयु के लोग पूरी जोश और उत्साह के साथ खेल दिवस मनाते है। मैराथन, कबड्डी, बास्केटबॉल, हॉकी आदि तरह - तरह के खेल का आयोजन किया जाता है। यह दिन न केवल मनोरंजन का काम करता है बल्कि एक व्यक्ति की खेल के प्रति जागरूकता को भी दर्शाता है. इसमें युवा पीढी की प्रतिभा को पहचानने के लिए तरह तरह की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस का इतिहास बहुत पुराना है, सबसे पहले 29 अगस्त 1905 को राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया गया था। भारत में महान खिलाड़ी ध्यानचंद जो हॉकी में सबसे महान खिलाड़ी माने जाते हैं की जन्मतिथि पर यह खेल दिवस मनाया जाता है। 29 अगस्त 1905 में उत्तर प्रदेश के इलहाबाद जिले में उनका जन्म हुआ था। उन्होंने भारत को 1928, 1932 और 1936 में हॉकी में भारत को तीन ओलंपिक स्वर्ण पदक दिलवाया था। उन्हें हॉकी की दुनिया में 'विजार्ड' की उपाधि दी जाती है। उन्होंने अपने अंतर्राष्ट्रीय कैरियर के दौरान 400 से अधिक गोल किए। भारत सरकार में 1956 में भारत के उच्चतम सम्मान में से एक पद्मभूषण से सम्मानित किया। हर साल 29 अगस्त को भारत में खेल दिवस का आयोजन होता है जिसमें भारतीय खिलाड़ियों को विशेष पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। अर्जुन पुरस्कार, राजीव गांधी पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार जैसे प्रसिद्ध पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति महोदय के द्वारा साल के सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को दिया जाता है।

मलेशिया के राष्ट्रीय खेल दिवस को 'हरि सुकन नेगारा' के द्वारा भी संबोधित किया जाता है, जो हर साल के अक्टूबर महीने के दूसरे सप्ताह में आयोजित किया जाता है। मलेशिया का पहला राष्ट्रीय खेल दिवस वर्ष 2015 में पहली बार आयोजित किया गया। मलेशिया के लोगों को जागरूक करने के लिए मैराथन और कई किलोमीटर की दौड़ आदि चीजों से

लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया जाता है।

जापान का राष्ट्रीय स्वास्थ्य और खेल दिवस हर साल के 22 अक्टूबर को मनाया जाता है। जापान में खेल दिवस का वर्ष 1966 से मनाया जाता है। जापान में 1964 में टोक्यों शहर ग्रीष्मकालीन ओलपिंक आयोजित किया गया था। इस समय के बाद से ही जापान की खेल समिति खेल रूचि बढ़ाने के लिए एवं खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के एक साथ मिलकर कार्य किये हैं।

ईरान में खेल दिवस को हर साल के 17 अक्टूबर के दिन शारीरिक शिक्षा और खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। ईरान जैसे देश में यह कोई एक दिन का कार्यक्रम नही होता है यह खेल दिवस पूरे एक सप्ताह का मनाया जाता है। उनका मुख्य लक्ष्य व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में व्यायाम, शारीरिक गतिविधियों के महत्व को दिखाना है। ईरान की मीडिया के माध्यम से इसे बेहतर बुनियादी ढांचे के लिए सुविधायें को प्रयोजित करने के लिए एक दृष्टिकोण को बढ़ाया जाता है। ईरान में बहुराष्ट्रीय कंपनी प्रतिभाशाली युवाओं के लिए छात्रवृत्ति उपलब्ध कराती है।

खेल स्वस्थ और बीमारी मुक्त लंबी आयु जीने का एक तरीका है और विभिन्न देशों में राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन कई प्लेटोफामों में से एक है जो पूरे देश में एक संदेश फैलाने का कार्य करता है। खेल युवाओं में मित्रता की भावना को पैदा करता है और उनमें एकता की भावना का विकास होता है। यह न केवल व्यक्ति के दिमाग को तेज करता है बल्कि मन को मजबूत और सबल बनाता है।

'मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।'

— विनोबा भावे

नम्र अभिवादन

गौरव शिंदे
पुत्र श्री विजय शिंदे
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

है उनके लाखों उपकार हमपर उन्हीं से सब पाया है
जिसके कलम की स्याही में संविधान समाया है
भारत तो होता पर समृद्ध न होता
बाबा साहेब न होते तो संविधान न होता ।
मानव को मानव से मिलाया अवगत कराया सच्चाई से
मुश्किलों की धुप में छांव पाई भीम की अमराई से
हर शुद्र वर्ग अपने अधिकार के लिए रोता
बाबा साहेब न होते तो संविधान न होता ।
आपकी शक्ति को बाबा जमाना जानता है
ज्ञान भी आपके दीपक से रोशनी मांगता है
आप ना जागते तो समाज गहरी नींद में जा सोता
बाबा साहेब न होते तो संविधान न होता ।
आपके आने से लोगों ने दिल से अंधविश्वास निकाल फेंक दिया
बड़े - बड़े विद्वानों ने डॉ. साहेब के सामने घूंटने टेक दिए
हम कभी चल ना पाते अगर तथागत का सहारा ना होता
बाबा साहेब न होते तो संविधान न होता ।
आकाश नीला है नीला है समुंदर का पानी
उससे भी नीला है मेरे भीम की निशानी
लोग आग बुझाते हैं पानी से भीम ने तो आग लगाई है पानी में
बाबा साहेब न होते तो संविधान न होता ।
भारत के शिल्पकार तुम्हें हमारा प्रणाम है
शूद्रों को अपनाने वाले पर लाखों सलाम है
आप ना करते उपचार तो समाज अपंग ही रह जाता
बाबा साहेब न होते तो संविधान न होता ।

मोबाइल बैंकिंग - पॉकेट में समाया बैंक

श्री मोहम्मद कासिम
कनिष्ठ सर्वेयर
भारतीय खान ब्यूरो, रांची

'आर्थिक लेन देन से लेकर खाते संबंधी छोटी मोटी जरूरतों के लिए बैंक में चक्कर लगाना, समय, मेहनत व धन तीनों की बरबादी सा लगता है। ऐसे में मोबाइल बैंकिंग किस तरह बैंक से जुड़े कामकाज घर बैठे चुटकियों में करने में मदद करती है।'

क्या है मोबाइल बैंकिंग

मोबाइल बैंकिंग एक ऐसी सेवा है जो आपके मोबाइल फोन पर, बिना कॉल किए, एसएमएस सुविधा के प्रयोग द्वारा, बैंकिंग ट्रांजेक्शन उपलब्ध कराती है। यह एक सुरक्षित भुगतान माध्यम है जिसमें ग्राहक को डेबिट कार्ड संख्या या पिन जैसी सूचनाओं को बांटने संबंधी समझौता करना नहीं पड़ता। इस्तेमाल करने में आसान और कभी भी वह कहीं भी ले जाने की सुविधा के चलते युवाओं में खासतौर पर इसे काफी पसंद किया जा रहा है। सरल शब्दों में समझें तो मोबाइल बैंकिंग का सामान्य सा मतलब यह हुआ कि आप का अकाउंट हमेशा आपके साथ गतिमान रहता है। आरबीआई के मुताबिक, कुल 58.9 करोड़ खातों में 2.2 करोड़ खाताधारक मोबाइल बैंकिंग ऐप का इस्तेमाल कर रहे हैं।

कैसे मिले सुविधा

मोबाइल बैंकिंग सुविधा का पात्र हर वह शख्स है जिसका बैंक में खाता है। सुविधा को हासिल करने के लिए एक प्रोसैस को पूरा करना होता है। खाता खोलने के दौरान फॉर्म में एक कॉलम होता है जिसमें इस सुविधा को लेने या ना लेने का विकल्प होता है। इसके अलावा पहले से खाता खुला है और अभी तक इस सुविधा का इस्तेमाल नहीं कर रहें हैं तो आप संयुक्त प्रत्यक्ष बैंकिंग चैनल फॉर्म से मोबाइल बैंकिंग के लिए आवेदन कर सकते हैं।

ज़्यादातर बैंक अपनी वेबसाइट्स में फॉर्म डाऊनलोड करने का विकल्प भी देते हैं या फिर विक्रय प्रतिनिधि से मंगा सकते हैं। फिर इस फॉर्म को भरकर अपनी निकटतम शाखा में जमा कर दें। यदि आपका पहले से ही बैंक में खाता है और यदि आपने नेटबैंकिंग सेवाओं के लिए पंजीकरण करवाया है तो आप नेटबैंकिंग के अंतर्गत उपलब्ध मोबाइल बैंकिंग रजिस्ट्रेशन विकल्प का उपयोग करके पंजीकरण करवा सकते हैं।

यह तो रही बैंक की बात। बैंक से यह सर्विस ऐक्टिवेट होने के बाद मोबाइल बैंकिंग का फायदा लेने के लिए आप के पास भी एक मल्टिमेडिया फोन होना जरूरी है। फोन में संबन्धित बैंक का सॉफ्टवेयर या मोबाइल ऐप डाऊनलोड कर उस में एक यूजर आईडी बनाने के बाद आप इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। वैसे तो यह सुविधा बैंक मुफ्त में मुहैया कराते हैं लेकिन कई बार सेल्यूलर सेवप्रदाता कुछ वैल्यू एडेड सर्विस और इंटरनेट का प्रभार वसूलते हैं।

ऐसे करें एक्टिवेट / लॉगइन

एक बार बैंक से मोबाइल बैंकिंग सर्विस एक्टिवेट होने पर कैसे लॉगइन करें, यह जानना जरूरी है। एक बैंक की वैबसाइट के मुताबिक, मोबाइल बैंकिंग ऐप्लीकेशन लॉगइन करने की प्रक्रिया से पहले यह जाँचें कि आपका मोबाइल उस ऐप को सपोर्ट कर रहा है या नहीं। उसके बाद अपने हैंडसेट से मोबाइल ऐप्लीकेशन फ़ाइल चुनकर खोलने के क्लिक कर ऐप्लीकेशन शुरू करें। फस्टटाइम यूजर चुनें तथा ओके विकल्प पर क्लिक करें। पहली बार लॉगइन कर रहें हों तो

कृपया एसएमएस द्वारा प्राप्त मोबाइल ऐप्लीकेशन पासवर्ड एंटर करें। फिर एक गोपनीय प्रश्न का गोपनीय उत्तर दर्ज कर नया मोबाइल ऐप्लीकेशन पासवर्ड एंटर करें। सफल सक्रियता के बाद पंजीकरण के दौरान एसएमएस से प्राप्त कोड ले कर सक्रियता संबंधी कोड बदलना चाहिए, और हां, लॉगइन पासवर्ड तथा एम पिन (मोबाइल पिन) दोनों अलग - अलग रखें। इस तरह वापस होमपेज पर जा कर नए पासवर्ड के साथ लॉगइन करें।

क्या क्या हैं फायदे

मोबाइल बैंकिंग के फायदे इतने हैं कि आप इस के जरिये बैंक को अपनी पॉकेट में लेकर कहीं भी जा सकते हैं। अब तक बिजली का बिल हो या मोबाइल या केबल का कितनी लंबी लाइनें लगती थीं, सब जानते हैं। इसी तरह रेल टिकट बुक कराने के लिए सुबह-सुबह टिकट खिड़की की मारामारी भी और सिनेमाघरों में होती ब्लैक टिकटिंग, इन सबका हल मोबाइल बैंकिंग के पास है। इस तकनीक के जरिये आप मोबाइल टॉपअप, रेलवे टिकट, शॉपिंग, इन्शोरेंस, क्रेडिट कार्ड पेमेंट, चेकबुक रिक्वेस्ट जैसी ना जाने कितनी सुविधाएं पा सकते हैं। डीटीएच रिचार्ज, बिल पेमेंट, किसी भी समय राशि के ट्रांजेक्शन पिछले 5 ट्रांजेक्शन की जानकारी और और इसकी मदद से एक बार में 50 हजार रुपये तक का फंड ट्रांसफर हो सकता है। इस के अलावा चैक पर भुगतान रोक रखना, चैक स्टेटस पूछताछ, बिल प्रेजेंटमेंट, सावधि जमा पूछताछ जैसी कई बैंकिंग सेवाएँ भी घर बैठे मिलती है।

हर बैंक की मोबाइल बैंकिंग सुविधाएं एक दूसरे से थोड़ी बहुत अलहदा हो सकती है। मसलन, ऐक्सिस बैंक ने मल्टी सोशल पेमेंट ऐप पिंगपे पेश किया, जो ग्राहकों को फेसबुक, वाट्सऐप, ट्विटर, एसएमएस या ई-मेल की संपर्क की सूची में मौजूद इंसान को रकम भेजने की सुविधा देता है। इसी तरह कोटक महिंद्रा बैंक ने केपे और आईसीआईसीआई बैंक ने पोकेट्स ऐप के जरिये ऐसी पेशकश की है।

साइबर शातिरों से बच कर

जहाँ तकनीक आती है वहाँ उसे भेदने वाले साइबर चोर भी आ धमकते हैं। आजकल ऑनलाइन धोखाधड़ी के इतने मामले आ रहे हैं कि सरकार को कई राज्यों में साइबर सैल खोलनी पड़ी है। मोबाइल बैंकिंग में हैकर अपना शातिरपन दिखाकर आपका पैसा या सुरक्षित पासवर्ड भेद सकते हैं। इसलिए सुरक्षा और सावधानी बेहद जरूरी है।

आमतौर पर मोबाइल बैंकिंग में धोखाधड़ी का मुख्य स्रोत होता है यूजर नाम व पासवर्ड की हैकिंग, इसलिए किसी भी तरह के ट्रांजेक्शन का संदेश आने पर न सिर्फ अपना अकाउंट चेक करें, बल्कि एक समय अंतराल में पासवर्ड भी बदलतें रहें।

इतना काफी नहीं है, कई बार चोरी आप के अपने ही करते हैं, इसलिए मोबाइल का भी पासवर्ड लॉक रखें। फोन गुम होने या चोरी होने की हालत में आप के फोन से जरूरी कोड चोरी तो नहीं होंगे इस तरह से। भरोसेमंद वैबसाइट पर क्लिक न करने में जानकारी दूसरी सुरक्षित वैबसाइट पर चली जाती है। जिससे हैकर मैलीशियस ऐप्स प्लांट कर देते हैं। इसलिए साइट भरोसेमंद हो, यह जरूर परखें। भले ही संबन्धित बैंक अपने मोबाइल बैंकिंग साइट को हर तरह से मजबूत और सुरक्षित होने का दावा करते हों लेकिन एहतियात के तौर पर फोन में मलवायेर से बचाने वाले सॉफ्टवेयर जरूर इन्सटौल करें। किसी भी तरह की ऑनलाइन बैंकिंग एक्टिविटी से जुड़े पासवर्ड बहुत सामान्य नहीं होनी चाहिए।

मसलन, अपना नाम, जन्मदिन की तारीख या वर्तमान साल के अंक आदि क्योंकि ऐसे पासवर्ड जल्दी क्रैक हो जाते हैं। टैक्स्ट मैसेज के द्वारा बैंकिंग संबंधी कोई भी अहम या गोपनीय सूचना, मसलन, अकाउंट नंबर, पासवर्ड, पैनकार्ड और जन्मतिथि आदि का खुलासा न करें। इस के अलावा लगातार फायरबाल व सेफ्टी सॉफ्टवेयर को अपडेट करना, रोजाना ब्राउजिंग हिस्ट्री को डिलीट करना जैसी सावधानी रखी जाए

तो मोबाइल बैंकिंग में होने वाली धोखाधड़ी से बचा जा सकता है।

एक अनुमान के मुताबिक, देश की इतनी बड़ी आबादी की बैंकिंग जरूरतों को बैंक शाखा के जरिये पूरा करना मुश्किल है। ऐसे में मोबाइल बैंकिंग भविष्य के लिहाज से उम्दा विकल्प बन कर उभरा है।

कुछ साल पहले तक बैंक खुलने से पहले खाताधारकों की लंबी लाइन लग जाती थी। सारा काम मैन्यूअल होने के चलते या फिर बैंक बंद रहने या सरकारी अवकाश के चलते खाताधारकों का समय बर्बाद होता था। मोबाइल बैंकिंग ने इस परेशानी को दूर कर दिया है। बैंक अब 24 घंटे आपकी मुट्ठी में है। लिहाजा, मोबाइल बैंकिंग से अगर आप अभी तक नहीं जुड़े हैं तो अपना समय व मेहनत जाया कर रहें हैं।

कुछ सुरक्षा टिप्स

- यूजरनेम और पासवर्ड अपने मोबाइल हैंडसेट में स्टोर नहीं रखना चाहिए।
- अपने अकाउंट से संबन्धित सूचना टेक्स्ट मैसेज के जरिये नहीं भेजनी चाहिए।
- सिक्योर वैबसाइट को पहचानने का आसान तरीका है, इस का यूआरएल httphttps से शुरू होता है।
- यहाँ पर एस (s) का मतलब सिक्योर से होता है और यह यूआरएल सिक्योर सोकेट्स लेयर कनेक्शन का इस्तेमाल करता है।
- सेफ मोबाइल बैंकिंग का इस्तेमाल करने के लिए स्क्रीन अनलॉक का प्रयोग करें।
- गलत लिंक पर क्लिक न करें, वायरस आ सकते हैं।
- सोशल मीडिया के इस्तेमाल में सावधानी बरतनी चाहिए।
- अनजानी कॉल से सावधान रहें और अजनबियों से जरूरी जानकारी शेयर न करें।
- ऑफिशियल एप्स का ही यूज करें। बैंक के आधिकारिक एप्स सुरक्षित होते हैं।
- मोबाइल बैंकिंग के दौरान ब्लुटूथ बंद कर दें वरना हैकर्स को हैक करने का मौका मिल सकता है।
- जिस यूआरएल को लेकर आप आश्वस्त न हों उसे फॉलो न करें।
- मोबाइल से जंक मैसेज भी डिलीट कर दें।
- यदि आपको कोई मेल संदेहास्पद लगता है तो उस पर क्लिक न करें।
- किसी दूसरे को मोबाइल बेचने या देने से पहले सभी पर्सनल अकाउंट इन्फोर्मेसन डिलीट कर दें।
- नेटवर्क न मिलने पर फ्री वाईफ़ाई या हॉटस्पॉट से मोबाइल बैंकिंग का प्रयोग न करें।
- हमेशा पासवर्ड प्रोटेक्ट मोबाइल कनेक्शन का ही प्रयोग करें।

अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है, तो चाहे कोई माने या न माने, राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है, वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता...

— राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

मधुमेह के संग मधुर जीवन

श्री विनय कुमार सक्सेना
वरिष्ठ पुस्तकालय एवं
सूचना सहायक केंद्रीय पुस्तकालय
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

विश्व में मधुमेह रोगियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है लेकिन वृध्दि की सभी देशों में अलग - अलग है। विभिन्न देशों में मधुमेह रोगियों की वृद्धि में विभिन्नता का कारण जीवन शैली में अंतर है । वर्तमान में मधुमेह तीव्रता से फैल रहा है और भारत में यह स्थिति और भी चिंताजनक है। सन 1995 में विश्व मधुमेह आबादी में हर सातवां व्यक्ति भारतीय था जबकि सन 2025 में हर पांचवां मधुमेह रोगी भारतीय होगा ।

मधुमेह क्या है ?

सामान्यत : रक्त में शर्करा (ग्लुकोज) का स्तर निर्धारित मात्रा से अधिक हो जाता है तो इसे मधुमेह कहते हैं। चिकित्सा विज्ञान में रक्त में शर्करा का स्तर बढ़ने का कारण इन्सुलिन हार्मोन की मात्रा में कमी है जो मधुमेह का कारण बनती है ।

मधुमेह का इतिहास एवं वर्तमान स्थिति

मधुमेह का इतिहास में उल्लेख 3550 वर्ष पूर्व से मिलता है. मधुमेह का सबसे पहला वर्णन 3550 वर्ष पूर्व मिस्र के फिजिशियन हैंसी - रा ने किया था। भारतीय इतिहास में लगभग 100 ईसा पूर्व सुश्रुत, चरक एवं वाग्भट ने इसका उल्लेख अपनी सहिंताओं में किया है। सन् 1921 में इसके कारणों को पहचानते हुए कनाडा के फ्रेडरिक ग्रांट बैंटिंग ने इन्सुलिन की खोज की और मधुमेह की चिकित्सा का सूत्रपात किया। 14 नवंबर 1891 को जन्में इन्हीं सर बैंटिंग के जन्मदिवस को प्रतिवर्ष 14 नवंबर को विश्व मधुमेह दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

हम भारतीय मधुमेह के आसान शिकार क्यों हैं ?

विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े कहते है कि सन् 1995 में भारत में मधुमेह रोगियों की संख्या एक करोड़ नब्बे लाख थी और सन् 2025 में इनकी संख्या पांच करोड़ सत्तर लाख होगी परन्तु वास्तविकता भयावय है। सन् 2004 में ही भारत में मधुमेह रोगियों की संख्या तीन करोड़ पचास लाख पार कर चुकी थी। अब तो विश्व में भारत की पहचान ही 'मधुमेह की राजधानी' के रूप में हो रही है ।

हम भारतीय मधुमेह के आसान शिकार क्यों हैं ? इसका उत्तर तलाशें तो मुख्यतः हमारी जीवन शैली, खान - पान में बदलाव व आनुवांशिक कारण इसके लिए उत्तरदायी माने जा सकते हैं वहीं मधुमेह के बारे में पूर्ण जानकारी न होना भी इसका एक प्रमुख कारण है ।

मधुमेह से जुड़े मिथक

मधुमेह की चिकित्सा में इसका ज्ञान आवश्यक है नहीं तो दुर्भाग्यवश रोगी भ्रांतियों के मध्य अपना जीवन व्यतीत करता है अतः मधुमेह से जुड़े मिथक जिनसे हमें अवगत होना है, वे हैं -

1. मधुमेह एक संक्रामक या छुआछूत का रोग है ।
2. मधुमेह रोगी रक्तदान नहीं कर सकता ।
3. एक बार इन्सुलिन शुरू की तो आदत बन जायेगी।
4. चोट लगने पर घाव शीघ्र ठीक होता हो तो मधुमेह नियंत्रण में है ।

5.जब रक्त शर्करा सामान्य हो जाए तो मधुमेह चिकित्सा बंद कर देनी चाहिए ।

6. शर्करा बढ़ी हुई पर तकलीफ नहीं है तो इलाज क्यों करवाया जाए।

7. मधुमेह की दवाइयों से किडनी , हृदय , आँखों पर दुष्प्रभाव होता है ।

8. मधुमेह तभी होता है जब परिवार में किसी को मधुमेह रहा हो ।

9. मधुमेह सिर्फ बड़े- बूढ़ों की बीमारी है ।

उपरोक्त भ्रामक बातों से बचकर योग्य चिकित्सक से मधुमेह की चिकित्सा करवानी चाहिए।

मधुमेह के कारक

वर्तमान युग में तनाव भरे और शारीरिक श्रम से रहित जीवन में मधुमेह किसी को भी हो सकता है, परन्तु कुछ कारक भी हैं जो मधुमेह की संभावना को बढ़ाते हैं, वे हैं -

1. आनुवांशिक कारण
2. मोटापा
3. शारीरिक श्रम का भाव
4. कोलेस्ट्रॉल की अधिकता
5. उच्च रक्त चाप
6. पारम्परिक आहार पद्धति
7. मानसिक तनाव
8. औषधि (जैसे : स्टीरॉयड, गर्भ निरोधक दवाइयां, मूत्रवर्दक औषधि आदि)
9. मेटाबोलिक सिंड्रोम

मधुमेह के लक्षण

मधुमेह के रोगियों में मुख्यत : निमनलिखित एक या एक से अधिक लक्षण पाए जाते हैं -

1. वजन घटना
2. बार -बार पेशाब जाना
3. अधिक प्यास लगना
4. थकान महसूस होना
5. जननांगों में खुजली
6. अधिक भूख लगना
7. आँखों के आगे धुंधलापन
8. घावों का नहीं भरना
9. शरीर में चींटियों के चलने जैसी संवेदना

प्रोढ़ों तथा बूढ़ों में मधुमेह के उपर्युक्त लक्षण धीरे - धीरे प्रकट होते हैं, कभी - कभी तो दूसरे रोग का उपचार कराने जाने पर मधुमेह का पता लगता है। युवा तथा बच्चों में मधुमेह के लक्षण शीघ्रता से प्रकट होते हैं ।

मधुमेह के संग जीने का ढंग

जीवन में मधुमेह का प्रवेश होने के पश्चात पूर्ण निवारण संभव नहीं है, लेकिन अपने जीने के तरीके को बदल कर इसे नियंत्रित अवश्य किया जा सकता है, मधुमेह के संग जीने का ढंग छह बुनियादी तथ्यों पर आधारित है, वे हैं -

1. नियमित व्यायाम एवं योगासन - मधुमेह रोगी को अपनी

जीवनचर्या में व्यायाम, योगासन, प्राणायाम आदि को अवश्य सम्मिलित करना चाहिए। इसके अंतर्गत सूर्य नमस्कार, मंडूकासन, वज्रासन, सर्वांगासन, नौकासन, भुजंगासन, मत्स्यासन, धनुरासन, शलभासन, पाद पश्चिमोत्तानासन एवं प्राणायाम में भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम विलोम आदि का विशेष रूप से अभ्यास करना चाहिए।

2. आहार नियंत्रण - मधुमेह रोगी को शर्करायुक्त खाद्य पदार्थों का त्याग कर संतुलित आहार लेना चाहिए, अपने आहार में शर्करानाशी एवं शर्करा नियंत्रित करने वाले भोज्य पदार्थ जैसे - करेला, मेथी, लहसुन, सोयाबीन आदि के सेवन के साथ रेशेदार पदार्थ व फलों को विशेष स्थान देना चाहिए।

3. दुर्व्यसनों का त्याग - मधुमेह रोगी को धूम्रपान, तबांकु , शराब एवं अन्य मादक पदार्थों के सेवन से दूर रहना चाहिए।

4. जीवनचर्या में बदलाव - मधुमेह रोगी को तनावयुक्त जीवन चर्या को त्याग कर संतुलित जीवनचर्या अपनानी चाहिए। एक ऐसी जीवनचर्या जो अनुशासित हो, जिसमें भोजन, श्रम, विश्राम का समय निश्चित हो।

5. दवाइऱ्यां - मधुमेह रोगी को चिकित्सक के परामर्शानुसार दवाइयों का सेवन करना चाहिए . दवाइयों की मात्रा व समय का चिकित्सक की सलाहनुसार ध्यान रखना चाहिए।

6. इन्सुलिनका सेवन- मधुमेह रोगी को इन्सुलिन का सेवन उचित मात्रा में करना तथा समय - समय पर इसकी मात्रा के बारे में चिकित्सक से परामर्श लेता रहना चाहिए।

उपरोक्त बुनियादी तथ्यों का ध्यान रखते हुए मधुमेह के संग जीने का ढंग अपनाना चाहिए। इस तरह मधुमेह के संग मधुर जीवन का आनंद लिया जा सकता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मधुमेह एक रोग नही अपितु असंतुलित जीवनचर्या का परिणाम है जिसे संतुलित कर मधुमेह पर नियंत्रण पाया जा सकता है। मधुमेह वर्तमान में जीवन साथी की तरह है। जीवनसाथी की तरह इसे भी समझना होगा एवं इसके साथ जीने की शैली सीखनी होगी. यह एक ऐसा जीवन साथी है, जिस से तलाक संभव नहीं है। अतः मधुमेह रोगियों को इस नए जीवन साथी से ताल मेल बना कर मधुर जीवनयापन करना चाहिए।

मधुमेह के संग मधुर जीवन व्यतीत करने के लिए इसके बारे में पूर्ण जानकारी आवश्यक है क्योंकि मधुमेह की अधिकाधिक जानकारी मधुमेह से बचाव करने व नियंत्रण करने में सहायक है। हमें डॉ. एलियट पी. जोसलिन के इस कथन को नही भूलना चाहिए कि - 'मधुमेह के जिस रोगी को मधुमेह का सबसे अधिक ज्ञान होता है, वह सबसे अधिक जीवित रहता है।'

देश के विभिन्न भागों के निवासियों के व्यवहार के लिए सर्वसुगम और व्यापक तथा एकता स्थापित करने के साधन के रूप में हिन्दी का ज्ञान आवश्यक है... ।

— सी. पी. रामास्वामी अय्यर

हिन्दी भारतवर्ष के हृदय-देश स्थित करोड़ों नर-नारियों के हृदय और मस्तिष्क को खुराक देने वाली भाषा है... -

— प्रसिद्ध हिन्दी कवि
हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

देवनागरी

श्री महेन्द्र कुमार सोमानी
क्षेत्रीय खनन भूवैज्ञानिक
भारतीय खान ब्यूरो, उदयपुर

देवनागरी एक लिपि है जिसमें अनेक भारतीय भाषाएँ तथा कुछ विदेशी भाषाएं लिखीं जाती हैं । संस्कृत, पालि, हिन्दी, मराठी, कोंकणी, सिन्धी, कश्मीरी, नेपाली, तामाङ भाषा, गढ़वाली, बोडो, अंगिका, मगही, भोजपुरी, मैथिली, संथाली आदि भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाती हैं । इसके अतिरिक्त कुछ स्थितियों में गुजराती, पंजाबी, बिष्णुपुरिया मणिपुरी, रोमानी और उर्दू भाषाएं भी देवनागरी में लिखी जाती हैं ।

अधितकतर भाषाओं की तरह देवनागरी भी बायें से दायें लिखी जाती है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है) इसे शिरोरेंखा कहते हैं। इसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है । यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियों (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। इससे वैज्ञानिक और व्यापक लिपि शायद केवल आइपीए लिपि है। भारत की कई लिपियाँ देवनागरी से बहुत अधिक मिलती-जुलती हैं, जैसे- बांग्ला, गुजराती, गुरुमुखी आदि। कम्प्यूटर प्रोग्रामों की सहायता से भारतीय लिपियों को परस्पर परिवर्तन बहुत आसान हो गया है ।भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे पाठ को लगभग 'हू-ब-हू' उच्चारण किया जा सकता है, जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपियों में सम्भव नहीं है ।

इसमें कुल 52 अक्षर हैं, जिसमें 14 स्वर और 38 व्यंजन हैं। अक्षरों की क्रम व्यवस्था (विन्यास) भी बहुत ही वैज्ञानिक है। स्वर-व्यंजन, कोमल-कठोर, अल्पप्राण-महाप्राण, अनुनासिक्य-अन्तस्थ-उष्म इत्यादि वर्गीकरण भी वैज्ञानिक हैं । एक मत के अनुसार देवनगर (काशी) मे प्रचलन के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा ।

अब हम देवनगारी के इतिहास पर एक नजर डालेंगे। डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार सर्वप्रथम देवनागरी लिपि का प्रयोग गुजरात के नरेश जयभट्ट (700-800 ई.) के शिलालेख में मिलता है । आठवीं शताब्दी में चित्रकूट, नवीं में बड़ौदा के ध्वराज भी अपने राज्यादेशों में इस लिपि का उपयोग किया करते थे । समूचे विश्व में प्रयुक्त होने वाली लिपियों में देवनागरी लिपि की विशेषता सबसे भिन्न है । अगर हम रोमन, उर्दू लिपि से इसका तुलनात्मक अध्ययन करें तो देवनागरी लिपि इन लिपियों से अधिक वैज्ञानिक है । रोमन और उर्दू लिपियों के स्वर-व्यंजन मिले-जुले रूप में रखे गए हैं, जैसे- अलिफ़, बे; ए, बी, सी, डी, ई, एफ आदि ।

दोनों लिपियों की तुलना में देवनागरी में इस तरह की अव्यवस्था नहीं है, इसमें स्वर-व्यंजन अलग-अलग रखे गए हैं । स्वरों के ह्रस्व-दीर्घ युग्म साथ - साथ रहते हैं, जैसे- अ-आ, इ-ई,उ-ऊ । इन स्वरों के बाद संयुक्त स्वरों की बात करते हैं इनको भी इस लिपि में अलग से रखा जाता है, जैसे- ए, ऐ, ओ, औ, ।

देवनागरी के व्यंजनों की विशेषता इस लिपि को और वैज्ञानिक बनाती है, जिसके फलस्वरूप क,च,ट,त,प, वर्ग के स्थान पर आधारित है और हर वर्ग के व्यंजन में घोषत्व का आधार भी सुस्पष्ट है, जैसे- पहले दो व्यंजन (च,छ) अघोष और शेष तीन व्यंजन (ज,झ,ञ) घोष होते हैं । देवनागरी

व्यंजनों को हम प्राणत्व के आधार पर भी समझ सकते हैं, जैसे- प्रथम, तृतीय और पंचम व्यंजन अल्पप्राण और द्वितीय और चतुर्थ व्यंजन महाप्राण होता है। इस तरह का वर्गीकरण और किसी और लिपि व्यवस्था में नहीं है।

देवनागरी की कुछ और महत्तवपूर्ण विशेषता निम्नवत हैं :-

इसकी वर्णमाला के वर्गीकरण में व्याकरण शास्त्र ने उच्चारण-स्थान उच्चारण में श्वास-गति और जिह्वा की स्थितियों का बराबर ध्यान रखा है । इतनी वैज्ञानिकता विश्व की अन्य किसी भी भाषा में अप्राप्य है । अंग्रेजी में लिपियों का उच्चारण शब्दपरक है तथा उच्चारण और लेखन में कोई व्यवस्था नहीं है।

बी यू टी का उच्चारण 'बट' है तो पी यू टी का 'पुट' होता है । एक ही स्वर 'यु' कहीं 'यू' है, 'उ' है तो कहीं 'अ' है । अरबी लिपि में तीन स्वरों से तेरह स्वरों का काम लिया जाता है । देवनागरी लिपि के उच्चारण में परिपूर्ण निर्विलपता के कारण लिखने, पढ़ने और समझने में कठिनाई नहीं होती है ।

(1) लिपि चिह्नों के नाम ध्वनि के अनुसार - इस लिपि में चिह्नों के द्योतक उसके ध्वनि के अनुसार ही होते हैं और इनका नाम भी उसी के अनुसार होता है जैसे-अ, आ, ओ, औ, क, ख आदि। किंतु रोमन लिपि चिह्न नाम में आई किसी भी ध्वनि का कार्य करती है, जैसे- भ(अ) ब(क) ल(य) आदि। इसका एक कारण यह हो सकता है कि रोमन लिपि वर्णात्मक है और देवनागरी ध्वन्यात्मक ।

(2) लिपि चिह्नों की अधिकता - विश्व के किसी भी लिपि में इतने लिपि प्रतीक नहीं हैं । अंग्रेजी में ध्वनियाँ 40 के ऊपर है किंतु केवल 26 लिपि-चिह्नों से काम होता है । 'उर्दू में भी ख, घ,छ, ठ, ढ, ढ़, थ, ध, फ, भ आदि के लिए लिपि चिह्न नहीं है। इनको व्यक्त करने के लिए उर्दू में 'हे' से काम चलाते हैं' इस दृष्टि से ब्राह्मी से उत्पन्न होने वाली अन्य कई भारतीय भाषाओं में लिपियों की संख्याओं की कमी नहीं है । निष्कर्षतः लिपि चिह्नों की पर्याप्तता की दृष्टि से देवनागरी, रोमन और उर्दू से अधिक सम्पनन्हैं।

(3) स्वरों के लिए स्वतंत्र चिह्न - देवनागरी में ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के लिए अलग-अलग चिह्न उपलब्ध हैं और रोमन में एक ही (।) अक्षर से 'अ' और 'आ' दो स्वरों को दिखाया जाता है । देवनागरी के स्वरों में अंतर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है ।

(4) व्यंजनों की आक्षरिकता - इस लिपि के हर व्यंजन के साथ-साथ एक स्वर 'अ' का योग रहता है, जैसे- च्अ् च, इस तरह किसी भी लिपि के अक्षर को तोड़ना आक्षरिकता कहलाता है। इस लिपि का यह एक अवगुण भी है किंतु स्थान कम घेरने की दृष्टि से यह विशेषता भी है, जैसे - देवनागरी लिपि में 'कमल'तीन वर्णों के संयोग से लिखा जाता है, जबकि रोमन में छः वर्णों का प्रयोग किया जाता है ।

(5) सुपाठन एवं लेखन की दृष्टि- किसी भी लिपि के लिए अत्यन्त आवश्यक गुण होता है कि उसे आसानी से पढ़ा और लिखा जा सके इस दृष्टि से देवनागरी लिपि अधिक वैज्ञानिक है। उर्दू की तरह नहीं, जिसमें जूता को जोता, जौता आदि कई रूपों में पढ़ने की गलती अक्सर लोग करते हैं ।

देवनागरी लिपि के अन्य गुण :-

(1) एक ध्वनि : एक सांकेतिक चिह्न
(2) एक सांकेतिक चिह्न : एक ध्वनि
(3) स्वर और व्यंजन में तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक क्रम-विन्यास
(4) वर्णों की पूर्णता एवं सम्पनन्ता (52 वर्ण, न बहुत अधिक न बहुत कम)
(5) उच्चार और लेखन में एकरुपता
(6) उच्चारण स्पष्टता (कहीं कोइ संदेह नहीं)
(7) लेखन और मुद्रण मे एकरूपता (रोमन , अरबी और फ़ारसी मे हस्तलिखित और मुद्रित रूप अलग-अलग हैं)

(8) देवनागरी लिपि सर्वाधिक ध्वनि चिह्नों को व्यक्त करती है ।

(9) लिपि चिह्नों के नाम और ध्वनि मे कोई अन्तर नहीं (जैसे रोमन में अक्षर का नाम 'बी' है और ध्वनि 'ब' है)

(10) मात्राओं का प्रयोग

(11) अर्ध अक्षर के रूप की सुगमता

देवनागरी के दोष -

देवनागरी के चारों ओर से मात्राएं लगना और फिर शिरोरेखा खींचना लेखन में अधिक समय लेता है, रोमन और उर्दू में नहीं होता । 'र' के एक से अधिक प्रकार का होना, जैसे- रात, प्रकार, कर्म, राष्ट्र ।

अतः यह कहा जा सकता है कि देवनागरी लिपि अन्य लिपियों की अपेक्षा अच्छी मानी जा सकती है, जिसमें कुछ सुधार की आवश्यकता महसूस होती है जैसे- वर्णों के लिखावट में सुधार की आवश्कता है क्योंकि 'रवाना' लिखने की परम्परा में सुधार हो कर अब 'खाना' इस तरह से लिखा जाने लगा है । इसी तरह से लिखने के पश्चात हमें शिरोरेखा पर विशेष ध्यान देना चाहिए,जैसे- 'भर' लिखते समय हमें शिरोरेखा थोड़ा जल्द बाजी कर दे तो 'मर' पढ़ा जाएगा । इन छोटी-छोटी बातों पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए ।

इस प्रकार देवनागरी लिपि के प्रत्येक वर्ण प्रायः निदोष हैं। टंकण की सुविधा को ध्यान में रखते हुए देवनागरी लिपि के स्वर, व्यंजन, संयुक्त अक्षर, पूर्ण विराम आदि के लेखन में जो बदलाव लाए गए हैं, इतना तो मानना ही होगा कि उससे लिपि के आकार-गठन का सौंदर्य कम हो गया है ।

साथ ही संयुक्त अक्षरों की उच्चारण-शुद्धि में भी विकार की संभावना बढ़ गई है । अतः इस दिशा में और भी अधिक सावधानी से संशोधन की गुंजाइश है । जो भी हो, नागरी लिपि अपने वर्तमान रूप में निर्दोष है ।

खुद से हुआ जो साक्षात्कार

श्री अक्षत याग्रिक
कनिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, उदयपुर

आज किया खुद से जो साक्षात्कार
मन में आया एक अजीब विचार
क्या ये वही मैं हूँ
क्या मैं सच में 'मैं' हूँ?
इस मैं ने खोले मेरे मन के द्वार
और हुआ जिससे सामना वो था निराधार
मैं है केवल घमंड का प्रतीक
आत्मा से आया यह उत्तर सटीक
ये मैं केवल है मेरा शरीर
जिसको जकड़े हुए है सांसारिकता की ज़ंजीर
मुक्त होकर जब देखा इस मैं से
पाया मैंने खुद को जुड़ा ईश्वर से
घमंड पानी की तरह बह गया
मन में प्रसनन्ता का दीप जल गया
उठ खड़ा हुआ मेरा अस्तित्व
बताने को मुझे मेरा सही महत्व
इस शरीर को तो है एक दिन मिट जाना
अच्छे कर्म से ही है मोक्ष को पाना
जाना मैंने ये रहस्य उदार
जब हुआ खुद से खुद का साक्षात्कार

रोजगार आधारित शिक्षा के साथ साथ संस्कार आधारित शिक्षा की आवश्यकता

श्री दिलीप पंवार
आशुलिपिक
भारतीय खान ब्यूरो, उदयपुर

शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान है। हमने पाया है कि शिक्षा के प्रसार से देश ही नहीं संसार ने काफी प्रगति की है। मनुष्य ने शिक्षा के प्रसार के साथ साथ सुख सुविधाओं से लेकर जीवन की आयु भी बढ़ाई है।

जहां शिक्षा के साथ साथ नये - नये रोजगार का अवसर बढ़े हैं। देश में आज हम देख रहे हैं कि शैक्षणिक संस्थाओं की बाढ़ आ गई है और प्रत्येक माता पिता अच्छे से अच्छे रोजगार की उम्मीद में अपने बच्चों को अच्छी से अच्छी तथा महंगी से महंगी शिक्षा दिलाने हेतु प्रयासरत है।

हमने पाया है कि जहां बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर उसके अनुरूप महानगरों के साथ साथ विदेशों में भी अच्छे रोजगार प्राप्त कर उच्च पदों पर आसीन हैं। परन्तु हमने यह भी पाया है कि रोजगार आधारित शिक्षा के साथ साथ संस्कार आधारित शिक्षा प्राप्त नहीं करने के कारण समाज में कई बुराइयां पैदा हो गई हैं जिनका संक्षिप्त विवरण निम्ननुसार है :- हमने पाया है कि उच्च पदों एवं अच्छे अवसरों के तलाश में बच्चे अपने माता पिता से दूर बड़े बड़े महानगरों की चकाचौंध में अपनी पत्नी तथा अपने बच्चों के साथ व्यस्त रहते हैं तथा अपने माता-पिता के प्रति अपने दायित्वों को पूरा नहीं करते जिसके फलस्वरूप भारत जैसे देश में भी वृद्धाश्रम जैसी व्यवस्थाओं की आवश्यकता महसूस की जा रही है एवं देश में जगह जगह वृद्धाश्रम खुल गए हैं। अगर बच्चों में रोजगार आधारित शिक्षा के साथ साथ संस्कार आधारित शिक्षा दी जाए तो देश में ऐसे वृद्धाश्रमों की आवश्यकता ही महसूस नहीं होगी।

इसी प्रकार हमने पाया है कि आज बालिकाओं में भी शिक्षा का प्रचार प्रसार प्रसार होने के कारण महिलाओं ने अच्छी शिक्षा कर प्राप्त कर बड़े बड़े एवं महत्वपूर्ण पदों को प्राप्त किया है। परन्तु महिलाओं में संस्कारों की कमी के कारण परिवार विघटन जैसे तलाक के काफी मामले बढ़ गए हैं। पहले महिलाएं काफी अभावों में रहकर भी अपने परिवार से अलगाव नहीं करती थी तथा उम्रभर अपने परिवार के प्रति समर्पित रहती थी परन्तु आज अत्यधिक सुख सुविधाएं प्राप्त करने के बावजूद भी संस्कारों की कमी के कारण परिवारों के विघटन की स्थिति पैदा हो गई है। अतः रोजगार आधारित शिक्षा के साथ साथ संस्कार आधारित शिक्षा की महती आवश्यकता है।

संस्कार आधारित शिक्षा की कमी के कारण लोगों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। आज हम देखते हैं कि परिवारों में फास्ट फूड जैसे परम्परा स्थान लेती जा रही है जिससे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है उसी प्रकार सवेरे देर से उठने तथा व्यायाम नहीं करने के कारण भी स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है जबकि हमारे वेदों में भी योग प्राणायाम एवं व्यायाम जैसी व्यवस्था है। अगर हम इनका अनुकरण कर उसके अनुसार अपनी दिनचर्या तय करें तो स्वयं एवं समाज में स्वस्थ पीढ़ी तैयार कर सकते हैं।

संस्कार आधारित शिक्षा केवल शैक्षणिक संस्थाओं से ही नहीं दी जा सकती इसके लिए परिवार, मित्र तथा निकटस्थ रिश्तेदारों के माध्यम से संस्कार आधारित शिक्षा का प्रचार प्रसार भावी पीढ़ी में करने की आवश्यकता है।

जैसा सोच वैसा जीवन

श्री प्रवीण गजभिए
उच्च श्रेणी लिपिक
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हम प्रतिदिन 60 हजार से ज्यादा विचार करते हैंजिसमें से 90 प्रतिशत विचार बेकार होते हैं। उन विचारों का हमें किसी प्रकार का उपयोग नहीं होता।

ज्यादातर विचार हमें नकारात्मकता की ओर ही ले जाते हैं, मन से संभल कर रहिये ये नकारात्मक बातों का संग्रह करने में बड़ा होशियार है। आनंद, तृप्ति, हास-परिहास के क्षण भूलने में भी मन आगे रहता है। ध्यान से देखने में मन निगेटिव बातों का संग्रहालय लगेगा। मन के इस दुष्चक्र को तोड़ने के लिए सुखद और प्यारी बातों का निरंतर स्मरण जरूरी है। दुःख पर ध्यान देने से दुःख बढ़ता है, सबसे अच्छा तरीका है अपने आप को निर्विचारीता में रखें, जब भी आपको मौका मिले आप विचारों को देखें, आप निर्विचारिता में चले जाएंगे। इस तरह के अभ्यास से आप नकारात्मकता से दूर होकर सकारात्मकता की ओर बढ़ोगे। श्री गौतम बुध्द कहते हैंजैसे आपके विचार होते हैंवैसा ही आपका जीवन होता है।

आज हम विज्ञान से जान गए हैंकि हमारे घर पर जो रेडियों या टेलिविजन होता है उसमें जो कार्यक्रमों का प्रसारण होता है उन्हें रेडियों लहरी कहते हैंजब हम रेडियों को ट्यून करते हैंया टेलिविजन लगाते हैंतो जो चीजें हम अपने आँखों या कानों से नहीं देख सुन पाते हैंवह हम देखने और सुनने लगते हैंयह कैसा हुआ इसका मतलब यह है कि वह लहरिया हमारे इर्द - गिर्द पहले से ही मौजुद थे बस उसे हमें उपकरनों द्वारा पकड़ना था। यह सिद्धांत हमारे जीवन को भी लागू होता है।

जब हम नकारात्मक विचारों के भवर में फंसते हैंतब हमारे आजू-बाजू के नकारात्मक विचारों की ध्वनियां हमारे विचारों के साथ मिल जाती है और हमें निरस बना देती हैं। इसलिए आपको सजग रहना चाहिये कि आपके मन में किस प्रकार के विचार चल रहे हैं। क्या आप नकारात्मकविचारों के प्रभाव में तो नही बह रहे है? इस बात का हमे हमेशा ख्याल रहना चाहिए और जब भी हमें नकारात्मक विचार आते हैं तब हमें कहना चाहिए कि यह विचार मेरे नहीं है और हमें अपने आपको सकारात्मक विचारों की ओर मोड़ना चाहिए। उदाहरण के तौर पर थॉमस अल्वा एसिडसन ने 999 प्रयोग करने के पश्चात हजारवें प्रयोग में उन्हें बिजली का दीप बनाने में कामयाबी मिली। थॉमस को जब पत्रकारो नें पुछा आपको 999 बार असफल होने से कैसा मैसूस हो रहा है? थॉमस बोले 999 प्रयोग असफल नहीं हुए बल्कि मैनें यह सिद्ध किया कि इन 999 तरीके से बिजली का दीप नहीं बनाया जा सकता। इतिहास में हम देखते हैंकि एक बार नेपोलियन समुद्र किनारे पर जहाज से उतरते समय पांव फिसलने से किचड़ में धमाक से गिर पड़े, उनकी छाति किचड़ से मल गई, यह नजारा देख अंधश्रद्धा के कारण सैनिकों ने सोचा अपना सेनापति गिर गया इससे यह प्रतीत होता है कि आज अपनी हार निश्चित है, सभी के सर कलम हो सकते हैं। सैनिक घबड़ा गये, इस बात को नेपोलियन ने भाप लिया और वह उठा अपनी छाती को साफ करते हुए बोला दोस्तों आज की लड़ाई हमें ही जीतनी है हम जहां - जहां जाएंगे वहाँ - वहाँ अपनी ही जीत सुनिश्चित है क्योंकि आते - आते ही भूमि ने मुझे अलिंगन दिया है और कहाँ है मै आपकी हूँ मै आपकी हूँ। इस बात से सैनिकों का मनोबल बढ़ गया और उन्हें सभी जगह विजय प्राप्त हुई।

आध्यात्मिक क्षेत्र में भी हम देखते है कि गुरू अपने शिष्यों का मनोबल इसी तरह के सकारात्मक विचारों से बढ़ाया करते थे बुध्दकालीन कि यह वाक्यात है । एक बार एक शिष्य हाफता हुआ गौतम बुध्द के पास आया और कहने लगा भगवान मुझे गांव वालों ने गाली दी, बुध्द बोले अच्छा हुआ उन्होंने आपको मारा नहीं, तो वह बोला भगवान उन्होंने बाद में मुझे मारा भी, भगवान बोले क्या उनके मारने से आपको किसी प्रकार की चोट तो नहीं आयी, शिष्य बोला मेरा सर फट गया है।तब बुध्द बोले अच्छा हुआ कि उसके कारण आपकी मृत्यु नहीं हुयी। यह सुनते ही शिष्य शांत हुआ और बुध्द के चरणों के पास शांति से बैठ गया । बुध्द को यही समझाना था कि जो घटना घटित हुयी उससे भी भंयकर घटना घट सकती थी। पर वह नहीं घटी इससे हमें समाधानी रहने का सोचना चाहिए । एक साक्षात्कार के दौरान भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय अब्दुल कलामाजी को नवदल में जाने की इच्छा थी लेकिन वे उसमें नहीं जा सके परंतु आगे चलकर वे महान शास्त्रज्ञ बन गये। लेकिन हम जरा सी विपत्ती से घबरा जाते हैंऔर हमारा व्यक्तित्व उसी प्रकार का बनते जाता है । इस लिए हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि जो हमारे साथ भूतकाल में बुरी बात घटित हुई उसे भूलकर सिर्फ हमें अच्छी बातें ही याद रखनी चाहिए ।

हमारे सोच का हमारे स्वास्थ्य से गहरा संबंध है । हम जैसा सोचते और व्यवहार करते हैं, हमारा शरीर भी उसी तरह क्रियाएं करने लगता है और अंतत स्वास्थ्य पर उन विचारों का प्रभाव दिखने लगता है । अगर कोई व्यक्ति डॉक्टर के पास अपनी शारीरिक तथा मानसिक शिकायत लेकर जाता है तब डॉक्टर उसे जाँच कर दवा देता है, मरीज जब डॉक्टर के पास जाता है उस समय उसके मन में उस डॉक्टर के प्रति पूर्णरूप से विश्वास होता है कि डॉक्टर जो भी दवाइयाँ देंगे उससे उसको स्वास्थ लाभ हो जाएगा और वैसा ही होता है । परंतु कई बार हम देखते हैंकि किसी - किसी मरीज को कितना भी दवा दी जाए उसे स्वास्थ लाभ नहीं मिलता क्योंकि उसके मन में हमेशा उस डॉक्टर तथा उसने दिए दवाई पर नकारात्मक विचार चलते रहते हैंऔर इस नकारात्मक सोच के कारण उस व्यक्ति पर दवा का असर नहीं हो पाता । इसलिए डॉक्टर हमेशा मरीज को सकारात्मक बातों से उसका मनोबल बढ़ाते हैं।

विचारों का हमारे शारीरिक अंगों पर कैसा - कैसा असर होता है यह बड़ा ही दिलचस्प है जैसे अगर कोई व्यक्ति के मन में हमेश अश्लील विचार चाहते हो तो उस व्यक्ति केचहरे पर रूखापन दिखेगा उसे लैंगिक रोगों की समस्याओं से सामना करना पड़ सकता है । जब व्यक्ति जरूरत से ज्यादा विचार करता है और भविष्य के बारे में बेकार की बातें मन ही मन नियोजन करता रहता है, तब ज्यादा विचारों के कारण उसका यकृत (लीवर) गरम होता रहता है और उसे लीवर संबंधित विकार, डायबिटिज जैसे रोग जकड़ जाते हैं। अगर कोई व्यक्ति अपने आप को कर्मठ धार्मिक समझता हो या कोई व्यक्ति हमेशा परिवार-धन संपत्ति के बारे में हमेशा विचारों में खोया रहता हो तो उसे पेट के संबंधित विकार जड़ सकते है । अगर कोई व्यक्ति को हमेशा डर सताता हो तो उसे हदृय संबंधित रोग हो सकते हैंउसे ब्लड प्रेशर संबंधी समस्याएं होती है । अगर कोई व्यक्ति हमेशा मन में स्वयं के प्रति घृणित भाव रखता हो तब उसे गले संबंधित समस्याए हो सकती है । जब किसी व्यक्ति के मन में हमेशा लोगों के प्रति गुस्सा भरा हो तब उन्हें सर - दर्द, माइग्रेन जैसी समस्याएं हो सकती है । इसी क्रम में अगर कोई व्यक्ति हमेशा भूतकाल में हुई बातों को लेकर हमेशा परेशान रहता है तब वह मानसिक रोगी हो सकता है । इतना सुक्ष्म असर विचारों के कारण हम पे होता रहता है । इसलिए हमने हमेशा वर्तमान में रहने की कोशिश करना चाहिए जिस समय जो कार्य हम कर रहे हैंउसी पर ध्यान देने से हम वर्तमान में रहते हैंतथा हमें आनंदीत जीवन यापन करने का योग मिलता है ।

सोशल मीडिया...आधी हकीकत...आधा फसाना

श्री बी. एल. यादव
सहायक संपादक
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

फर्जी खबरों के बढ़ते चलन के बीच ये कहना मुश्किल होता जा रहा है कि सोशल मीडिया पर सच क्या है और झूठ क्या है। सोशल मीडिया पर चल रही फर्जी खबरों के पोस्टमार्टम के लिए कई चैनल हर रोज विशेष कार्यक्रम दिखा कर ये बता रहे हैं कि वायरल हो रहा ये मैसेज पूरी तरह से गलत है । हाल ही के दिनों में कई ऐसी खबरें भी सामने आईं जिनमें सोशल मीडिया पर फर्जीवाड़े और लाइक्स खरीदनें की बातें कही गई। ऐसे में ये समझना जरूरी है कि सोशल मीडिया पर चल रहे फर्जीवाड़े से कैसे बचा जा सकता है? साथ ही ये भी जानना जरूरी है कि क्या जो दिखता है वो हकीकत है? या फिर सोशल मीडिया में पोपुलेरिटी, प्रसिद्धि, जनसमर्थन को रुपयों के दम पर खरीदा जाता है?

सोशल मीडिया में ऐसे मिलते हैं फॉलोअर्स और प्रसिद्धि

फर्जी लाइक्स का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है। सेलीब्रेटी, नेता, राजनीतिक पार्टी इसका सहारा ले रही हैं। इसके अलावा उभरते कलाकार, सोशल मीडिया ब्रांड बनने की चाह रखने वाले शख्स भी पैसे देकर फर्जी लाइक्स खरीद रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ऐसे लोग अपने फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर लाइक्स बढ़ाने के लिए लाइक्स बढ़ाने वाली कंपनियों और ब्रोकर को हजारों रुपए दे रही हैं।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कुछ कंपनियां और ब्रोकर 130 रुपए में सेलिब्रिटी से लेकर नेताओं को 10 हजार लाइक्स दे रहे हैं। ये लाइक्स फेक आईडी के जरिए बढ़ाये जा रहे हैं। बताया जा रहा है कि सोशल प्लेटफॉर्म पर लाइक्स बढ़ाने की चाह रखने वाले लोग 2 दिन में 10 हजार लाइक्स की मांग कर रहे हैं। ऐसे में इनसे कंपनियां 130 रुपए से लेकर 780 रुपए तक ले रही है।

अब गूगल न्यूज भी आपको यह बता रहा है कि खबर सही है या नहीं। इसके लिए न्यूज सर्च रिजल्ट पर फैक्ट चेक का लेबल दिखेगा । इस फीचर को लाने का मकसद ये है कि न्यूज में किए गए दावे झूठे हैं या सच्चे यह लोगों को पता चल सके। फैक्ट चेकिंग के लिए गूगल पॉलिफेक्ट और सनूप्स के साथ काम कर रहा है। इसके अलावा कंपनी न्यूज पब्लिशर्स से भी सभी आर्टिकल के फैक्ट चेक करने को कह रही है। हालांकि इससे गूगल न्यूज में स्टोरी रैंकिंग में कोई फर्क नहीं पड़ेगा ।

इंटरनेट और सोशल मीडिया पर फर्जी खबरों की भरमार लगी है। हाल ही में फेसबुक ने ऐसी खबरों से निपटने के लिए टूल्स लाने का ऐलान किया है। हाल ही में गूगल ने गूगल न्यूज पर फर्जी न्यूज से निपटने के लिए फैक्ट चेक टैग की शुरुआत की। हालांकि शुरुआत में तो इसे अमेरिका और ब्रिटेन के लिए ही दिया गया था, लेकिन अब इसे दुनिया भर के लिए शुरू कर दिया गया है।

1. टॉपिक यानी शीर्षक को लेकर रहें सतर्क

फर्जी खबरों वाली कहानियों के शीर्षक अकसर लुभावने होते हैं और उनमें बड़े - बड़े अक्षरों के साथ विस्मय बोधक चिन्हों का इस्ते माल किया जाता है. अगर इन शीर्षकों के चौंकाने वाले दावों पर भरोसा न हो रहा हो तो वे अक्सर फर्जी ही होती है.

2. URL को ध्यान से देखें

अगर नकली लगने वाला या किसी अन्य URL से मिलता-जुलता URL हो तो यह फर्जी खबर का संकेत हो सकता है. बहुत सी फर्जी खबरों वाली वेबसाइटें URL में छोटे-मोटे बदलाव करके असली खबरों के सोर्स की नकल करती हैं. आप इन वेबसाइटों पर जाकर URL की तुलना प्रमाणित सोर्स के साथ कर सकते हैं.

3. सोर्स की जांच जरूरी

यह सुनिश्चित करें कि कहानी किसी ऐसे सोर्स ने लिखी हो जिस पर आप विश्वास करते हैं और जो सही खबरें देने के लिए जाना जाता है अगर कहानी किसी अनजान संगठन से आई है तो उसके बारे में ज्यादा जानने के लिए उनकी वेबसाइट के About US पेज पर जाएं।

4. असामान्य फॉर्मेटिंग पर ध्यान दें

फर्जी खबर वाली बहुत सी वेबसाइटों पर वर्तनी यानी कि स्पेलिंग की गलतियां और अजीब से लेआउट देखने को मिलते हैं। अगर आपको ऐसे संकेत दिखाई दें तो ऐसी खबरों के बारे में सतर्क रहें।

5.फोटो की सत्यता पर विचार करें

फर्जी खबरों वाली कहानियों में अक्सर ऐसी फोटो या विडियो होते हैं जिनमें छेड़छाड़ की गई होती है । कई बार फोटो तो असली होती हैं, लेकिन उन्हें गलत प्रसंग में दिखाया जाता है। आप उस फोटो के बारे में ज्यांदा जानकारी खोजकर यह पता लगा सकते हैं कि उसका सोर्स क्या है।

6. तारीखों पर ध्यान दें

फर्जी खबरों पर ऐसी टाइमलाइन हो सकती हैं जिनका कोई अर्थ ही नहीं निकलता हो या फिर उनमें घटनाओं की तारीखों को बदला गया होता है.

7. प्रमाणों की जांच करें

लेखक द्वारा बताए गए सोर्स की जांच करें ताकि यह कंफर्म किया जा सके कि वे सही हैं. अगर पूरे सबूत नहीं दिए गए हैं या अनाम विशेषज्ञों के हवाले से खबर दी गई है तो यह फर्जी खबर का संकेत हो सकता है।

8. दूसरी रिपोर्ट भी देखें

अगर खबरों के किसी भी दूसरे सोर्स ने ऐसी कहानी वाला समाचार नहीं दिया है तो यह इस बात का संकेत हो सकता है कि कहानी झूठी है । आप जिस सोर्स पर भरोसा करतें हैं, अगर उनमें से कई सोर्स ने भी यह खबर दी है तो इसके सही होने की संभावना ज्यादा होती है।

9. कहानी है या मजाक?

कई बार फर्जी खबरों वाली कहानियों और मजाक या व्यंग्य में अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है। इस बात पर ध्यान दें कि कहीं इस कहानी का सोर्स मजाकिया खबरों के लिए तो मशहूर नहीं है और यह भी देखें कि कहानी के लहजे और उसमें दी गई जानकारी से ऐसा तो नहीं लगता कि ये सिर्फ मजाक के लिए लिखी गई है?

10. कभी – कभी जानबूझकर झूठी कहानियां बनाई जाती हैं

आप जो कहानियां पढ़ते हैं उन्हें क्रॉस चेक करें अथवा उनकी समीक्षा करें और केवल वे कहानियां ही शेयर करें जिनकी सत्यता पर आपको विश्वास हो । इस तरह सोशल मीडिया यूजर्स अपनी सतर्कता से ही सोशल मीडिया पर चल रहे फर्जीवाड़े से बच सकते हैं । क्योंकि आज के दौर में सोशल मीडिया संचार का काफी शक्तिशाली टूल है ऐसे में सोशल मीडिया यूजर्स को यहां चल रहे फर्जीवाड़े से सतर्क रहने की जरूरत है, ताकि वो किसी के बहकावे में नहीं आए और व्यापक हित में सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर सकते है ।

'संस्कृत मां, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।'

— डॉ. फादर कामिल बुल्के

विश्व स्तर पर हिन्दी

श्री अजय कुमार,
उच्च श्रेणी लिपिक,
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

हमारे देश के संविधान के 8 वीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है । उन भाषाओं में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ जिसका वर्णन भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(क) में है । हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा और राजभाषा होने के साथ हीं विश्व में भारत की सांस्कृतिक अस्मिता की संवाहक रही है ।

विश्व स्तर पर वर्त्तमान परिदृश्य में हम पाते हैं कि विश्व के लगभाग 93 देशों में हिंदी का या तो जीवन के विशेष क्षेत्रों में प्रयोग होता है या उन देशों में हिंदी के अध्ययन -अध्यापन की सम्यक व्यवस्था है । उल्लेखनीय है कि चीनी भाषा के बोलने वालों की संख्या जहां हिंदी भाषा से अधिक है परन्तु चीनी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिंदी की अपेक्षा सीमित है । वहीं अंग्रेजी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिंदी की अपेक्षा अधिक है, किन्तु हिंदी बोलने वालों की संख्या अंग्रेजी भाषियों से अधिक है ।

विश्व स्तर पर देशों को तीन भागों में बांट सकते है : -

1. भारतीय मूल के अप्रवासी नागरिकों की आबादी इन देशों की जनसंख्या के लगभग 40 प्रतिशत या उससे अधिक है । इन देशों के अधिकांश भारतीय मूल के अप्रवासी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग करते है । जैसे - मॉरिशस, सुरीनाम, फिजी, गुयाना, त्रिनिदाद एवं टोबैगो का नाम प्रमुख है ।

2. कुछ देशों में संयुक्त राज्य अमरिका, कनाडा, मैक्सिको, क्यूबा, रूस, ब्रिटेन, जर्मनी एवं दक्षिण अफ्रिका जैसे देशों में हिंदी को एक भाषा के रूप में सीखते, पढ़ते एवं लिखते हैं । इन देशों में विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी शिक्षा का प्रबंध है ।

3. विश्व के लगभग 60 देशों में भारत एवं पाकिस्तान के अतिरिक्त हिंदी एवं उर्दू मातृभाषियों की बहुत बड़ी संख्या उपलब्ध है । उन देशों में हिंदी की फिल्में देखना, गाना सुनना आम बात है।

जैसे - संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा, दक्षिण कोरिया, थाईलैंड, तजाकिस्तान एवं आस्ट्रेलिया आदि प्रमुख है ।

विश्व में हिंदी की पठन - पाठन : -

अमीर खूसरो से लेकर आजतक न जाने कितने रचनाकारों, भारतवंशियों ने सुदूर देशों में हिन्दी को एक सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में स्थापित किया है ।

वर्तमान में हिंदी की पढ़ाई चालीस से अधिक देशों के विश्वविद्यालयों में की जा रही है । उनमें मुख्यतः इटली, फ्रांस, स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क, स्वीटजरलैंड, जर्मनी, हंगरी एवं आस्ट्रेलिया के विश्वविद्यालयों में हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था है । यूनाईटेड किंगडम में लंदन, कैम्ब्रीज तथा यार्क विश्वविद्यालयों में एवं अमेरिका के येन विश्वविद्यालयों में तो सन् 1835 ई. से ही हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था है । फिजी में शिक्षा विभाग द्वारा संचालित सभी बाह्य परीक्षाओं में हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है ।

इस प्रकार कुछ महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय है जहां हिंदी पढ़ाया जा रहा है : -

1. ड्यूक यूनिवर्सिटी, अमेरिका
2. नॉर्थ कैरोलिना स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका
3. यूनिवर्सिटी ऑफ आयोवा, अमेरिका
4. यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोय, अमेरिका
5. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, इंग्लैंड
6. द यूनिवर्सिटी ऑफ एडीनबर्ग, स्कॉटलैंड
7. टोकियो यूनिवर्सिटी, जापान
8. संघाई इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, चीन
9. हैकुक यूनिवर्सिटी, कोरिया
10. यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्लैंड, न्यूजीलैंड
11. एलए ट्रोबे मेलबर्न यूनिवर्सिटी, आस्ट्रेलिया आदि प्रमुख है।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के योगदान में विदेशी मूल के व्यक्ति :

1. फादर कामिल बुल्के : फादर कामिल बुल्के का जन्म बेल्जियम में हुआ था परन्तु उन्होंने भारत आकर झारखण्ड के विद्यालय में पढ़ने लगें । बुल्के अभियांत्रिकी के छात्र होने के

बावजूद भारत की बोली में ऐसे रमें कि हिंदी के साथ ब्रज, अवधि और संस्कृत सिखें। तत्पश्चात उन्होंने 40 हजार से ज्यादा शब्दों का 'हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश' भी तैयार किया। वे सेंट जेवियर कॉलेज, रांची में हिंदी और अंग्रेजी के विभागाध्यक्ष रहे। उन्होंने बाइबिल का हिंदी अनुवाद भी किया।

2. रोनाल्ड स्टुअर्ट मेक ग्रेगॉर : वे न्यूजीलैंड के निवासी होने के बावजूद मैकग्रेगॉर ने हिंदी की शिक्षा 1959-60 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ली। उन्होंने सन् 1972 में हिंदी व्याकरण पर 'एन आउटलाईन ऑफ हिंदी ग्रामर' नामक पुस्तक की रचना का। वह सन् 1964 से 1967 तक कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में हिंदी पढ़ाते रहे।

3. डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन : डबलिन (आयरलैंड) में जन्में ग्रियर्सन का भाषाओं के प्रति काफी लगाव था। वे जब भारत में सन् 1873 ई. में भारतीय सविल सेवा के अधिकारी के तौर पर भारत आए थे तो उन्होंने कई भाषाओं वाले इस देश में भाषाओं का एक परिवार 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' की रचना की। यह ग्रन्थ कुल 21 जिल्दों में छपा था जो आज भी स्थायी महत्व की है।

4. प्रो. च्यांग चिंगरूवेई : प्रो. च्यांग लगभग 25 वर्षों से अधिक समय से पेईचिंग यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग से जुड़े है। उन्होंने हिंदी के प्रचार प्रसार में अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्हें 2007 में न्यूयॉर्क में आयोजित 8 वीं हिंदी सम्मेलन में हिंदी सेवा के लिए सम्मानित किया गया।

5. अकियो हागा : वे जापानी एवं हिंदी भाषा के विद्वान है। वे जापान में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए काम करते हैं।

6. पीटर वरन्निकोव : वे रूसी होने के बावजूद हिंदी के लिए समर्पित थे। उन्होंने रूस में हिन्दी सिनेमा पर केन्द्रित एक पत्रिका भी निकाली थी।

संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषाएं एवं हिंदी : -

संयुक्त राष्ट्र संघ की छः अधिकारिक भाषाएं हैं : - अंग्रेजी, रूसी, चीनी, फ्रेंच, स्पेनिश एवं अरबी।

हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की सांतवा अधिकारिक भाषा बनाने का आह्वान कई विश्व हिंदी सम्मेलनों में किया जाता रहा है। भोपाल में 10 वां विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन समारोह भाषण में भी भारतीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिहं ने इसकी मांग की थी। वर्धा में महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय एवं मॉरिशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना विश्व हिन्दी सम्मेलन की विशिष्ट उपलब्धियां रही है।

विश्व हिंदी सचिवालय : -

12 नवम्बर, 2002 को मॉरिशस की संसद में एक अधिनियम के अन्तर्गत विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की गई जिसका मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैः- हिंदी को विश्व भाषा में प्रोन्नत करना। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ का अधीकृत भाषा बनाने हेतु प्रयत्न करना। विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठों की स्थापना करना। अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलों का आयोजन करना। अंतर्राष्ट्रीय हिंदी पुस्तकालय की स्थापना करना।

हिंदी में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, संगोष्ठी तथा समूह विचार-विमर्श एवं चर्चा का आयोजन करना आदि।

आज भूमंडलीकरण के दौर में इंटरनेट की महत्वपूर्ण भूमिका है। इंटरनेट पर हिंदी का बढ़ता प्रचार - प्रसार इसका प्रमुख उदाहरण है। इंटरनेट पर ब्लॉगो की भरमार है। भले ही इसकी रफ्तार कम है। गूगल के मुताबिक लगभग 20 प्रतिशत भारतीय उपभोक्ता हिंदी में इंटरनेट सर्फिंग पसन्द करते हैं। गूगल ने हिंदी वेब डॉट कॉम से एक ऐसी सेवा प्रारम्भ की है जो इंटरनेट पर हिंदी में उपलब्ध समस्त सामाग्री को एक जगह ला सकती है।

उनकी स्थिति इस प्रकार हैः -

लगभग केन्द्र और राज्य सरकारों की 9 हजार वेबसाइट हिन्दी में उपलब्ध है। वर्तमान में 15 से अधिक सर्च ईंजन है जो आसानी से हिंदी में अनुवाद करते हैं। गूगल, याहू और फेसबुक हिंदी में उपलब्ध है।

10 वें हिंदी सम्मेलन में ट्वीटर की तरह मूषक नामक सोशल नेटवर्किंग साईट भी हिंदी मे शुरू करने की घोषणा की गई। स्मार्ट फोन पर ट्रांसलेशन एप्प भी मौजूद है जो अंग्रेजी को हिंदी में और हिंदी को अंग्रेजी में अनुदित करते है।

वर्तमान में हिंदी की किताबों का डिजीटल या ई-संस्करण अमेजन औ फ्लिपकार्ट सहित कई बड़े स्टोर उपलब्ध करा रहे हैं। जिन्हें कम्प्यूटर / लैपटॉप / आईपैड या स्मार्टफोन पर घर बैठे या चलते फिरते आसानी से पढ़ा जा सकता है।

वर्तमान परिदृश्य में 10 वें हिंदी सम्मेलन भोपाल में हिंदी को प्रोत्साहन देने के साथ हाइटेक स्वरूप को बढ़ावा देने का स्थल बना। यहां माईक्रोसाफ्ट, गूगल, एप्पल जैसी विश्व की नामचीन सॉफ्टवेयर कम्पनियां एक छत के निचे जामा हुए।

निष्कर्ष : हम कह सकते हैं कि ग्लोबलाइजेशन के इस युग में हिंदी भी बाजार और मीडिया की जरूरत बन गई है। हिंदी भाषा का बोलबाला न सिर्फ भारत और पड़ोसी देशों में है बल्कि पूरे विश्व में इसका परचम फैल रहा है।

योग का जीवन में महत्त्व

श्री पप्पू गुप्ता
कनिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर

योग प्राचीन समय से मनुष्य को प्रकृति द्वारा दिया गया बहुत ही महत्वपूर्ण और अनमोल उपहार है, जो जीवन भर मनुष्य को प्रकृति के साथ जोड़कर रखता है। यह शरीर और मस्तिष्क के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए, इन दोनों को संयुक्त करने का सबसे अच्छा अभ्यास है। जिसके माध्याम से न केवल शरीर के अंगों बल्कि मन, मस्तिष्क और आत्मा में संतुलन बनाया जाता है।

योग का अभ्यास किसी के भी द्वारा किया जा सकता है, क्योंकि आयु, धर्म या स्वस्थ परिस्थितियों परे है। यह अनुशासन और शक्ति की भावना में सुधार के साथ ही जीवन को बिना किसी शारीरिक और मानसिक समस्याओं के स्वस्थ जीवन का अवसर प्रदान करता है। पूरे संसार में इसके बारे में जागरुकता को बढ़ावा देने के लिए, भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने, संयुक्त संघ की सामान्य बैठक में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रुप में मनाने की घोषणा करने का सुझाव दिया था, ताकि सभी योग के बारे में जाने और इसके प्रयोग से लाभ लें। योग भारत की प्राचीन परम्परा है, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी। आधुनिक जीवन में योग के प्रयोग के लाभों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के रुप में मनाने की घोषणा कर दी है।

व्यापक रूप से पतंजलि औपचारिक योग दर्शन के संस्थापक माने जाते हैं। पतंजलि के योग, बुद्धि नियंत्रण के लिए एक प्रणाली है। पतंजलि के अनुसार योग के 8 सूत्र बताए गए हैं, जो निम्न प्रकार से हैं -

1) यम -इसके अंतर्गत सत्य बोलना, अहिंसा, लोभ न करना, विषयासक्ति न होना और स्वार्थी न होना शामिल है।
2) नियम-इसके अंतर्गत पवित्रता, संतुष्टि, तपस्या, अध्ययन, और ईश्वर को आत्मसमर्पण शामिल हैं।
3) आसन - इसमें बैठने का आसन महत्वपूर्ण है
4) प्राणायाम- सांस को लेना, छोड़ना और स्थगित रखना इसमें अहम है।
5) प्रत्याहार - बाहरी वस्तुओं से, भावना अंगों से प्रत्याहार।
6) धारणा - इसमें एकाग्रता अर्थात एक ही लक्ष्य पर ध्यान लगाना महत्वपूर्ण है।
7) ध्यान - ध्यान की वस्तु की प्रकृति का गहन चिंतन इसमें शामिल है।
8) समाधि - इसमें ध्यान की वस्तु को चैतन्य के साथ विलय करना शामिल है।

योग के सभी आसनों से लाभ प्राप्त करने के लिए सुरक्षित और नियमित अभ्यास की आवश्यकता है। योग का अभ्यास आन्तरिक ऊर्जा को नियंत्रित करने के द्वारा शरीर और मस्तिष्क में आत्म-विकास के माध्यम से आत्मिक प्रगति को लाना है। योग के दौरान श्वसन क्रिया में ऑक्सीजन लेना और छोड़ना सबसे मुख्य वस्तु है। दैनिक जीवन में योग का अभ्यास करना हमें बहुत सी बीमारियों से बचाने के साथ ही भयानक बीमारियों; जैसे - कैंसर, मधुमेह (डायबिटीज़), उच्च व निम्न रक्त दाब, हृदय रोग, किडनी का खराब होना, लीवर का खराब होना, गले की समस्याओं और अन्य बहुत सी मानसिक बीमारियों से भी बचाव करता है।

हम योग से होने वाले लाभों की गणना नहीं कर सकते हैं, हम इसे केवल एक चमत्कार की तरह समझ सकते हैं, जिसे मानव प्रजाति को भगवान ने उपहार के रुप में प्रदान किया है। यह शारीरिक तंदरुस्ती को बनाए रखता है, तनाव को कम करता है, भावनाओं को नियंत्रित करता है, नकारात्मक विचारों को नियंत्रित करता है और भलाई की भावना, मानसिक शुद्धता, आत्म समझ को विकसित करता है साथ ही प्रकृति से जोड़ता है।यह भारतीयों के लिए गर्व का विषय है कि मन और शरीर को फिट रखने के लिए हमारी प्राचीन कला स्वीकार की गई और दुनिया भर में इसकी सराहना की गई है। भारत कई तरह के खजानों का देश है और हम दुनिया के साथ उनमें से सबसे अच्छे खजानों में से एक को साझा करते हुए बहुत प्रसन्न हैं।

भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की वर्ष 2017 – 18 के दौरान राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उपलब्धियाँ

भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर, सतत प्रगतिशील पथ पर अग्रणी है। ब्यूरो का मुख्यालय 'ख' क्षेत्र (नागपुर, महाराष्ट्र) में स्थित है तथा इसके अधीनस्थ कार्यालय 'क' क्षेत्र में 6, 'ख' क्षेत्र में 01 तथा 'ग' क्षेत्र में 10 कार्यालय स्थित है। जहां तक'क' क्षेत्र का सवाल है वहां सभी कार्यालयों में वर्ष 2017 में राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुसार पत्राचार किया गया एवं हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए अन्य विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 'ख' क्षेत्र मुख्यालय में भी हिंदी से संबंधित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा कार्यालय द्वारा हिंदी पत्राचार एवं हिंदी टिप्पण का निर्धारित लक्ष्य लगभग प्राप्त कर लिया गया है। 'ख' क्षेत्र स्थित कार्यालय में सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुसार हिंदी में पत्राचार किया गया तथा अन्य हिंदी से संबंधित गतिविधियां जैसे - हिंदी पखवाड़ा, हिन्दी कार्यशाला आदि का आयोजन किया गया। 'ग' क्षेत्र में ब्यूरो के दो कार्यालयों को छोड़कर सभी कार्यालय नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित हैं। जनवरी, 2017 से दिसंबर, 2017 हिंदी से संबंधित प्रगति का विवरण निम्नवत है :-

1. मुख्यालय में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक : दिनांक 31/03/2017 को महानियंत्रक महोदय की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 101 वीं बैठक का आयोजन किया गया जिसमें पिछली बैठक की कार्रवाई की पुष्टि की गई तथा तथा साथ ही अन्य महत्वपूर्ण विषयों जैसे - हिंदी प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा और अखिल भारतीय स्तर पर राजभाषा तकनीकी सेमिनार के आयोजन पर विचार - विमर्श किया गया। इसी तरह 102 वीं बैठक, दिनांक 22/06/2017 को, 103 वीं बैठक दिनांक 28/09/2017 को तथा 104 वीं बैठक, दिनांक 20/12/2017 को संपन्न हुई। इन बैठकों में तिमाही रिपोर्टों की समीक्षा, सभी प्रभाग / अनुभाग को कार्यालय सहायिका उपलब्ध कराया जाना, हिंदी पारंगत एवं हिंदी टंकण प्रशिक्षण कक्षा के आयोजन, धारा 3(3) का उल्लंघन, रिक्त हिंदी पदों को भरा जाना, अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन, राजभाषा नियम 10(4) के तहत अधीनस्थ कार्यालयों को अधिसूचित करना, हिंदी पुस्तकों की खरीद, राजभाषा निरीक्षण एवं हिंदी कवि गोष्ठी का आयोजन किया जाना आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई।

2. मुख्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन : श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक भारतीय खान ब्यूरो एवं मुख्य अतिथि श्री दिनेश पाटील, महालेखाकार, महालेखाकार ।। (लेखा व हकदारी), महाराष्ट्र, नागपुर ने सिविल लाइन्स स्थित मुख्यालय में दिनांक 01/09/2017 को दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उदघाटन किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक ने दैनंदिन कार्यालयीन कार्य अधिकाधिक हिंदी में ही करने पर बल दिया। साथ ही उन्होंने हिंदी पखवाड़े के दौरान पूरा कार्य हिंदी में ही करने का आह्वान किया। उन्होंने भारतीय खान ब्यूरो मुख्यालय में हिंदी संबंधित कार्यों में हो रही प्रगति की सराहना की तथा इसमें और वृद्धि की आशा जताई।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री दिनेश पाटील ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी में कार्य करना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने अधिकाधिक कार्य हिंदी में ही करने का आह्वान किया। उन्होंने खान मंत्रालय द्वारा खनन एवं खनिज तकनीकी शब्दावली के निर्माण में भारतीय खान ब्यूरो के योगदान की सराहना की।

इसके पूर्व राजभाषा अधिकारी डॉ. पी. के. जैन ने स्वागत भाषण दिया तथा भारतीय खान ब्यूरो कार्यालय की हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसके अंतर्गत वर्षभर का लेखा - जोखा प्रस्तुत किया गया। श्री प्रमोद सांगोले, उप-निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाली

विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रमोद सांगोले, उप-निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 01/09/2017 से 12/09/2017 के बीच विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे - हिंदी सामान्य एवं तकनीकी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी प्रशनेत्तरी प्रतियोगिता, हिंदी तात्कालिक वाक प्रतियोगिता एवं हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अधिक से अधिक कार्मिकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ये प्रतियोगिताएं हिंदी एवं हिंदीत्तर भाषी वर्गों के लिए अलग - अलग आयोजित की गईं। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़ -चढ़कर हिस्सा लिया।

दिनांक 19/09/2017 को भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर में महानियंत्रक महोदय श्री रंजन सहाय की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर एन.आई.टी. नागपुर के भूतपूर्वप्रधानाध्यापक डॉ. सुरेन्द्र विनायक गोले मुख्य अतिथि केरूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की हिंदी गृह पत्रिका 'खान भारती' का विमोचन भी किया गया।

इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक ने राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया और कहा कि यह हम सबका कर्तव्य है कि हम अपना सरकारी कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में ही करें। उन्होंने भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय) नागपुर की हिंदी गृह पत्रिका 'खान भारती' के प्रकाशन की प्रशंसा की और आशा जाहिर की कि उक्त पत्रिका का प्रकाशन भविष्य में भी अनवरत जारी रहेगा। इसके पूर्व सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. सुरेन्द्र विनायक गोले ने कहा कि यदि हर व्यक्ति अपने अंदर ईश्वर का अंश देखना चाहता है तो उसे अपने अंदर की श्रेष्ठता और उत्कृष्टता को ढुंढना होगा। उन्होंने आगे कहा कि हर व्यक्ति को यह प्रयत्न करना चाहिए कि उसका वर्तमान भूतकाल से ज्यादा अच्छा हो तथा साथ ही उसका भविष्य उसके वर्तमान से बेहतर हो।

इसके पूर्व श्री प्रमोद सांगोले, उप-निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी पखवाड़े के दौरान की गई गतिविधियों और विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन की जानकारी सभा के समक्ष रखी। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न हिंदी विषयक प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को महानियंत्रक महोदय, मुख्य अतिथि महोदय एवं राजभाषा अधिकारी के करकमलों से पुरस्कार वितरित किए गए।

हिंदी दिवस समारोह का आयोजन :-

दिनांक 14/09/2017 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री के. थॉमस, उप महानिदेशक (सांख्यिकी) द्वारा की गई। कार्यक्रम के आरंभ में श्री प्रमोद सांगोले, उप-निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी दिवस मनाने की पार्श्वभूमी एवं उसके महत्व से अवगत कराया गया। तत्पश्चात डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी द्वारा माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी का संदेश वाचन किया गया तथा श्री के. थॉमस, उप महानिदेशक (सांख्यिकी) द्वारा माननीय खान मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी के संदेश का पठन किया गया।

3. अनुवाद कार्य :- प्रथम तिमाही में मुख्यालय स्थित अन्य प्रभागों / अनुभागों से अनुवाद हेतु करीब 95 पृष्ठों की प्राप्त सामग्री / पत्रों / दस्तावेजों का अनुवाद कार्ययथासमय प्रस्तुत किया गया। तकनीकी सचिव, भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर से प्राप्त करीब 50 पृष्ठों का आउट कम बजट 2017-18 की रिपोर्ट का हिंदी अनुवाद एवं हिंदी टंकण कर प्रेषित किया गया। खनिज अर्थशास्त्र प्रभाग, भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर से प्राप्त 35 पृष्ठों की सामग्री का हिंदी अनुवाद एवं टंकण कार्य किया गया।

द्वितीय तिमाही में मुख्यालय स्थित अन्य प्रभागों / अनुभागों से अनुवाद हेतु करीब 80 पृष्ठों की प्राप्त सामग्री / पत्रों / दस्तावेजों का अनुवाद कार्य यथासमय प्रस्तुत किया गया।

तृतीय तिमाही में मंत्रालय से प्राप्त कोयला एवं इस्पात पर स्थायी समिति से संबंधित 25 पृष्ठों का हिंदी अनुवाद किया गया एवं टंकित कर उसे मंत्रालय को प्रेषित किया गया । साथ ही तकनीकी सचिव अनुभाग से प्राप्त भारतीय खान ब्यूरो की पुनर्संरचना से संबंधित 100 पृष्ठों की सामग्री का हिंदी अनुवाद किया गया एवं टंकित कर उसे प्रेषित किया गया।

चौथी तिमाही में मुख्यालय स्थित अन्य प्रभागों / अनुभागों से अनुवाद हेतु करीब 50 पृष्ठों की प्राप्त सामग्री / पत्रों / दस्तावेजों का अनुवाद कार्ययथासमय प्रस्तुत किया गया । साथ ही कोयला एवं इस्पात पर लोकसभा समिति (2017-18) से संबंधित 21 पृष्ठों की सामग्री का हिंदी अनुवाद किया गया तथा उसे हिंदी टंकण कर प्रेषित किया गया । राजपत्रित अनुभाग से प्राप्त भर्ती नियम से संबंधित 11 पृष्ठों की सामग्री का हिंदी अनुवाद किया गया । इसी तरह अराजपत्रित अनुभाग से प्राप्त भर्ती नियम से संबंधित 12 पृष्ठों की सामग्री का हिंदी अनुवाद किया गया । तत्पश्चात खान मंत्रालय, नई दिल्ली की वार्षिक रिपोर्ट के 70 पृष्ठों का हिंदी अनुवाद किया गया तथा उसे हिंदी टंकण कर प्रेषित किया गया।

4. राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन :- भारतीय खान ब्यूरो, (मुख्यालय) नागपुर में दिनांक 25 मई, 2017 को श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक, भारतीय खान ब्यूरो की अध्यक्षता में 'नए परिदृश्य में खनिज संरक्षण, विकास एवं पर्यावरण की चुनौतियां' विषय पर अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया । इस अवसर पर श्री सी.एस. गुंडेवार, भूतपूर्व महानियंत्रक, भारतीय खान ब्यूरो मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का उद्‌घाटन हुआ । श्री सी. एस.गुंडेवार, ने अपने संबोधन में हिंदी में किए जा रहे तकनीकी सेमिनार की भूरि-भूरि प्रशंसा की । साथ ही इस प्रकार के तकनीकी सेमिनार को राष्ट्रीय स्तर पर भी किए जाने हेतु प्रेरित किया ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक, भारतीय खान ब्यूरो ने हिंदी से जुड़े समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके द्वारा किए जा रहे सराहनीय कार्यों के लिए बधाई दी तथा एक साथ दो - दो पत्रिकाओं के विमोचन हेतु धन्यवाद भी दिया ।

इसके पूर्व डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी द्वारा कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा रखी गई । इस कार्यक्रम में तकनीकी विषयों पर एक स्मारिका तथा भारतीय खान ब्यूरो की गृह पत्रिका, खान भारती का भी विमोचन किया गया ।

राजभाषा तकनीकी सेमिनार का कार्यक्रम दो सत्रों में आयोजित किया गया जिसमें पूर्वाह्न में 5 आलेख तथा अपराह्न में 6 आलेख तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन द्वारा प्रस्तुत किए गए । प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री एस. तियू, खान नियंत्रक (मध्य) ने की तथा श्रीमती वर्षा घरोटे, खनिज अधिकारी (आसूचना) ने रिपोटिऱ्यर की भूमिका निभाई । द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री एस. के. अधिकारी, मुख्य खनन भूविज्ञानी ने की तथा श्री जे.पी.मिश्रा, सहायक अनुसंधान अधिकारी ने रिपोटिऱ्यर की भूमिका निभाई ।

कार्यक्रम का सूत्र संचालन श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप - निदेशक (राजभाषा) ने किया तथा आभार प्रदर्शन श्री जगदीश अहरवार, हिंदी आशुलिपिक द्वारा किया गया । उक्त सेमिनार के सफलतापूर्वक आयोजन में श्री प्रमोद सांगोले, उप-निदेशक (राजभाषा) के नेतृत्व में हिंदी अनुभाग के सर्वश्री राजीव कुलश्रेष्ठ, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, असीम कुमार, हिंदी अनुवादक, श्री किशोर पारधी, हिंदी अनुवादक, श्रीमती मिताली चटर्जी, हिंदी अनुवादक, श्री जगदीश अहरवार, आशुलिपिक तथा श्री प्रदीप कुमार सिन्हा, हिंदी टंकक का विशेष योगदान रहा ।

सेमिनार के प्रथम सत्र में कुल 6 आलेख प्रस्तुत किए गए जो निम्न प्रकार है :-

'खनिज संरक्षण, विकास एवं पर्यावरण सुरक्षा की पृष्ठभूमि में भारतीय खान ब्यूरो की अहम भूमिका ओर कार्यकुशलता' विषय पर आलेख प्रस्तुत करते हुए लेखक डॉ. पी के जैन ने भारतीय खान ब्यूरो के प्रमुख लक्ष्यों और प्रदत्त सेवाओं का जिक्र किया । भारतीय खान ब्यूरो का प्रमुख लक्ष्य खानों के विनियम के निरीक्षण, खनन योजनाओं के

अनुमोदन और पर्यावरण प्रबंधन, योजनाओं के माध्यम से देश के तटीय ओर अपतटीय विकास को बढ़ावा देना है ताकि पर्यावरण पर होने वाले दुष्प्रभाव को कम से कम किया जा सके। अपने आलेख में उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला है कि खनन के कारण पर्यावरण को होने वाले नुकसान गंभीर चिंता का विषय है । इस कार्य से जुड़ी पर्यावरा प्रबंधन योजना में इस बात की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए कि खनन के कारण पर्यावरण का कम से कम नुकसान हो, खान क्षेत्र को फिर से पुरानी स्थिति में लाने के उपाय किए जाएं और निर्धारित मानकों के अनुसार वहां संपोषित विकास किया जाए ।

'नए परिदृश्य में खनिज संरक्षण, विकास और पर्यावरण की चुनौतियां' विषय पर अपने आलेख में लेखक श्री अनुपम नंदी ने झारखंड राज्य के बाक्साइट उतपादन, बाक्साइट खनिज के संरक्षण की स्थिति, खनिज दोहन के उपरांत भूमि उद्धार और पुनःस्थापना तथा बाक्साइट खनन क्षेत्र में वृक्षारोपण की स्थिति का जिक्र किया हे । अपने आलेख में उन्होंने जानकारी दी है कि झारखंड राज्य के लोहरदगा, गुमला एवं लतिहार जिलों के बाक्साइट खनन क्षेत्र में वृक्षारोपण का कार्य वृहत पैमाने पर किया गया है ।

श्री एन वी नागदेवते ने 'नए परिदृश्य में खनिज संरक्षण, विकास और पर्यावरण की चुनौतियां' विकास के साथ पर्यावरण संतुलन के प्रयास विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया । अपने आलेख में उन्होंने खनन के कारण होने वाले पर्यावरण की क्षति का जिक्र करते हुए कहा है कि आज पूरे विश्व का ध्यान इस गंभीर समस्या की ओर हे ओर खनन की आधुनिक पद्धति विकसित किए जाने पर बल दियाजा रहा है ताकि पर्यावरण को कम से कम हानि पहुंचे । उन्होंने जानकारी दी कि न्यायाधीश शाह आयोग की रिपोर्ट की अनुशंसाओं को आधार मानकर खनन से संबंधित सभी विधायी कानूनों को नए सिरे से परिभाषित करने का कार्य किया जा रहा है ।

श्री बी. एल यादव ने 'नए परिदृश्य में खनिज विकास और खनिज संरक्षण में मीडिया की भूमिका विषय पर अपनार आलेख प्रस्तुत किया । उन्होंने खनन पर्यावरण के क्षेत्र में व्यापकचेतना लाने में मीडिया की भूमिका का जिक्र करते हुए कहा है कि समाचार पत्रों, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, इंटरनेट आदि के माध्यम से खनन पर्यावरण संरक्षण अपशिष्ट प्रबंधन प्रदूषण नियंत्रण से संबंधित जानकारी आसानी से संप्रेषित की जा सकती है ।

पाँचवां आलेख 'मैंगनीज खनन एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं'श्री मुजीब उद्दीन सिद्दीकी एवं श्री जयपाल पडोले द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसमें उन्होंने मैंगनीज की पक्रृति का वर्णन किया है । साथ ही, मैंगनीज खनन से जुड़े लोगों के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का भी जिक्र किया गया है तथा मैंगनीज खदानों एवं खनिज उद्योगों से जुड़े हुए कार्मिकों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए संक्रमण से बचने के अनेक उपाय सुझाए गए हैं ।

'स्वर्ण की मांग एवं भारतीय अर्थव्यवस्था' विषय पर आलेख डॉ. शैलेन्द्र कुमार शमी द्वारा प्रस्तुत किया गया । इसमें स्वर्ण की प्रकृति का वर्णन करते हुए सोने के भंडार का आलकन किया गया है । साथ ही, भारत में स्वर्ण का उत्पादन तथा उपभोग और मांग का जिक्र करते हुए स्वर्ण के आयात के चलते भारत के सराकरी खजाने पर बढ़ते बोझ की भी बात की गई है ।

सेमिनार के द्वितीय सत्र में कुल पांच आलेख प्रस्तुत किए गए जो निम्न प्रकार है :-

श्री सुनील कुमार शर्मा ने 'राजपुरा दरीबा सीसा-जस्ता खदान की राकयांत्रिकी गुणों का अध्ययन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने रॉकयांत्रिकी गुणों के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि कई वर्षों से राजपुरा दरीबा खदान के निरंतर उत्पादन करने के कारण इस खदान की सतह से भूमिगत गहराई करीब 700 मीटर तक पहुंच चुकी है । इतनी गहराई में खनन करने के लिए आवश्यक है कि खदान खनन प्रक्रिया के दौरान स्थिर रहे । इसके लिए खनन प्रक्रिया एवं सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक तरीके से की जाए।

द्वितीय सत्र का दूसरा आलेख 'खुली खदान क्षेत्रों में भूमि सुधार का महत्व' था जिसके लेखकश्री पुखराज नेणिवाल

है । उन्होंने खुली खनन प्रक्रिया के दुष्प्रभावों का जिक्र करते हुए कहा है कि खुली खदान खनन प्रक्रिया में खराब हुई भूमि का सुधार करना खराब पारिस्थितिकी तंत्र को पुनः आत्मनिर्भर बनाने की प्रक्रिया के लिए अनिवार्य हिस्सा है ।

'खान एवं खनिज क्षेत्र से संबंधित सूचना का प्रसार आई बी एम ई बुक रीडर द्वारा' विषय पर आलेख संयुक्त रूप से श्री एम. एम. सोमण, श्री गौरव शर्मा द्वारा लिखा गया है । इसे प्रस्तुत करते हुए श्री गौरव शर्मा ने कहा कि 21वीं सदी के अहाते पर खड़ी भारत सरकार ने बदलते नवीन परिदृश्य में सूचना क्रांति को मोबाइल एप्प से जोड़कर नीवन क्रांति को जन्म दिया है । भारतीय खान ब्यूरो भी नवीन तकनीकों में स्वयं को सशक्त बनाने को आतुर है ।

द्वितीय सत्र का चौथा आलेख' दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस) के सदस्य देशों में खनिज संसाधन एवं उनका विकास' था जिसे श्री चन्द्रशेखर तिवारी द्वारा प्रस्तुत किया गया । उन्होंने अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि समुद्र तल से खनन, दक्षेस देशों जैसे भारत, बांग्लादेश, श्रीलंका, और मालदीव के लिए खनिजों का एक नवीन स्रोत है। हिंद महासागर में खनिज गवेषण के कार्य की काफी संभावनाएं हैं ।

द्वितीय सत्र का अंतिम आलेख 'भारत का क्रोमाइट भंडार एवं उद्योग' डॉ. शैलेन्द्र कुमार शमी द्वारा प्रस्तुत किया गया । इसमें भारत में क्रोमाइट के भंडारों के बारे में जानकारी दी गई है और क्रोमाइट के भंडार एवं उद्योग का आकलन किया गया है ।

सेमिनार में सभी लेखकों ने अपने आलेख पावर प्वाइंट द्वारा बहुत ही सुंदर एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। सभी आलेख भारतीय खान ब्यूरो की कार्यशैली से संबंधित थे एवं लेखकों ने उन्हें तैयार करने में काफी परिश्रम किया । इन आलेखों को एक स्मारिका केरूप में मुद्रित एवं प्रकाशित किया गया । इस स्मारिका का अनावरण सेमिनार में मुख्य अतिथि महोदया के कर - कमलो द्वारा किया गया । भारतीय खान ब्यूरो द्वारा आयोजित यह एक दिवसीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी के मार्गदर्शन एवं श्री प्रमोद सांगोले, उप-निदेशक (राजभाषा) की देखरेख में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ ।

5. **हिंदी कार्यशाला का आयोजन :-** मुख्यालय में दिनांक 21 मार्च, 2017 से 22 मार्च, 2017 तक दो अर्ध दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 30 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । हिंदी कार्यशाला का उदघाटन करते हुए डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी ने हिंदी कार्यशाला की उपयोगिता की जानकारी प्रतिभागियों को दी । दो दिनों के उक्त हिंदी कार्यशाला में चार व्याख्यान दिए गए । व्याख्यान के विषय थे - (1) राजभाषा नीति (2) राष्ट्रीय खनिज सूची का महत्व (3) हिंदी - अंग्रेजी वाक्य संरचना तथा (4) मानक शब्दावली । 'राजभाषा नीति' विषय पर व्याख्यान डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी द्वारा दिया गया । श्री सी. एस.तिवारी, खनिज अर्थशास्त्री ने 'राष्ट्रीय खनिज सूची का महत्व' विषय पर व्याख्यान दिया ।

तत्पश्चात दिनांक 19 एवं 20 जून, 2017 को अधिकारियों व कर्मचारियों हेतु दो अर्ध दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस हिंदी कार्यशाला में कुल 12 अधिकारियों एवं 17 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यशाला में विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों के व्याख्याताओं ने अलग - अलग विषयों पर अपने व्याख्यान दिए। इसमें भारतीय खान ब्यूरो के उप निदेशक (राजभाषा) श्री प्रमोद सांगोले ने राजभाषा नीति, महालेखाकार कार्यालय के श्री सतीश दुबे, हिंदी अधिकारी ने वर्तनी बोध, भारतीय खान ब्यूरो के श्री असीम कुमार, हिंदी अनुवादक ने पारिभाषिक शब्दावली, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे कार्यालय के श्री आर. के. दास, सचिव, नराकास (का -2), नागपुर ने टिप्पण आलेखन तथा वेस्टर्न कोल फिल्ड लिमिटेड कार्यालय केश्री मनोज कुमार, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने हिंदी - अंग्रेजी वाक्य संरचना आदि विषयों पर अपने व्याख्यान दिए ।

अपने व्याख्यान में श्री प्रमोद सांगोले, उप निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी कार्यशाला के उद्देश्य और महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी कार्यशाला का आयोजन भारत सरकार की राजभाषा नीति का ही एक अंग है । उन्होंने

प्रतिभागियों के समक्ष भारत सरकार की राजभाषा नीति की विस्तृत जानकारी दी । श्री आर. के. दास, सचिव, नराकास (का -2), नागपुर द्वारा टिप्पण - आलेखन का अभ्यास कराया गया तथा श्री मनोज कुमार ने हिंदी - अंग्रेजी वाक्य - संरचना को विस्तार से समझाते हुए कंप्यूटर पर हिंदी के प्रयोग की भी जानकारी दी । श्री असीम कुमार ने पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा से प्रतिभागियों को अवगत कराते हुए शब्दावली का अभ्यास कराया । कार्यशाला में सभी प्रतिभागियों ने अपनी विशेष रूचि दिखाते हुए व्याख्याताओं से अपनी समस्याओं का निवारण किया साथ ही ऐसी कार्यशाला समय - समय पर नियमित रूप से आयोजित किए जाने की इच्छा व्यक्त की ।

इसी तरह दिनांक 14/09/2017 को हिंदी दिवस समारोह के उपरांत हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर व्याख्याता के रूप में हिंदी शिक्षण योजना, नागपुर के हिंदी प्राध्यापक डॉ. सोमपाल सिंह उपस्थित थे । उन्होंने भारत सरकार की 'राजभाषा नीति एवं उसका कार्यान्वयन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सभा में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समक्ष राजभाषा नीति की विस्तृत व्याख्या की तथा उसके कार्यान्वयन के विभिन्न पहलूओं पर प्रकाश डाला । इस तरह हिंदी दिवस समारोह एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ । समारोह का संचालन श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप निदेशक (राजभाषा) ने किया ।

दिनांक 12/12/2017 को केवल एम.टी.एस. कर्मचारियों हेतु एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें भारतीय खान ब्यूरो मुख्यालय में कार्यरत 27 एम.टी.एस. कर्मचारियों ने भाग लिया । कार्यशाला में भारतीय खान ब्यूरो कार्यालय के व्याख्याताओं ने अलग - अलग विषयों पर अपने व्याख्यान दिए। इसमें भारतीय खान ब्यूरो के डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी ने राजभाषा नीति, श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप - निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी तिमाही रिपोर्ट व हिंदी - अंग्रेजी वाक्य संरचना तथा श्री असीम कुमार, हिंदी अनुवादक ने टिप्पण - आलेखन विषयों पर अपने व्याख्यान दिए ।

6. भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-2), नागपुर द्वारा राजभाषा पुरस्कार :- भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-2), नागपुर द्वारा दो राजभाषा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है । भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की हिंदी गृह - पत्रिका 'खान भारती' को वर्ष 2016 के लिए 'तृतीय पुरस्कार' प्राप्त हुआ है । साथ ही वर्ष 2016 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में इस कार्यालय को 'विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार' मिला है । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-2), नागपुर द्वारा दिनांक 26 मई, 2017 को आयोजित छमाही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में उक्त पुरस्कार प्रदान किए गए । भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की ओर से डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी तथा श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप निदेशक (राजभाषा) ने पुरस्कार ग्रहण किए ।

7. राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण :- वर्ष भर के दौरान भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर के सोलह प्रभागों / अनुभागों, यथा लेखा अनुभाग, खान नियंत्रक (मध्य), सतर्कता अनुभाग, जी. एम. एण्ड एम. एम. सेल, बजट अनुभाग, केंद्रीय पुस्तकालय, भारतीय खान ब्यूरो प्रेस, लेखा परीक्षा अनुभाग, तकनीकी सचिव अनुभाग, खनिज अर्थशास्त्र प्रभाग, भंडार अनुभाग, खनिज सांख्यिकी प्रभाग, राजपत्रित अनुभाग, अराजपत्रित अनुभाग, सामान्य अनुभाग एवं रोकड़ अनुभाग का राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से निरीक्षण किया गया । इन प्रभागों / अनुभागों के निरीक्षण के दौरान पाए गए तथ्यों से संबंधित अनुभागों को निरीक्षण रिपोर्टद्वारा अवगत कराया गया । इसके साथ ही वर्ष के दौरान भारतीय खान ब्यूरो के अधीनस्थ कार्यालयों यथा अयस्क प्रसाधन प्रयोगशाला, बेंगलोर (30/06/2017), क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर (09/10/2017), क्षेत्रीय कार्यालय,

अजमेर (27/10/2017) एवं अयस्क प्रसाधन प्रयोगशाला, अजमेर(27/10/2017) का भी राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से निरीक्षण किया गया ।

8. राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार योजना :- हिंदी मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना में वर्ष 2015 -16 के लिए भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर समेत 11 अधीनस्थ कार्यालयों के कुल 43 कार्मिकों ने भाग लिया एवं सभी को पुरस्कृत किया गया । उक्त प्रोत्साहन पुरस्कार योजना में भाग लेने वाले प्रतिभागियों में मुख्यालय, नागपुर से पाँच, खनिज प्रसंस्करण प्रभाग, नागपुर से चार, क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर से तीन, खनिज प्रसंस्करण प्रभाग, अजमेर से चार, क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर से पाँच, क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून से छः, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरू से तीन, क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा से चार, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद से चार, क्षेत्रीय कार्यालय, गोवाहाटी से एक तथा आँचलिक कार्यालय, बेंगलुरू से चार कार्मिक सम्मिलित थे ।

उक्त प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार केरूप में क्रमशः रू. 5000/-, रू. 3000/- तथा रू. 2000/- की राशि प्रदान की गई ।

9. खनन एवं खनिज तकनीकी शब्दावली का निर्माण :- खान मंत्रालय द्वारा खनन एवं खनिज तकनीकी शब्दावली का निर्माण किया जा रहा है । इसके लिए खान मंत्रालय के अधीन सभी विभागों से उनसे संबंधित तकनीकी शब्द भेजने का अनुरोध किया गया था । इस उद्देश्य के लिए भारतीय खान ब्यूरो में श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक महोदय की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई जिसके सदस्य इस प्रकार हैं :-

1. डॉ पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री - सदस्य सचिव
2. श्री अभय अग्रवाल, क्षेत्रीय खान नियंत्रक - सदस्य
3. श्री सी.एस. तिवारी, खनिज अर्थशास्त्री (सेवानिवृत) - सदस्य
4. श्री जुनैद फारूकी, निदेशक (सांख्यिकी) - सदस्य
5. श्री ए. डी. गुप्ता, सहायक खनन भूविज्ञानी - सदस्य
6. श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप निदेशक (राजभाषा) - सदस्य
7. श्री जे. पी. मिश्रा, सहायक अनुसंधान अधिकारी (सेवानिवृत) - सदस्य

उक्त समिति द्वारा शब्दावली निर्माण के संबंध में अनेक बैठकें आयोजित की गईं तथा खान एवं खनिज से संबंधित करीब पन्द्रह सौ तकनीकी शब्दों का चयन एवं संकलन किया गया तथा खान मंत्रालय को प्रेषित किया गया । उक्त शब्दों का चयन एवं संकलन डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री - सदस्य सचिव के मार्गनिर्देशन में किया गया । इस प्रकार खान मंत्रालय द्वारा खनन एवं खनिज तकनीकी शब्दावली के निर्माण में भारतीय खान ब्यूरो ने अपना महत्वपूर्णयोगदान दिया है ।

खान मंत्रालय द्वारा तकनीकी शब्दावली के निर्माण के संबंध में नई दिल्ली में आयोजित बैठक की आवश्यक तैयारी की गई । बैठक में डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी एवं श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप निदेशक (राजभाषा) ने भारतीय खान ब्यूरो की ओर से भाग लिया ।

10. हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन :- हिंदी पखवाड़े के दौरान केंद्रीय पुस्तकालय, भारतीय खान ब्यूरो के सहयोग से राजभाषा पुस्तक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई जिसमें राजभाषा, कम्प्यूटर, तकनीकी, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास, पर्यटन, महान व्यक्तित्व, खेल-कूद साहित्य, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, काव्य, नाटक, उपन्यास एवं कहानियां विषयक पुस्तकें प्रदर्शित की गई ।

इन सभी कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी के मार्गदर्शन में तथा श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप - निदेशक (राजभाषा) के नेतृत्व में किया गया ।

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उपलब्धियाँ

दिनांक 25/05/2017 को आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार के उद्‌घाटन अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक खान ब्यूरो, नागपुर।

दिनांक 25/05/2017 को आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार के उद्‌घाटन के अवसर पर 'स्मारिका' का विमोचन।

दिनांक 25/05/2017 को आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार के उद्‌घाटन के अवसर पर हिंदी गृह - पत्रिका 'खान भारती' का विमोचन।

दिनांक 19 एवं 20/06/2017 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी, भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर।

दिनांक 19 एवं 20/06/2017 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में भाग ले रहे प्रतिभागीगण

हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए डॉ. सोमपाल सिंह ।

खान मंत्रालय द्वारा आयोजित तकनीकी शब्दावली के निर्माण के संबंध में नई दिल्ली में आयोजित बैठक में भाग लेते हुए डॉ. पी. के. जैन , मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी एवं श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप निदेशक (राजभाषा)।

दिनांक 12/12/2017 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी ।

दिनांक 26 मई, 2017 को आयोजित छमाही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. पी. के. जैन,मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी तथा श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप निदेशक (राजभाषा) ।

भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर में दिनांक 31/08/2017 को नराकास (का-2) नागपुर के तत्वावधान में आयोजित राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागीगण ।

दिनांक 12/12/2017 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप - निदेशक (राजभाषा) ।

12. भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय में नराकास (का-2) नागपुर के तत्वावधान में राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन :- भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर में दिनांक 31/08/2017 को नराकास (का-2), नागपुर के तत्वावधान में राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिता में 20 कार्यालयों के 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया । उक्त प्रतियोगिता का उदघाटन श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक, भारतीय खान ब्यूरो द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी भी उपस्थित थे। प्रतियोगिता के पश्चात श्री प्रमोद एस. सांगोले द्वारा प्रतिभागियों के बीच प्रतिभागिता प्रमाण - पत्र भी वितरित किए गए।

13. राजभाषा नियम 10(4) के तहत अधीनस्थ कार्यालयों का अधिसूचित होना :- पूर्व में भारतीय खान ब्यूरो केचौदह कार्यालय राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित थे। हाल ही में इसके तीन क्षेत्रीय कार्यालयों गांधीनगर, रायपुर और भुवनेश्वर को अधिसूचित कर दिया गया है। इस प्रकार भारतीय खान ब्यूरो के कुल सतरह कार्यालय राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित हो गए हैं। शेष दो कार्यालयों खान नियंत्रक (मध्य) तथा खनिज प्रसंस्करण प्रभाग, हिंगणा, नागपुर को अधिसूचित कराने हेतु कार्रवाई की जा रही है।

भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय, नागपुर में दिनांक 12/12/2017 को एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन

भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार - प्रसार व प्रगति के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय, नागपुर में दिनांक 12 दिसंबर, 2017 को एम.टी.एस. कर्मचारियों हेतु एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में कुल 27 एम.टी.एस. कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यशाला में भारतीय खान ब्यूरो कार्यालय के व्याख्याताओं ने अलग - अलग विषयों पर अपने व्याख्यान दिए । इसमें भारतीय खान ब्यूरो के डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी ने राजभाषा नीति, श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप - निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी तिमाही रिपोर्ट व हिंदी - अंग्रेजी वाक्य संरचना तथा श्री असीम कुमार, हिंदी अनुवादक ने टिप्पण - आलेखन आदि विषयों पर अपने व्याख्यान दिए।

अपने व्याख्यान में डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी ने हिंदी कार्यशाला के उद्देश्य और महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी कार्यशाला का आयोजन भारत सरकार की राजभाषा नीति का ही एक अंग है। उन्होंने प्रतिभागियों के समक्ष भारत सरकार की राजभाषा नीति की विस्तृत जानकारी दी। श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप - निदेशक (राजभाषा) ने हिंदी तिमाही रिपोर्ट भरने में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने हेतु जानकारी देते हुए रिपोर्ट की आवश्यकता व इसकी महत्ता पर विस्तृत जानकारी दी तथा हिंदी - अंग्रेजी वाक्य संरचना को विस्तार से समझाते हुए कार्यालय के दैनंदिन कार्य में प्रयुक्त होने वाले शब्दों व वाक्यांशों की भी जानकारी दी।

श्री असीम कुमार ने टिप्पण - आलेखन का अभ्यास कराते हुए सरकारी पत्राचार के प्रकारों की जानकारी देते हुए इसके प्रारूपण से प्रतिभागियों को अवगत कराया साथ ही टिप्पण - प्रारूपण में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का भी अभ्यास प्रतिभागियों को कराया गया।

कार्यशाला में सभी प्रतिभागियों ने अपनी विशेष रूचि दिखाते हुए व्याख्याताओं से अपनी समस्याओं का निवारण किया साथ ही ऐसी कार्यशाला समय - समय पर नियमित रूप से आयोजित किए जाने की इच्छा व्यक्त की।

कार्यशाला के पश्चात सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला के विषय में उनकी प्रतिक्रियाएं भी प्राप्त की गई । सभी प्रतिभागियों ने सकारात्मक प्रतिक्रियाएं व्यक्त की तथा एम.टी.एस. कर्मचारियों हेतु ऐसी हिंदी कार्यशाला पुनः आयोजित कराने का सुझाव दिया । इस प्रकार हिंदी कार्यशाला सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

भारतीय खान ब्यूरो, मुख्यालय, नागपुर में विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन

भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार - प्रसार व प्रगति के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय खान ब्यूरो, (मुख्यालय), नागपुर में दिनांक 31 मई, 2018 को अधिकारियों हेतु एक पूर्ण दिवसीय विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस विशेष कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम क्षेत्र), नवी मुंबई की डॉ. (श्रीमती) सुनिता यादव, उप निदेशक एवं प्रभारी अधिकारी को खास तौर पर आमंत्रित किया गया था ।

सर्वप्रथम श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप निदेशक (राजभाषा) ने कार्यशाला में डॉ. (श्रीमती) सुनिता यादव का स्वागत किया और कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों का स्वागत करते हुए उन्हें आमंत्रित अतिथि महोदया का परिचय दिया और इस विशेष कार्यशाला के आयोजन की महत्ता बताई ।

डॉ. पी. के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में राजभाषा कार्यान्वयन की संक्षिप्त में जानकारी दी तथा कार्यशाला के आयोजन संबंधी उसकी आवश्यकता और महत्ता से अवगत कराया । इस अवसर पर डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी ने सभी उपस्थित अधिकारियों को यह खुशखबर दी कि भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का -2), नागपुर द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु द्वितीय पुरस्कार से तथा कार्यालय की हिंदी गृह - पत्रिका 'खान भारती' को भी द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया और सभी को इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी । तत्पश्चात डॉ. (श्रीमती) सुनीता यादव को अपना व्याख्यान देने हेतु मंच सौंपा गया ।

प्रथम सत्र :-

अपने व्याख्यान में डॉ. (श्रीमती) सुनीता यादव ने राजभाषा अधिनियम, नियम, नीति एवं हिंदी की संवैधानिक व्यवस्था की विस्तृत जानकारी दी । साथ ही गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा चलाई जाने वाली विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं और विभिन्न राजभाषा पुरस्कारों संबंधी विस्तृत जानकारी दी । अपने व्याख्यान में उन्होंने यह भी कहा कि राजभाषा हिंदी का प्रभावी रूप से कार्यान्वयन केवल हिंदी अनुभाग की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि कार्यालय के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का उत्तरदायित्व है । आगे उन्होंने हिंदी की बोलियों और लिपियों की भी जानकारी दी । डॉ. (श्रीमती) सुनीता यादव ने हमारे कार्यालय की गृह - पत्रिका 'खान भारती' की प्रशंसा की और इस पत्रिका को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से पुरस्कार पाने के लिए उपयुक्त सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि गृह - पत्रिका में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित जानकारी और सामान्य लेख / रचनाओं के अलावा कार्यालय से संबंधित तकनीकी विषयों पर लेख भी शामिल किए जाएं ।

द्वितीय सत्र :-

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में व्याख्यान देने हेतु श्री सोमपाल सिंह, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, नागपुर को आमंत्रित किया गया था । उन्होंने 'मिसिल पर कार्य' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। श्री सोमपाल सिंह, हिंदी प्राध्यापक ने मिसिल के प्रस्तुतीकरण की आवश्यकता व मिसिल कार्यों की उपयोगिता आदि पर विस्तृत जाकारी देते हुए मिसिल से संबंधित महत्वपूर्ण पहलू जैसे - टिप्पणी भाग, पत्राचार भाग, इसके प्रकार आदि की महत्ता बताई । इस दौरान उन्होंने प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान भी किया।

कार्यशाला में सभी प्रतिभागियों ने अपनी विशेष रूचि दिखाते हुए व्याख्याताओं से अपनी समस्याओं का निवारण किया साथ ही ऐसी कार्यशाला समय - समय पर नियमित रूप से आयोजित किए जाने की इच्छा व्यक्त की । कार्यशाला के पश्चात सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला के विषय में उनकी प्रतिक्रियाएं भी प्राप्त की गई । सभी प्रतिभागियों ने सकारात्मक प्रतिक्रियाएं व्यक्त की । इस हिंदी कार्यशाला में कुल 42 अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर में
अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन

भारतीय खान ब्यूरो, (मुख्यालय) नागपुर में दिनांक 19 अप्रैल, 2018 को श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक, भारतीय खान ब्यूरो की अध्यक्षता में 'संपोषित विकास के परिप्रेक्ष्य में खनन क्षेत्र की भूमिका' विषय पर अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. प्रमोद शर्मा, प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, राष्ट्र संत तुकडोजी महाराज, विश्वविद्यालय, नागपुर मुख्य अतिथि के रूप में तथा डॉ. जयशंकर पाण्डेय, मुख्य वैज्ञानिक, नीरी, नागपुर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपास्थित थे। दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का उद्‌घाटन हुआ। अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हमें सिर्फ सरकारी आंकड़ों तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि हिंदी के उत्तरोत्तर विकास के लिए ठोस कार्य करना चाहिए।

मुख्य अतिथि डॉ. प्रमोद शर्मा ने कहा कि हिंदी को दुरूह बनाने का प्रयास नहीं होना चाहिए बल्कि इसे जन-सामान्य की भाषा के अनुकूल बनाना चाहिए। विशिष्ट अतिथि श्री जयशंकर पाण्डेय ने कहा कि हिंदी से संबंधित अनेक ज्वलंत प्रश्न हमारे सामने खड़े हैं। हिंदी अभी भी उच्च शिक्षा का माध्यम नहीं बन पाई है, अतः इस विषय में ठोस उपाय किए जाने चाहिए। इसके पूर्व डॉ. पी.के. जैन, मुख्य खनिज अर्थशास्त्री एवं राजभाषा अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में भारतीय खान ब्यूरो द्वारा हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए गए कार्यों की जानकारी दी।

इस अवसर पर एक स्मारिका का विमोचन किया गया। राजभाषा तकनीकी समारोह का मंच संचालन श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप-निदेशक (राजभाषा) तथा धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती मिताली चटर्जी ने किया।

इस राजभाषा तकनीकी सेमिनार में भारतीय खान ब्यूरो के अलावा खान मंत्रालय के अन्य कार्यालयों / विभागों जैसे एमईसीएल, जेएनएआरडीडीसी, एनआईएमएच, नागपुर विश्वविद्यालय आदि के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

राजभाषा तकनीकी सेमिनार का कार्यक्रम दो सत्रों में आयोजित किया गया जिसमें पूर्वान्ह में कुल 6 आलेख तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत किए गए तत्पश्चात दूसरे सत्र में 8 आलेख तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत किए गए। अध्यक्ष के रूप में डॉ. पी.के. जैन एवं रिर्पोटर के रूप में श्रीमती वर्षा घरोटे एवं श्री पुखराज नेणिवाल ने अपना योगदान दिया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में हिंदी अनुभाग के सर्व श्री असीम कुमार, अनुवादक, श्री किशोर पारधी, अनुवादक, श्रीमती मिताली चटर्जी, अनुवादक, श्री जगदीश अहरवार, आशुलिपिक तथा श्री प्रदीप कुमार सिन्हा, हिंदी टंकक एवं श्री ए. के. नाल्हे का विशेष योगदान रहा।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का –2), नागपुर द्वारा भारतीय खान ब्यूरो, (मुख्यालय), नागपुर को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु सम्मान

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का - 2), नागपुर द्वारा भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर को वर्ष 2017 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया तथा कार्यालय की गृह पत्रिका 'खान भारती' को उत्कृष्ट पत्रिका की श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया। इस उपलब्धि पर महानियंत्रक महोदय श्री एन. के. सिंह ने कार्यालय को बधाई दी और आवाहन किया कि सभी कार्मिक अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करें और राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में और प्रगति करें।

हिंदी पखवाड़ा – 2017 – की रिपोर्ट

श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक भारतीय खान ब्यूरो एवं मुख्य अतिथि श्री दिनेश पाटील, महालेखाकार, महालेखाकार (लेखा व हकदारी) / ।।, महाराष्ट्र, नागपुर ने सिविल लाइन्स, नागपुर, स्थित मुख्यालय में दिनांक 01/09/2017 को दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उदघाटन किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक ने दैनंदिन कार्यालयीन कार्य अधिकाधिक हिंदी में ही करने पर बल दिया। साथ ही उन्होंने हिंदी पखवाड़े के दौरान पूरा कार्य हिंदी में ही करने का आवाहन किया। उन्होंने भारतीय खान ब्यूरो मुख्यालय में हिंदी संबंधित कार्यों में हो रही प्रगति की सराहना की तथा इसमें और वृद्धि की आशा जताई।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री दिनेश पाटील ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी में कार्य करना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने अधिकाधिक कार्य हिंदी में ही करने का आवाहन किया। उन्होंने खान मंत्रालयद्वारा खनन एवं खनिज तकनीकी शब्दावली के निर्माण में भारतीय खान ब्यूरो के योगदान की सराहना की।

इसके पूर्व राजभाषा अधिकारी डॉ. पी. के. जैन ने स्वागत भाषण दिया तथा भारतीय खान ब्यूरो कार्यालय की हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसके अंतर्गत वर्षभर का लेखा - जोखा प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात उन्होंने हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी दी।

हिंदी पखवाड़े के दौरान केंद्रीय पुस्तकालय, भारतीय खान ब्यूरो के सहयोग से राजभाषा पुस्तक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई जिसमें राजभाषा, कम्प्यूटर, तकनीकी, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास, पर्यटन, महान व्यक्तित्व, खेल-कूद साहित्य, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, काव्य, नाटक, उपन्यास एवं कहानियां विषयक पुस्तकें प्रदर्शित की गई।

हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 01/09/2017 से 12/09/2017 के बीच विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे हिंदी सामान्य एवं तकनीकी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिंदी तात्कालिक वाक प्रतियोगिता एवं हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अधिक से अधिक कार्मिकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ये प्रतियोगिताएं हिंदी एवं हिंदीत्तर भाषी वर्गों के लिए अलग - अलग आयोजित की गईं। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़ - चढ़कर हिस्सा लिया।

दिनांक 14/09/2017 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री के. थॉमस, उप महानिदेशक (सांख्यिकी) द्वारा की गई। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी द्वारा माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी का संदेश वाचन किया गया। श्री के. थॉमस, उप महानिदेशक (सांख्यिकी) द्वारा माननीय खान मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी का संदेश पढ़ा गया।

दिनांक 19/09/2017 को भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर में महानियंत्रक महोदय श्री रंजन सहाय की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर एन.आई.टी. नागपुर के भूतपूर्व प्रधानाध्यापक डॉ. सुरेन्द्र विनायक गोले मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर की हिंदी गृह पत्रिका 'खान भारती' का विमोचन भी किया गया।

इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक ने राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया और कहा कि यह हम सबका कर्तव्य है कि हम अपना सरकारी कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में ही करें। उन्होंने भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय) नागपुर की हिंदी गृह पत्रिका 'खान भारती' के प्रकाशन की प्रशंसा की और आशा जाहिर की कि उक्त पत्रिका का प्रकाशन भविष्य में भी अनवरत जारी रहेगा। इसके पूर्व सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. सुरेन्द्र विनायक गोले ने कहा कि यदि हर व्यक्ति अपने अंदर ईश्वर का अंश देखना चाहता है तो उसे अपने अंदर की श्रेष्ठता और उत्कृष्टता को ढुंढना होगा। उन्होंने आगे कहा कि हर व्यक्ति को यह प्रयत्न करना चाहिए कि उसका वर्तमान भूतकाल से ज्यादा अच्छा हो तथा साथ ही उसका भविष्य उसके वर्तमान से बेहतर हो।

इसके पूर्व राजभाषा अधिकारी डॉ. पी. के. जैन ने हिंदी पखवाड़े के दौरान की गई गतिविधियों और विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन की जानकारी सभा के समक्ष रखी। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न हिंदी विषयक प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को महानियंत्रक महोदय, मुख्य अतिथि महोदय एवं राजभाषा अधिकारी द्वारा

झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा 2017
एवं
अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार

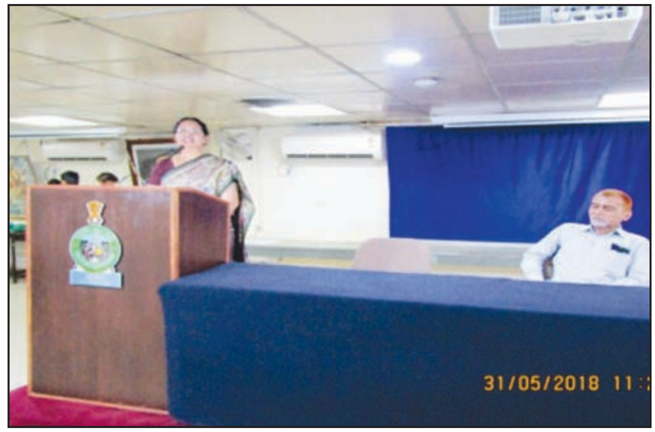

दिनांक 31/05/2018 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए डॉ. सुनीता यादव, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (प.), नवी मुंबई.

दिनांक 19 अप्रैल, 2018 अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार के अवसर पर अध्यक्षीय संबोधन करते हुए श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक खान ब्यूरो, मुख्यालय, नागपुर।

दिनांक 19 अप्रैल, 2018 अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार के अवसर पर 'स्मारिका' का विमोचन।

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने तथा उत्कृष्ट गृह पत्रिका के लिए अध्यक्ष न. रा. का. स.(का-2) श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय तथा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम) की उप निदेशक डॉ. सुनीता यादव से पुरस्कार ग्रहण करते हुए डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी एवं श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप निदेशक (राजभाषा)।

दिनांक 01/09/2017 को हिंदी पखवाड़ा के उदघाटन अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन एवं अध्यक्षीय संबोधन करते हुए श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक भारतीय खान ब्यूरो (मुख्यालय), नागपुर ।

दिनांक 01/09/2017 को हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उदघाटन करते हुए मुख्य अतिथि श्री दिनेश पाटील, महालेखाकार, महालेखाकार ।। (लेखा व हकदारी), महाराष्ट्र, नागपुर ।

दिनांक 14/09/2017 को हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर श्री के. थॉमस, उप महानिदेशक (सांख्यिकी) द्वारा माननीय खान मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी का संदेश वाचन।

दिनांक 19/09/2017 हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के अवसर पर हिंदी गृह पत्रिका 'खान भारती' का विमोचन ।

दिनांक 19/09/2017 हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के अवसर पर अध्यक्षीय संबोधन करते हुए श्री रंजन सहाय, महानियंत्रक खान ब्यूरो, मुख्यालय, नागपुर ।

पुरस्कार वितरित किए गए।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान सभी कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन डॉ. पी. के. जैन, राजभाषा अधिकारी के मार्गदर्शन में तथा श्री प्रमोद एस. सांगोले, उप - निदेशक (राजभाषा) के नेतृत्व में किया गया। कार्यक्रमों के सफलतापूर्वक आयोजन में हिंदी अनुभाग के श्री राजीव कुलश्रेष्ठ, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, श्रीमती मिताली चटर्जी, हिंदी अनुवादक, श्री असीम कुमार, हिंदी अनुवादक श्री किशोर डी. पारधी, हिंदी अनुवादक तथा श्री प्रदीप कुमार सिन्हा, हिंदी टंकक एवं श्री ए. के. नाल्हे, एम.टी.एस. का पूर्ण योगदान रहा।

विश्व हिंदी सम्मेलन – एक नजर

विश्व हिन्दी सम्मेलन हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें विश्व भर से हिन्दी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी, विषय विशेषज्ञ तथा हिन्दी प्रेमी जुटते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के प्रति जागरुकता पैदा करने, समय-समय पर हिन्दी की विकास यात्रा का आकलन करने, लेखक व पाठक दोनों के स्तर पर हिन्दी साहित्य के प्रति सरोकारों को और दृढ़ करने, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने तथा हिन्दी के प्रति प्रवासी भारतीयों के भावुकतापूर्ण व महत्त्वपूर्ण रिश्तों को और अधिक गहराई व मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से 1975 में विश्व हिन्दी सम्मेलनों की श्रृंखला आरम्भ की गयी। इस बारे में तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने पहल की थी। पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सहयोग से नागपुर में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रसिद्ध समाजसेवी एवं स्वतन्त्रता सेनानी विनोबा भावे ने अपना विशेष सन्देश भेजा।

प्रारम्भ में इसका आयोजन हर चौथे वर्ष आयोजित किया जाता था लेकिन अब यह अन्तराल घटाकर 3 वर्ष कर दिया गया है। पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 1975 में नागपुर, भारत में आयोजित किया गया था। तब से, विश्व के अलग-अलग भागों में ऐसे 10 सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। अभी तक पूर्व में आयोजित 10 सम्मेलनों के ब्यौरे इस प्रकार हैः-

क्रमांक	सम्मेलन	स्थान	साल
1.	प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन	नागपुर, भारत	10-12 जनवरी,1975
2.	द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	28-30 अगस्त,1976
3.	तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन	नई दिल्ली, भारत	28-30 अक्टूबर,1983
4.	चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	02-04 दिसम्बर,1993
5.	पांचवां विश्व हिन्दी सम्मेलन	पोर्ट ऑफ स्पेन, ट्रिनिडाड एण्ड टोबेगो	04-08 अप्रैल,1996
6.	छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन	लंदन, यू. के.	14-18 सितम्बर,1999
7.	सातवां विश्व हिन्दी सम्मेलन	पारामारिबो, सूरीनाम	06-09 जून, 2003
8.	आठवां विश्व हिन्दी सम्मेलन	न्यूयार्क, अमरीका	13-15 जुलाई, 2007
9.	नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन	जोहांसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका	22-24 सितंबर, 2012
10.	दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन	भोपाल, भारत	10-12 सितंबर, 2015

11वां विश्व हिंदी सम्मेलन 18-20 अगस्त 2018 तक 'स्वामी विवेकानंद अंतर्राष्ट्रीय सभा केंद्र', पाई, मॉरीशस में आयोजित किया गया। सम्मेलन का मुख्य विषय 'हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति' था।

सम्मेलन स्थल पर हिंदी भाषा के विकास से संबंधित कई प्रदर्शनियां लगाई गई थी। सम्मेलन के दौरान भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम और कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था। सम्मेलन के दौरान भारत एवं अन्य देशों के हिंदी विद्वानों को हिंदी के क्षेत्र में उनके विशेष योगदान के लिए 'विश्व हिंदी सम्मान' से सम्मानित किया गया।

आपकी राय

आपके कार्यालय द्वारा उपर्युक्त प्राप्त गृह पत्रिका 'खान भारती' 03 नवंबर, 2017 को प्राप्त हुई । सुंदर प्रकाशन के लिए आप बधाई के पात्र हैं । गृह पत्रिका 'खान भारती' के कुछ अंश पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई । मुझे लगता है कि देश के विभिन्न क्षेत्र से कार्यरत सभी खासकर हिंदी से जुड़े कार्यक्रमों की सचित्र जानकारी पढ़कर लोगों के काम में राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए मदत हो रही है । पत्रिका की सुंदर साज-सज्जा और आकर्षक है, एवं मुद्रित लेख पठनिय, शिक्षा तथा जानकारी से भरपूर है । एक अच्छी पत्रिका के प्रकाशन और अथक प्रयास के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

(आर. पी. मिश्रा)

वैज्ञानिक 'एफ' एवं प्रमुख,भारतीय मानक ब्यूरो, नागपुर

हिंदी पत्रिका 'खान भारती' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ है, धन्यवाद ।

पत्रिका में समाहित सभी लेख कहानियां एवं कविताएं, पठनीय, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक है । पत्रिका के प्रकाशन हेतु उपयोग में लाई गई सामग्री उत्कृष्ट है । श्री प्रवीण डी. गजभिए द्वारा लिखित लेख 'कुंडलिनी शक्ति एवं आत्मसाक्षात्कार', श्रीमती विजया सिन्हा द्वारा रचित कविता 'जीव-एक अनुभूति और श्रीमती मिताली चटर्जीद्वारा रचित कविता 'ग्रीष्म, सावन और शिशिर' विशेष रूप से सराहनीय है । पत्रिका का अनावरण चित्र विशेष रूप से आकर्षक है । मुखपृष्ठ संकल्पना प्रशंसनीय है । पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं ।

(सतीश दुबे)

हिंदी अधिकारी, राजभाषा अनुभाग

कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) ।। महाराष्ट्र, नागपुर

हिंदी गृह पत्रिका 'खान भारती' का प्रथम अंक की प्रति प्राप्त हुई । सर्वप्रथम पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन भारतीय खान ब्यूरो परिवार को बहुत-बहुत बधाई । पत्रिका 'खान भारती' का संपूर्ण कलेवर उत्कृष्ट कोटी का एवं प्रभावशाली है । पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं सभी पृष्ठों की साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है । पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं । श्री असीम कुमार की 'भारतीय भाषाओं और हिंदी के अंतरसंबंध', श्री विनय कुमार सक्सेना के'भारत का पर्यावरण संकट : एक दुःस्वप्न', श्री अरूण कुमार राय की 'मेरी कविता' बन जाती है'श्रीमती नीता कोठारी की 'आत्ममंथन की आवाज'श्री राजीव कुलश्रेष्ठ की 'आधार' एवं श्री सत्यानंद पाण्डेय की 'हिंदी का राजभाषा केरूप में भविष्य' आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय हैं ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए अनेक शुभकामनाओं सहित ।

(सतीश दुबे)

हिंदी अधिकारी, राजभाषा अनुभाग

कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) ।। महाराष्ट्र, नागपुर

भारतीय खान ब्यूरो

इंदिरा भवन, सिविल लाईन्स,

नागपुर-440 001

वेबसाईट : www.ibm.gov.in